दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला–१०

महामायातन्त्रम्

गुणवतीटीकासहितम्

དཔལ་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་དང་།
དེའི་འགྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྡན་པ།



भोट विद्या संस्थानम

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द २५३६ खीस्ताब्द १९९२

RARE BUDDHIST TEXT SERIES-10

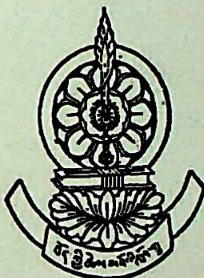
MAHĀMĀYĀTANTRAM

WITH

GUṆAVATĪ

BY

RATNĀKARAŚĀNTĪ



भोट विद्या संस्थानम्

Editors

PROF. SAMDHONG RINPOCHE
Project Director

PROF. VRAJAVALLABH DWIVEDI
Deputy Director

RARE BUDDHIST TEXT RESEARCH PROJECT
CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2536

C.E. 1992

RARE BUDDHIST TEXT SERIES-10

Co-Editors

Pt. Janardan Pandey
Dr Banarsi Lal
Dr Tashi Samphel
Dr Thakur Sain Negi
Thinlay Ram Shashni
Penpa Dorjee

First Edition: 550 Copies, 1992

Price:
Hardback : Rs.70.00
Paperback : Rs.50.00

Published by
Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007, (U.P.), India.

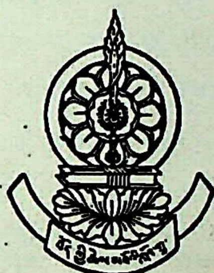
Printed at
Khandelwal Offset Printers,
B-38/3 Ka, Mahmoorganj,
Varanasi-221010

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला–१०

महामायातन्त्रम्

रत्नाकरशान्तिविरचित–
गुणवतीटीकासयुतम्

དཔལ་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་དང་དེའི་འགྲེལ་པ་
རིན་ཆེན་འབྱུང་གནས་ཞི་བས་མཛད་པའི་
ཡོན་ཏན་ལྡན་པ་དང་བཅས་པ།



भोट विद्या संस्थानम

सम्पादकौ

प्रो० सम्दोङ रिनपोछे
योजनानिदेशकः

प्रो० व्रजवल्लभ द्विवेदी
उपनिदेशकः

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द २५३६ खीस्ताब्द १९९२

सहायक मण्डल

पं० जनार्दन पाण्डेय
डॉ० बनारसी लाल
डॉ० टशी सम्फेल
डॉ० ठाकुरसेन नेगी
श्री ठिनलेराम शाशनी
श्री पेन्पा दोर्जे

प्रथम संस्करण : ५५० प्रतियाँ, १९९२

मूल्य :
सजिल्द : रु० ७०.००
अजिल्द : रु० ५०.००

प्रकाशक :
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान,
सारनाथ, वाराणसी–२२१००७

मुद्रक :
खण्डेलवाल ऑफसेट प्रिन्टर्स
बी–38/3 क, महमूरगंज,
वाराणसी–२२१०१०

प्रस्तावना

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला के दशम पुष्प के रूप में गुणवती नाम की टीका के साथ महामाया तन्त्र को तन्त्रशास्त्र के अनुरागियों के सामने प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है । बहुत प्रयत्न करने पर भी मूल महामायातन्त्र हमें उपलब्ध न हो सका, अतः गुणवती टीका में उपलब्ध प्रतीक वचनों की तथा उसके भोट अनुवाद की सहायता से संस्कृत पाठ के उद्धार का एक लघु प्रयास किया गया है । तृतीय निर्देश के 15–16 श्लोकों के बीच (पृ0 45) भोट अनुवाद में कुछ अधिक श्लोक और उनकी व्याख्या भी मिलती है । यह अंश गुणवती टीका के दोनों हस्तलेखों में नहीं मिलता । संभव है मूल मातृका के एक दो पत्र त्रुटित हो गये हों । यहाँ हम संस्कृत प्रतीकों के अभाव में मूल संस्कृत श्लोकों का भी उद्धार नहीं कर सके हैं । मूल ग्रन्थ और गुणवती टीका का भोट अनुवाद भी साथ में दिया जा रहा है, अतः भोट भाषा के विद्वद्गण उनकी सहायता से इस त्रुटि का परिमार्जन कर सकते हैं ।

नित्याषोडशिकार्णव नामक शाक्त–तन्त्र के प्रारंभ (1.14–21) में 64 तन्त्रों का परिगणन किया गया है । महामाया का वहां सर्वप्रथम उल्लेख है– "महामायाशम्बरं च योगिनीजालशम्बरम् । तत्त्वशंम्बरकं चैव" (1.14) । आचार्य शंकर की सौन्दर्यलहरी के "चतुःषष्ट्या तन्त्रैः" (1.31) श्लोक की अनेक व्याख्याओं में भी ये ही श्लोक उद्धृत हैं । कुछ टीकाकार यहां तीन तथा अन्य पांच तन्त्रों के नामों का उल्लेख मानते हैं । लक्ष्मीधर और गौरीकान्त के अनुसार महामायाशम्बर, योगिनीजालशम्बर और तत्त्वशम्बर नामक तीन तन्त्रों का यहां उल्लेख है । अन्य सभी टीकाकार महामाया,

शम्बर, योगिनी, जालशम्बर और तत्त्वशम्बर नामक पाँच तन्त्रों की यहां गणना करते हैं । बौद्ध तन्त्रों के भोट अनुवादों की सूची में महामाया, जालशम्बर, मायाजाल जैसे नाम उपलब्ध होते हैं । नागेन्द्रनाथ वसु ने अपने विश्वकोश (बंगला और हिन्दी) में शम्बर, डाकिनीजाल, योगिनी, योगिनीजाल, मायाजाल आदि बौद्ध तन्त्रों के नाम गिनाये हैं । म0 म0 हरप्रसाद शास्त्री की नेपाल की सूची में डाकिनीजालशम्बर और योगिनीजाल की मातृका का परिचय दिया गया है । यह सब तो एक विशेष अध्ययन का विषय है, किन्तु इतना स्पष्ट है कि यहां दिया गया पहला नाम प्रस्तुत महामायातन्त्र का ही है । इससे इस ग्रन्थ की महत्ता और प्राचीनता स्पष्ट हो जाती है । इसीलिये इस योजना के प्रथम निदेशक स्व0 प्रो0 जगन्नाथ उपाध्याय जी ने इस योजना से प्रकाशित होने वाले प्रथम दस ग्रन्थों में इसका समावेश किया था । मूल ग्रन्थ की उपलब्धि की आशा में इतना समय व्यतीत हो गया । अन्ततः इस ओर से निराश होकर हमने ऊपर बताई गई पद्धति से प्रस्तुत संस्करण को तैयार किया है ।

इसके लिये गुणवती टीका के दो हस्तलेखों और मूल एवं टीका के भोटानुवाद के देगे संस्करण से सहायता ली गयी है । उनका विवरण इस प्रकार है–

(क) राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डू, नेपाल ।
लगत सं0 5/107
पत्र सं0 15

(ख) इंस्टीच्यूट आफ एडवांस स्टडीज आफ वर्ल्ड रिलीजन्स, न्यूयार्क । माईक्रोफिश नं0 एम0बी0बी0 II–143
पत्र सं0 10, ताड़पत्र

3

(भो0) महामायातन्त्रम्, भोटानुवाद तो0सं0 425,
कन्युर देगे संस्करण ।
गुणवतीटीका, तो0सं0 1623 तन्युर देगे संस्करण

महामायातन्त्र और गुणवती टीका का भोटानुवाद देगे संस्करण के अतिरिक्त अन्य संस्करणों में भी मिलता है । इन दोनों ग्रन्थों का भोट संस्करण तैयार करते समय इन सब से भी पाठ संकलन कर उनका यथास्थान समावेश कर लिया गया है । नेपाल हस्तलेख के आधार पर प्रो0 जगन्नाथ उपाध्याय जी ने गुणवती टीका की एक प्रति तैयार कर ली थी । स्थान–स्थान पर उन्होंने अपने सुझाव भी अंकित किये थे । इस संस्करण को प्रस्तुत करने में उससे भी यथेष्ट सहायता ली गई है ।

ऊपर दिये गये हस्तलेखों को सुलभ कराने में जिन व्यक्तियों और संस्थाओं ने सहायता की है, जिनका नामनिर्देश ऊपर किया जा चुका है, उनका हम आभार स्वीकार करते हैं । इन ग्रन्थों के संस्कृत और तिब्बती पाठों को परिष्कृत करने वाले और मूल पाठ का उद्धार करने वाले दुर्लभ ग्रन्थ शोध योजना में कार्यरत विद्वानों की नामावली का उल्लेख भी यथास्थान कर दिया गया है । इन सबको भी हम धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने बड़ी तत्परता से पाठसंकलन और सम्पादन कर तथा यथोचित परिशिष्टों को संयोजित कर इस ग्रन्थ को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया है ।

सारनाथ, वाराणसी

एस0 रिन्पोछे
निदेशक

PREFACE

It is with much pleasure that we bring forth the *Mahāmāyā Tantram* and its *Guṇavatī ṭīkā* by Ratnākaraśānti, as no.10 in the Rare Buddhist Text Series. We could not trace the *ms* of *Mahāmāyā Tantram* even after much effort. With the help of *Guṇavatī* and Tibetan translation we have restored the text in its original. In the Tibetan translation of *Guṇavatī* we have an excess of one folio which is missing in the two manuscripts. In the absence of original Sanskrit text, we did not take any risk to restore the missing portion. *Mahāmāyā* with Tibetan translation of *Guṇavatī* is presented here and we crave indulgence of Tibetan scholars to overlook the authenticity of the excess portion.

In the beginning of the *Nityāṣoḍaśikārṇava* of *Śākta Tantra* (1/14-21) sixty four Tantras were counted in which *Mahāmāyā* is the first in number. "*Mahāmāyāsaṁvaram ca yoginījālasaṁvaram, Tattvasaṁvarakam caiva*" (1/14). Ācārya Śaṅkara has quoted this verse in explanation of *Catuḥṣaṣṭyā Tantraiḥ* of *Saundarya Laharī*. A few commentators are of the view that there are three Tantras; others accept five. According to Lakṣmīdhara and Gaurīkānta *Mahāmāyāsaṁvara*, Yoginī Jālasaṁvara, and Tattvasaṁvara are the three Tantras. But other commentators think that Mahāmāyā, Saṁvara, Yoginī, Jālasaṁvara and Tattvasaṁvara are the five Tantras. In the Tibetan translation of the Buddhist Tantras, names like *Mahāmāyā, Jālasaṁvara* and *Māyājāla* are listed. Nagendra Nath Vasu in his *Viśvakoṣa* (Bangla-Hindi) has mentioned the name of Buddhist Tantras like *Ḍākinījāla, Yoginī, Yoginījāla* and *Māyājāla*. Haraprasad Shastri has given the introduction of the *mss* of *Ḍakinījālasaṁvara* and *Yoginījāla* in the list of Nepali manuscripts. These are matters of special consideration and study. But it is clear that the first name in the list is the very text of *Mahāmāyātantra* which is presented here. It enhances the significance and originality of the text. As such Prof. Jagannath Upadhyaya included this text in the list of first ten texts to be published under the RBTR Project.

The text is edited with the materials as follows :

Ka- National Archives Kathmandu, Nepal
Catalogue No. 5/107, Folios-15

Kha- Institute of Advanced Studies of World Religions, New York, Microfische. No-MBB-II-143
Folios- 10, Palm Leaf.

Bhoṭa- Mahāmāyātantra Tibetan translation bKaḥ ḥGyur, Derge Edition, Toh. No.425 and commentary bsTan ḥGyur Toh. No. 1623.

The Tibetan translation of *Mahāmāyātantra* and *Guṇavatī* are available in other editions also. We have collated these to prepare the present text. Prof. Jagannath Upadhyaya had prepared an edition of the *Guṇavatī* based on Nepali *ms* with numerous suggestions. We have also taken help from Upadhyaya's edition in presenting this text.

We gratefully acknowledge the help received from institutions and scholars toward procurement of the above *mss* englobing the source material. We express our thanks to all those who have very competently helped us in editing this work and restorations of the root text.

Sarnath

S. Rinpoche
Director

སྔོན་གླེང་།

༄༅། །སྔགས་གཞུང་ལ་ཐུགས་མོས་གནང་མཁན་རྣམས་ཀྱི་སྤྱན་ལམ་དུ་ནང་པའི་ཆེས་དཀོན་པའི་གསུང་རབ་བོད་ཕྲིང་བཅུ་པའི་ཚུལ་དུ་སྒྲུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་རྒྱུད་འགྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྡན་པ་དང་བཅས་དཔར་བསྐྲུན་ཞུས་ཐུབ་པར་དགའ་སྤྲོ་ཆེན་པོ་སྐྱེས། འབད་རྩོལ་ཅི་ཆེར་ཞུས་ཀྱང་སྒྲུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་རྒྱུད་ཀྱི་ལེགས་སྦྱར་གྱི་རྩ་གཞུང་རྙེད་སོན་མ་འབྱུང་སྐབས་འགྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྡན་པའི་ནང་གསལ་བའི་བརྡ་ཚིག་རྣམས་དང་དེའི་བོད་འགྱུར་ལ་བརྟེན་ལེགས་སྦྱར་དུ་ཚིག་སྒྱུར་གསོ་བྱ་རྒྱུའི་འབད་རྩོལ་ཆུང་ངུ་ཞིག་ཞུས་ཡོད། ངེས་པར་བསྟན་པ་གསུམ་པའི་ཚིགས་བཅད་བཅོ་ལྔ་དང་བཅུ་དྲུག་པའི་བར་(ལྡེབ་ ༨༥)བོད་འགྱུར་དུ་ཚིགས་བཅད་ཁ་ཤས་དང་དེ་དག་གི་འགྲེལ་པ་བཅས་མང་བར་འདུག་པ་རྣམས་རྙེད་སོན་བྱུང་བའི་འགྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྡན་པའི་ལག་བྲིས་མ་གཉིས་ཀའི་ནང་དུ་མི་རྙེད་ཚུལ་ལ་བལྟས་ན་རྩ་བའི་མ་ཕྱིར་ལྡེབ་མ་གཅིག་གཉིས་ཆད་སྐྱོན་བྱུང་ཡོད་པར་མངོན། འདིའི་ཐད་ལེགས་སྦྱར་གྱི་བརྡ་ཚིག་རྣམས་མེད་པར་བརྟེན་རྩ་བའི་ལེགས་སྦྱར་གྱི་ཚིགས་བཅད་རྣམས་ཀྱང་སྒྱུར་གསོ་བྱེད་ཐུབ་མེད། རྩ་བའི་གཞུང་དང་འགྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྡན་པའི་བོད་འགྱུར་ཡང་མཉམ་དུ་དཔར་སྐྲུན་ཞུས་ཡོད་པས་བོད་སྐད་ལ་མཁྱེན་རྒྱ་ཆུབ་པའི་མཁས་དབང་རྣམས་ཀྱིས་དེ་དག་ལ་བརྟེན་ནས་ཆད་སྐྱོན་བྱུང་བ་འདི་དག་ཡོངས་སུ་ཁ་གསབ་ཐུབ།

ཉུས་མ་པའི་རྒྱུད་གཞུང་བཅུ་དྲུག་ལང་ཚོ་རྟག་མཚོ་མ་(ནཻཊཱརྠཾཀཤིཀླུཆཀྵ) ཞེས་པའི་འགོར་ (༡ / ༡༨ - ༣༡)རྒྱུད་༤༨ ཡོངས་སུ་བསྒྲངས་འདུག་པ་དེར། སྒྲུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་སྟོམ་པ་དང་། །རྣལ་འབྱོར་མ་ཡི་དྲྭ་བ་སྡོམ། །དེ་ཁོ་ན་ཡི་སྡོམ་པ་ཉིད་ (༡ / ༡༨)། །ཅེས་སྒྲུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་མཚན་ཐོག་

མར་གསལ་འདུག སློབ་དཔོན་བདེ་བྱེད་ (ཨཱཙཱརྱཤཾཀར) ཀྱི་གསུང་མཛེས་ལྡབས་མའི་ (སཽནྡརྱལཧརཱི) རྒྱུད་རྣམས་དྲུག་ཅུ་ཙ་བཞི་ལས་ (ཙཏུཿཥཥྚི ཡནྟྲཱཎི༔)། །ཞེས་པའི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་རྣམ་བཤད་དུའང་ཚིགས་བཅད་དེ་དག་རང་བཀོད་འདུག འགྲེལ་བྱེད་མཁན་པོ་འགའ་ཞིག་གིས་འདིར་རྒྱུད་གསུམ་དང་འགའ་ཞིག་གིས་རྒྱུད་ལྔའི་མཚན་བགྲངས་འདུག ནོར་འཛིན་ (ལཀྵྨཱིདྷར) དང་ཀཻརིཀཎྛ་རྣམ་གཉིས་ལྟར་ན། སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་སྒོམ་པ་དང་། རྣལ་འབྱོར་མ་དྲ་བའི་སྒོམ་པ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་སྒོམ་པ་ (ཏདྲཤཱཀྵར) བཅས་རྒྱུད་གསུམ་གྱི་མཚན་བགྲངས་འདུག འགྲེལ་བྱེད་གཞན་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་འདིར་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ། སྒོམ་པ། རྣལ་འབྱོར་མ། དྲ་བ་སྒོམ་པ་དང་། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་སྒོམ་པ་ཅེས་རྒྱུད་ལྔའི་མཚན་བགྲང་བར་མཛད་འདུག ནང་པའི་རྒྱུད་གཞུང་བོད་འགྱུར་རྣམས་ཀྱི་དཀར་ཆག་ཏུ་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་དང་། དྲྭ་བ་སྒོམ་པ། སྒྱུ་འཕྲུལ་དྲྭ་བ་ལྔ་བུའི་མཚན་རྙེད་ཀྱི་འདུག ཀླུ་དབང་མགོན་པོ་དབྱིག་ (ནཱགེཤྭ ནཱཐབསུ) གིས་ཉིད་ཀྱི་སྣ་ཚོགས་མཛོད་ (ཝིཤྭཀོཥ) དུ་(བཛྲཡཱནདངཧིཏྟི་) སྒོམ་པ། མཁའ་འགྲོ་མའི་དྲྭ་བ། རྣལ་འབྱོར་མ། རྣལ་འབྱོར་མའི་དྲྭ་བ་དང་། སྒྱུ་འཕྲུལ་དྲྭ་བ་སོགས་ནང་པའི་རྒྱུད་གཞུང་རྣམས་ཀྱི་མཚན་གྲངས་འདུག

མཁས་དབང་ཏཱརཔྲསཱདཤཱསྟྲིའི་བལ་ཡུལ་གྱི་དཀར་ཆག་ནང་དུ་མཁའ་འགྲོ་མ་དྲྭ་བ་སྒོམ་པ་དང་རྣལ་འབྱོར་མ་དྲྭ་བའི་མ་ཕྱིའི་ངོ་སྤྲོད་མཛད་འདུག་པ་འདི་དག་རྣམས་ནི་དམིགས་གསལ་གྱི་ཞིབ་འཇུག་བྱ་གཞི་ཞིག་ཡིན་མོད་འོན་ཀྱང་འདིར་ཐོག་མར་གསལ་བའི་མཚན་དེ་ནི་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་རྒྱུད་འདི་རང་གི་ཡིན་པར་ངེས་ཐུབ་པ་འདི་ཡིས་གཞུང་འདི་ཉིད་གལ་ཆེ་དང་རྙིང་པ་ཡིན་པར་རྟོགས་ནུས། རྒྱུ་མཚན་དེའི་ཕྱིར་ན་འཆར་གཞི་འདིའི་ངེས་སྟོན་པ་དང་པོ་སྐུ་གཤེགས་སློབ་དཔོན་འཇིག་རྟེན་མགོན་པོ་ (སྭ༠པྲོ༠ཛགནྣཱཐཨུཔཱདྷྱཱཡ) མཆོག་གིས་འཆར་གཞི་འདི་ནས་དཔར་

སྐྲུན་ཞུ་རྒྱུའི་གཞུང་དང་པོ་བཅུའི་ཁོངས་གཞུང་འདི་ཚད་པར་མཛད་ཡོད་ཀྱང་རྩ་གཞུང་ལག་སོན་འབྱུང་རེས་ད་དབར་ནར་འགྱངས་མཐར་རེ་བ་བྲལ་བར་གྱུར་དེ་གོང་ཞུས་ཐབས་ལམ་བཞིན་པར་ཐེངས་འདི་འགོད་སྒྲིགས་ཞུས་ཡོད་པ་འདིར་འགྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྡན་པའི་ལག་བྲིས་མ་གཉིས་དང་། བོད་འགྱུར་གྱི་རྩ་བ་དང་འགྲེལ་པ་སྡེ་དགེ་པར་མར་གཞི་བཅོལ་ཡོད་པ་དག་གི་གསལ་བཤད་གཤམ་གསལ་ལྟར།

ཀ བལ་ཡུལ་རྒྱལ་ཁབ་ཀྱི་ཡིག་ཆ་ཁང་། ཀཱཊམཎྜུ།
(རཱཥྚྲིཡཨབྷིལེཁཱལཡ། ཀཱཊམཎྜུ། ནེཔཱལ)
ལག་བྲིས་ཨང་ ༥ /༡༠༧
ལྡེབས་གྲངས་ ༡༥

ཁ ཇུཡཱཀ་འཛམ་གླིང་ཆོས་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་སློབ་ཁང་
(ཨེཌྭརྡ་ཀུཊ ཨཱུཔ ཨེཀཱཥྚ སྐྲིཧ ཨཔ ཥཏྐ རེལིཧྱ ཇུཡཱཀ) གི་ཕྲ་གཟུགས་མ་ (མཡིཀྲོཕིལྨ) ཨང་ ཨེམ་བི་བི་ ༣ ༡༨༣
ལྡེབས་གྲངས ༡༠ ཏ་ལའི་ལོ་མ།

བོད་འགྱུར། སྒྲ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་རྒྱུད།
པོད། རྒྱུད་ང་།
སྡེ་༠བཀའ་༠ ཆོས་ཚན་ཨང་ ༨༣༥

འགྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྡན་པ།
པོད། རྒྱུད་ཨ།
སྡེ་༠ བསྟན་༠ ཆོས་ཚན་ཨང་ ༡༦༣༣

སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་རྒྱུད་དང་འགྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྡན་པའི་བོད་དཔེ་ཞུ་སྒྲིགས་སྐབས་བཀའ་བསྟན་འགྱུར་གཞན་རྣམས་ནས་ཀྱང་བླང་འོས་ཕྱོགས་བསྡུས་ཀྱིས་སྐབས་མཚམས་སོ་སོར་ཚུད་པར་བྱས་ཡོད། བལ་ཡུལ་གྱི་ལག་བྲིས་མར་གཞིར་བཅོལ་སྐུ་གཤེགས་སློབ་དཔོན་འཇིག་རྟེན་མགོན་པོ་མཆོག་གིས་འགྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྡན་པའི་དཔེ་ཚར་གཅིག་སྒྲིགས་པར་མཛད་ཡོད་པའི་སྐབས་སོ་སོར་ཁོང་གིས་ཉིད་ཀྱི་དགོངས་འཆར་ཟུར་མཆན་བཏབ་འདུག་པ་ནས་ཀྱང་པར་ཐོངས་འདི་དཔར་སྐྲུན་ཞུ་སྐབས་ཪོགས་ཕན་གང་འདོད་ལྟར་ཞུས་ཡོད།

གོང་གསལ་ལག་བྲིས་མ་དག་རྐྱེན་ཐབས་སུ་མཐུན་གྲོགས་གནང་མཁན་དང་སྒྲིག་འཛུག་ཁག་གི་མཚན་གོང་དུ་ངེས་བསྟན་ཞུས་ཡོད་པ་དག་གི་བཀའ་དྲིན་སྐྱིང་བཅངས་ཐོག་གསུང་རབ་འདིའི་ལེགས་སྦྱར་དང་བོད་དཔེའི་ཞུས་དག་བྱེད་པོ་དང་གཞུང་ཚིག་སྐྱར་གསོ་བྱེད་པོ་ནང་པའི་ཆོས་དཀོན་པའི་གསུང་རབ་ཉམས་ཞིབ་འཆར་གཞིའི་མཁས་དབང་ལས་བྱེད་རྣམས་ཀྱི་མཚན་ཐོ་སྐབས་མཚམས་སོ་སོར་གསལ་ཡོད་པ་རྣམས་ལའང་ཐུགས་སྣང་ཆེན་པོས་ཕྱོགས་སྡུད་དང་དག་ཞུས། ཁ་སྐོང་ལྡན་ཐབས་ཇི་འོས་ཀྱིས་བརྒྱུན་དེ་གསུང་རབ་འདི་ཕན་ནུབས་ཅི་ཆེར་ཡོང་ཐབས་ལ་རྩོལ་བ་བྱས་འདུག་པར་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་རྒྱུ་བཅས། ལྷཱཿ དབུས་བོད་ཀྱི་ཆོས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་ངེས་སྟོན་པ་ཟམ་གདོང་སྤྲུལ་སྐུས་ཕྱི་ལོ་ ༡༩༩༣ ཟླ་ ༩ ཚེས ལ་བྲིས།།

विषय-सूची

महामायातन्त्रम्

गुणवतीटीकासहितम्

प्रथमो निर्देशः

॥ नमः श्रीवज्रडाकिनीभ्यः ॥

नमः श्रीवज्रडाकिन्यै डाकिनीचक्रवर्तिने ।
पञ्चज्ञानत्रिकायाय जगत्त्राणविधायिने ॥१॥

गुणवती

[नमः] श्रीभूतडामराय[१]

कायाः कृता येन जगद्धितार्थे[२]
कुलानि देव्यः कुलनायकाश्च ।
तन्मूर्त्तिमुद्रानुसृतैकतत्त्वः
स मृग्यतां वज्रधरः शिवाय ॥

अतिलघु महामायातन्त्रं गिरा गुरुणाऽर्थतो
जगति कतिचित्[३] तस्येदानीं निरन्तरवेदिनः ।
प्रतिपदमतस्तत्र ज्ञानं शुचि श्रुतशालिनां
निभृतसुलभं लोके कर्तुं ममैष परिश्रमः ॥

विविधः सुगतेन बोधिमार्गः
कथितो भिन्नरुचिं विलोक्य लोकम् ।
रुचितो बहवः स्वयं प्रवृत्ता
विवृतिर्मे गुणवत्यथोऽत्र कर्म ॥

---

१. नमो त्रिरत्नाय, नमो वज्रसत्त्वाय, नमो भगवते जगदीश्वराय–भो. ।
२. गुणार्थे–भो. । ३. चेत्–ख. ।

याश्चैता वज्रडाकिन्यः परिकल्पितबन्धनान् ।
विच्छिद्य लोककार्येषु प्रविष्टास्तद्धिते रताः ॥२॥

अथातो वज्रडाकिनीनां गुह्येश्वरीणां परमगुप्तं(गुह्यं) नाम तन्त्रं प्रवक्ष्ये ॥३॥

अथेत्यादि । नैतत् तन्त्रं मुक्तकम्, किं तर्हि- तन्त्रान्तरैः सम्प्रयुक्तम् । तस्मादय[१]मथशब्दः पूर्वतन्त्रापेक्षयाऽऽनन्तर्यमस्य तन्त्रस्य द्योतयति । अत एव नास्यादौ निदानवाक्यमेवं मयेत्यादिकं प्रयुक्तम्, प्रागेव प्रयुक्तत्वात् । तद्यथा **श्रीवज्रशेखरे**[२] ।

अत [३]इति । यस्मादतिसंक्षेपरुचीनामिदमेव बोधेराशु साधनम्, अतः **प्रवक्ष्ये** इति सम्बन्धः । प्रविभज्य वक्ष्ये प्रवक्ष्ये । तन्त्रमिति प्रबन्धम् । त्रिविधं तन्त्रम्—हेतुतन्त्रम्, फलतन्त्रम्, उपायतन्त्रं च । तत्र प्रकृतिप्रभास्वरमनादिनिधनं चित्तं बोधिचित्तम्, [४]सहेतुस्तद्बीजम् । कस्य बीजम् ? बोधेः । सम्यक्संबोधिः फलम्, [५]निरुत्तरफलत्वात् । सा पुनस्तस्यैव प्रकृतिप्रभास्वरस्य चित्तस्यागन्तुकसर्वावरणक्षय[६]लक्षणा विशुद्धिः । सा बुद्धानां धर्मकायः, संभोगनिर्माणकायसंगृहीतानामनन्तानां बुद्धधर्माणामाश्रय इत्यर्थः । सैव बुद्धानां बोधिर्धर्मकायो महावज्रधरपदम् । तस्माद्धेतोस्तस्य फलस्य परिनिष्पत्तये [७]साधनमुपायः । [८]स पुनर्बोधिसत्त्वानां त्रिकल्पासंख्येय-

---

१. अर्थः–भो. । २. यथा श्रीवज्रशेखरादितन्त्रेषु–भो., वज्रशिखरे–क. । ३. इति शब्देन–भो. । ४. सतन्त्रं–भो. । ५. तत्त्वनिरुत्तर–भो. । ६. यकृल्लक्ष–क. । ७. 'साधनम्' नास्ति–भो. । ८. पारमितामहायाने त्रिकल्पा–भो. ।

भावितः सपरिकरो मार्गः । मन्त्रयानेऽत्र तस्यैवातिमहतो बोधिमार्गस्य संक्षेपरूपः, क्षिप्रतरं सुखतरं च बोधिसाधनो [१]मण्डलचक्राद्याकारः सपरिकरो मार्ग उपायः । एतान् हेतुफलोपायानधिकृत्य ये देशनाप्रबन्धास्ते यथाक्रमं हेतुतन्त्रं फलतन्त्रमुपायतन्त्रं वा । तदेतत्त्रिविधं तन्त्रं प्रवक्ष्ये ।

तत्तर्हि तन्त्रं किं नामेत्याह—**परम[२]गुप्तं(गुह्यं) नामेति** । नामशब्दोऽव्ययः प्रसिद्धौ वर्तते । परमगुप्त(ह्य)मित्यनेन नाम्ना प्रसिद्धमित्यर्थः । केषां परमगुप्त(ह्य)मित्याह—**वज्र[३]डाकिनीनाम्** । अतश्च साकल्येन वज्रडाकिनीपरमगुह्यं नामेदं तन्त्रम्, पूर्वपदलोपात्तु परमगुह्यं नाम, सत्यभामा भामेति [४]यथा । "डै वैहायसगमने" (९६८ भ्वा.), ऐकारस्यात्वम् । डानं डाः, आकाशगमनमित्यर्थः । डाशब्दात् तृतीया । "अक अग कुटिलायां गतौ" (७९२-७९३ भ्वा.) । अत्र सर्वतो गमनं कुटिला गतिः । डा अकितुं शीलमस्या इति डाकिनी, [५]स[ा] ह्याकाशकोटीनियुतशतसहस्रैर्युगपत् सर्वतो गामिनीत्यर्थः । तथा **चोक्तम्**—

डै वैहायसगमने धातुरत्र विकल्पितः ।
सर्वाकाशचर(री) [६]सिद्धिर्डाकिनीति [७]प्रसिद्ध्यति ॥ इति ।

वज्रग्रहणं बाह्यडाकिनीव्यवच्छेदार्थम् । वज्रमशनिः, अप्रपञ्चज्ञानमयत्वात्, डाकिन्यश्चेति वज्रडाकिन्यः । तासां कीदृशीनामित्याह—**गुह्येश्वरीणामिति** । अत्र पञ्चकुलानि पञ्चगुह्यानि, तेषामीश्वर्यः सृष्टिसंहारकारिकाः । तत्र तथागतकुलस्येश्वरी

---

१. 'मण्डल......कारः' नास्ति-भो. । २. गुह्यम्-ग्रन्थसमाप्तिस्थः पाठः । ३. डाकिनाम्-ख. । ४. नास्ति-भो. । ५. सव्याकाय-क. । ६. सिद्धे-ख. । ७. मिलिच्छयेति-क. ।

यया व्याप्तमिदं सर्वं ब्रह्माण्डं सचराचरम् ।
उत्पत्तिः सर्वदेवानां ब्रह्मादीनां महर्द्धिका ॥४॥

बुद्धडाकिनी, वज्रकुलस्य वज्रडाकिनी, मणिकुलस्य रत्नडाकिनी, पद्मकुलस्य पद्मडाकिनी, कर्मकुलस्येश्वरी विश्वडाकिनी । तासामपीश्वरी महामाया । यस्मादसौ तासां गुह्यातिगुह्यानां गुह्यम्, तस्मात् परमगुह्यम् । तदभिधायकं [१]तन्त्रमपि तथोच्यते । **सीताहरणं** काव्यमिति यथा ॥३॥

इममेव नामार्थं दर्शयितुमाह—**ययेत्यादि** । "बृह बृहि वृद्धौ" (७३५–७३६ भ्वा.), मनिन् । नैरुक्तो वर्णविकारः । एवं ब्रह्मेति भवति । इह तु सर्वलोकगुरुत्वात् सर्वतो वृद्धा इति ब्रह्माणस्तथागताः संभोगनिर्माणकायसंगृहीताः । तेषामण्डमुत्पत्तिस्थानम्, धर्मकाय इत्यर्थः । अथवा मोक्षातिशयत्वाद् ब्रह्म च तत् काय[२]द्वयोत्पत्तिस्थानत्वादण्डश्चेति ब्रह्माण्डं धर्मकाय इत्यर्थः[३] । परिशुद्धेषु बुद्धक्षेत्रेषु यः [४]सत्त्वलोकः, सोऽत्र चरः, यस्तेषु भाजनलोकः, सोऽत्राऽचरः । सह ताभ्यां वर्तत इति **सचराचरं ब्रह्माण्डम्** । तद्यया **व्याप्तमिति** सम्बन्धः । सकलमिति **सर्वम्**, सर्वं[५]ताथागतमित्यर्थः । तत्र कथं ब्रह्माण्डं तया व्याप्तम् ? यस्मात् तन्मयमेव सर्वबुद्धानां ब्रह्माण्डम्[६] । कस्माच्चराचरौ लोकौ तया व्याप्तौ ? तदुद्भवत्वात् तयोः । एतदेवाह—**उत्पत्तिरित्यादिना** । उत्पत्तिः कारणम् । **सर्वदेवानामिति** पञ्चानां कुलडाकिनीनाम्, **ब्रह्मादीनामिति** पञ्चानां तथागतानाम्, [७]उत कुलानां च प्रत्येकमनन्तानाम् । **महर्द्धिकेति** महाप्रभावा ॥४॥

---

१ शब्दमपि–भो. । २. कायत्वो–भो. । ३. नास्ति–भो. । ४. सत्त्वलोकहेतुः–भो. । ५. तथा–क. । ६. इतः परम्–'तस्य स्वभावत्वात्' इत्यधिकं–भो. । ७. उत्कुलानां–क. ।

तासां परमियं गुह्यं महामाया महेश्वरी ।
महामाया महारौद्रा भूतसंहारकारिणी ॥५॥

काऽसावित्याह—**महामायेति** । महामायाशब्देन भगवतो वज्रधरस्य परमरहस्या मूर्तिर्भगवान् हेरुक उक्तः । **महेश्वरीति** । ब्रह्मादयो हि देवानां[१] सृष्टिः, अतस्ता ईश्वर्यः । ता अप्यस्याः सृष्टिः, अत इयं महेश्वरी । यत इयं महेश्वरी, अत एव **तासां परमियं गुह्यम्** । तासामिति वज्रडाकिनीनाम् । परमगुह्यमिति परमं गुह्यम् । इयमिति महामाया । [२]तथाहि—सूक्ष्ममयमौदारिकाणां रूपाणां गुह्यमुच्यते । ततश्च पञ्चानां कुलानां कुलाधिपाः पञ्च गुह्यानि, तन्मयपञ्चकुलानां गुह्यानामपि गुह्यानि पञ्चडाकिन्यः । तथाहि—स्वकुलव्यापकप्रकाशलक्षणाः कुलेशाः । तेन ते औदारिकाः, भावांशप्रधानत्वात् । तस्यैव प्रकाशस्य [३]द्वयशून्यतालक्षणा डाकिन्यः । ततस्ताः सूक्ष्माः, अभावाङ्गप्रधानत्वात् । तासां गुह्यातिगुह्यानां गुह्यं महामाया । तथाहि—एकैककुलधर्मतालक्षणत्वादौदारिक्यस्ताः । इयं तु पञ्चकुलसाधारणी धर्मता पञ्चानामपि तासां समता, ततस्तासामपीयं गुह्यमिति परमगुह्यमेषा । तद्वाचकत्वात् तन्त्रमपीदं परमगुह्यमुच्यते ।

उच्यतां परमगुह्यम् । महामाया तु कथमुच्यत इत्याह—**महामायेत्यादि** । सा हि **महारौद्रा**, परमहिंस्रत्वात् । कुतः ? यस्माद् **भूतसंहारकारिणी** । अविद्यासंभूतत्वाद् भूतं बुद्धबोधः सर्वमावरणम्, तस्य संहारकारिणी प्रलयकर्त्री । स हि प्रलयः [४]परो मोक्षः । एवं मन्यते मीनातीति माया, "मीञ् हिंसायाम्" (१४७७ क्र्या.) । आत्वं णप्रत्यय इति ॥५॥

---

१. नास्ति–भो. । २. 'तथाहि……पञ्चडाकिन्यः' नास्ति–क. । ३. त्वशू–भो. । ४. परम–भो. ।

यया व्याप्तं च सकलं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
सैषा संहरते विश्वं सृजते सा पुनः पुनः ॥६॥

गुह्यकानामियं माता महामायेति विश्रुता ।
त्रैलोक्यसाधनी विद्या सर्वकामप्रदायिका ॥७॥

प्रकारान्तरमाह—**ययेत्यादि** । **त्रैलोक्यमिति** परिशुद्धं बुद्धक्षेत्रं **सचराचरं** पूर्ववत् (पृ. ४) व्याप्तम्, तदुद्भूतत्वात् । स हि धर्मकायः, तन्निष्पन्दं चैतत् सचराचरम् । एवं मन्यते निर्मिमीत इति माया । "माङ् माने" (१०८८ जु.) णप्रत्यय इति ।

प्रकारान्तरमप्याह—**सा पुनरित्यादिना** । पुनरिति पुनरपरम्, अपरः प्रकार इत्यर्थः । **सैषेति** हेरुकरूपा महामाया । **संहरते** त्रैलोक्यमिति, दृष्टिपातेन महेश्वरादीनां [1]दुष्टानां भस्मीकरणात् । पुनः पश्चात् **सृजते**, तदेव [2]निर्दोषीकृत्य महाध्वजघण्टाध्वनिभिः प्रत्युज्जीवनात् ॥६॥

ततः किमित्याह—**गुह्यकानामित्यादिं** । बाह्यवज्रकुले देवा ईषद् गुह्यत्वाद् गुह्यकाः । तेषा**मियं माता**, मात्रीत्यर्थः । अतश्चेयं महामायेति विश्रुता ख्याता । मीञो माङश्च णप्रत्ययं [3]कृत्वा पूर्ववदिति (पृ. ५–६) भावः । आस्तामियं स्वयमीदृशी, साधकानां तु किं करोतीत्यत आह—**त्रैलोक्ये**त्यादि । निरुत्तरज्ञानस्वभावत्वाद् **विद्या** । इयं [4]महामायाख्या विद्या साधकानां त्रैलोक्यं साधयति । **सर्वकामाः** सर्वाभिप्राया विद्याधरत्वादयः, तांश्च प्रकर्षेण ददातीति ।

---

१. नास्ति–भो. । २. निर्द्वेषी–भो. । ३. नास्ति–भो. । ४. 'महा' नास्ति–भो. ।

यया विज्ञानमात्रेण साधकेश्वरीविद्यया ।
देवदानवगन्धर्वा यक्षासुरनराश्च ये ॥८॥

विद्याधरा गुह्यकाश्च किन्नराश्च महोदराः ।
राक्षसाश्च पिशाचाश्च सिद्धयन्ते साधकेषु वै ॥९॥

वश्यानि सर्वभूतानि जलजस्थलजानि च ।
प्रकृतिप्रभास्वरा धर्मा आदिशुद्धा ह्यनाविलाः ॥१०॥

इदं श्लोकार्धमुद्देशः । तस्यैव निर्देशो 'यया' (१.८) इत्यादिः, 'अनेन योगमायाविद्येन' (१.१६) इत्येतत्पर्यन्तः ॥७॥

यया[१] **विद्यया साधकेश्वरी**ति साधकानामीश्वर्या,[२] [३]**विज्ञानमात्रेणे**त्यनुष्ठितमात्रया, साधकेषु सिद्धयन्त इति सम्बन्धः । के सिद्धयन्त इत्याह—**देवे**त्यादि । देवाः शक्रादयः, दानवाः प्रेतमहर्द्धिकाः, गन्धर्वा धृतराष्ट्रप्रभृतयः । सह यक्षादिभिर्वर्तन्त[४] इति तथोक्ताः । **साधकेष्वि**ति साधकानां **सिद्धयन्त** इति विधेया भवन्ति ॥८–९॥

वश्यमिति विधेयत्वम् । **भूतानी**ति सत्त्वाः । **जलजानि** मकरादीनि । **स्थलजानि** व्याघ्रादीनि । एवं तावद्बाह्यस्य त्रैलोक्यस्य साधनानीति निर्दिष्टम् । लोकोत्तरस्यापि त्रैलोक्यस्य साधनानीति निर्देष्टुमाह—**प्रकृती**त्यादि । अत्र श्लोकार्द्धेन संक्षेपतो हेतुतन्त्रमुक्तम्, "स्वयम्भूपञ्चज्ञानिनाम्" (१.११) इत्यनेन श्लोकपादेन फलतन्त्रम्, तृतीयपञ्चमषष्ठैः पादैरुपायतन्त्रम् । **प्रकृति**र्निजः स्वभावः, तया **प्रभास्वराः** प्रभासनशीलाः, प्रकर्षेण निर्मला इत्यर्थः । के पुनस्त

---

१. यया इति–भो. । २. विद्यात्वं–भो. । ३. विज्ञात–क. ख. । ४. नास्ति–भो. ।

इत्याह—**धर्मा** इति । [१]स्वलक्षणधारणा धर्माः, सर्ववस्तूनीत्यर्थः[२] । तानि पुनः सर्ववस्तूनि चित्तमात्राणि, चित्तस्यैव तेन[३] तेनाकारेण प्रतिभासनात् । तद्यथा स्वप्ने भवनोद्यानवापीकरितुरगमनुष्यादिरूपेण ह्यनेकानामपि चित्तविशेषत्वात् । उक्तं च **दशभूमिके**— "चित्तमात्रमिदं यदुत त्रैधातुकम्" (पृ० ३२) इति । **आर्यलङ्कावतारे**ऽप्युक्तम्—

बाह्यो न विद्यते ह्यर्थो यथा बालैर्विकल्प्यते ।
वासनालुठितं चित्तमर्थाभासः प्रजायते ॥ इति ।
(१०.१५४-१५५)

वासनालुठितमिति वासनाभिरुपहतम्, विप्लुतमित्यर्थः[४] । भवन्तु चित्तमात्राः सर्वधर्माः, ते तु [५]कुतः प्रकृत्यैव भास्वराः प्रभास्वराश्चेत्यत आह—**आदीत्यादि** । आ आदेरादिः, [६]आदितः प्रभृतीत्यर्थः । सर्वा[७]वरणमलाभावाच्छुद्धाः, मलवासनानामभावादनाविलाः । **हि**शब्दो यस्मादर्थे । यस्मादादिशुद्धास्तस्मात् प्रकृतिप्रभास्वरास्त्रिभिः कार्य(यै)स्तस्मात् प्रकृतिप्रभास्वराः ।

ननु विद्यमानेषु मलेषु तद्वासनासु च कथं शुद्धा अनाविलाश्च, अतः स्वभावानां मलानां तत्रागन्तुकत्वात्, आकाशे तमस्तुहिनधूमाभ्ररजसामिव, तस्मात्[८] प्रकृतिप्रभास्वराः । यद्येवं न स्यात्तदा न कस्यचिद्बोधिः स्यात्, चित्तस्वभावानां मलानां सति चित्ते क्षय[ा]योगात् । तस्मात् प्रकृतिप्रभास्वरत्वं चित्तस्य बोधेर्हेतुः, बोधिः

१. स्वभावलक्षण–भो. । २. 'अर्थः' नास्ति–भो. । ३. तेन तेन वस्तूनि–भो. । ४. 'अर्थः' नास्ति–भो. । ५. 'कुतः' नास्ति–भो. । ६. अनादितः–भो. । ७. भरण–क. ख. । ८. तस्माद् धर्माः प्रकृति–भो. ।

तत्रोपायाः प्रगीयन्ते स्वयम्भूपञ्चज्ञानिनाम् ।
योगिनी योगमाता च त्रैधातुकमशेषतः ॥११॥

फलम् । स(सा) पुनर्बोधिः [१]सवासनसर्वावरणक्षयादात्यन्तिकी चित्तसन्तानस्य विशुद्धिः, सैव धर्मकायः । संभोगनिर्माणकायसंगृहीतानां धर्माणां कायो वास आश्रय इति कृत्वा ॥१०॥

तत्र बुद्धा भगवन्तो धर्मकायेन [२]**स्वयंभुवः** स्वयमेव भवन्ति, सर्वावरणरूपतः कैवल्यात् स्वरूपेणैव प्रख्यान्तीति [३]कृत्वा **पञ्चज्ञानिनः** । पञ्चज्ञानान्येषाम्— आदर्शज्ञानम्, समताज्ञानम्, प्रत्यवेक्षणाज्ञानम्, कृत्यानुष्ठानज्ञानम्, सुविशुद्धधर्मधातुज्ञानं चेति । तत्रादर्शज्ञानमादर्शवन्निर्मलमनन्तं शाश्वतं च मध्यवर्तिनो ज्ञानत्रयस्याश्रयः, सर्वेषां ज्ञानान्तराणां प्रतिबिम्बोदयस्थानम्, येन प्रतिबिम्बोदयेन तथागताः सर्वाकारसर्वधर्मदर्शिनो भवन्ति । समताज्ञानं सर्वसत्त्वेष्वात्मनिर्विशेषताज्ञानं सदा महामैत्रीमहाकरुणासम्प्रयुक्तम् । प्रत्यवेक्षणाज्ञानं सर्वज्ञेयेष्वव्याहतं सर्वसमाधिधारणीनां निधानं [४]धर्ममण्डलेषु सर्वासां स्वविभूतीनां निदर्शकम्, महाधर्मदृष्टीनां प्रवर्षकम् । येन ज्ञानेन तथागताः सर्वलोकधातुष्वनन्तैः कायवाक्चित्तनिर्माणैः प्रतिक्षणमनन्तानां सत्त्वानामर्थं कुर्वन्ति, तदेषां कृत्यानुष्ठानज्ञानम् । येन ज्ञानेन तथागताः सर्वधर्मतथतां सुविशुद्धां पश्यन्ति, तन्मात्रदर्शनात्, सर्वनिमित्तमलानामत्यन्तमप्रख्यानात्, तदेषां सुविशुद्धधर्मधातुज्ञानम् । आद्यानि त्रीणि ज्ञानानि संभोगकायः । [५]चतुर्थं निर्माणकायः । [६]पञ्चमं धर्मकायैकदेशः । स्वयम्भुवश्च ते

---

१. सर्वासन–क. । २. नास्ति–भो. । ३. त्रिकायेन–भो. । ४. मर्म–क. । ५. 'चतुर्थं निर्माणकायः' नास्ति–क. । ६. पञ्चमधर्म–क. ।

सिद्धचत्यशेषनिःशेषं सर्वं मायाविकुर्वितम् ।
हरते सर्वबुद्धानां भुङ्क्ते सुराग्रकन्यकाः ॥१२॥

पञ्चज्ञानिनश्चेति तथोक्ताः, तथागता इत्यर्थः । तेषां फलभूतानामुपायाः **प्रगीयन्ते** प्राधान्येन देश्यन्ते ।

तत्रेति तस्मिन् हेतौ प्रकृतिप्रभास्वरत्वे सति । नह्येतत् फलं सत्यपि हेतौ विनोपायैर्भवति, हेतो[१]रनादित्वेन सर्वेषामादित एव बोधेः प्रसङ्गात् । तस्मादुपायाः प्रगीयन्ते । के त इत्याह—**योगिनीत्यादि** । योगिनीति पञ्चडाकिन्यः । **योगमातेति** महामाया । **त्रैधातुकमशेषत** इति सर्वं त्रैधातुकम् । तान्यत्र च सम्भूताः कुलेशाः कुलानि च । कथमेतानि त्रैधातुकम्, त्रिषु वज्रधातुषु तथागतगुह्येष्वन्तर्भावात् । कथमेते उपायाः ? हेतौ सम्पत्तौ बोधि[२]भव्यतालक्षणायां सत्यामेषामेव भावनया जायादि[३]परिच्छदया बोधेराशु प्राप्तेः, प्राप्तायां च तस्यामेभिरेव संभोगनिर्माणकायसंगृहीतैः परेषां यथाभव्यं बोधित्रयप्रापणात् ॥११॥

सिद्धचतीति मार्गरूपेण फलरूपेण च साधकानां निष्पद्यते यया विज्ञातमात्रया । **अशेषनिःशेषमि**ति । एतदेव योगिन्यादिराशित्रयम् एकस्यापि राशेरपरित्यागान्निःशेषम्, एकस्या [अ]पि देवताया अपरित्यागादशेषम्, अशेषं च तन्निःशेषं च । कस्मात् सिद्धचति ? यस्मात् **सर्वं मायाविकुर्वितम्** । सर्वमिदं महामायाधीनं मार्गफलावस्थयो[४]रित्यर्थः ।

---

१. रनादेव–क. । २. तव्यता–ख. । ३. परिवार–भो. । ४. योर्महामाया प्रतिबद्धा इ–भो. ।

योगा योगेश्वरा विद्या इन्द्रजालं करोति च ।
मोहनं स्तम्भनं चैव मारणोच्चाटनादिकम् ॥१३॥

वश्याकर्षणकर्माणि आकाशगमनं तथा ।
परपुरादिकार्याणि अन्तर्धानादिकानि च ॥१४॥

त्रैलोक्यसाधनीति यत् पूर्वम् (१.७) उद्दिष्टं तन्निर्दिष्टम् । सर्वकामप्रदायिकेति यदुद्दिष्टं (१.७) तदपि निर्दिष्ट(र्दैष्टु)माह— **हरत** इत्यादि । हरते आकर्षयति स्वार्थाय परार्थाय वा । **बुद्धानामिति** बुद्धान् । **भुङ्क्त** इति आकृष्योपभुङ्क्ते । **सुराग्राः** सुरश्रेष्ठाः शक्रादयः ॥१२॥

योगाः समाधयः । तेष्वैश्वर्यं वशित्वं समापत्तये व्युत्थानाय च । **विद्या** महामाया । **इन्द्रजालं** सैन्यादीनां [1]निर्मापनं(णम्) दर्शनमन्तर्धानं च यथायोगं सदसताम् । **मोहनं** मूर्च्छा[2]सञ्जननम् । **स्तम्भनं** निष्पन्दीकरणम् । **मारणं** रत्नत्रयादेरत्यन्तापकारिणाम् । **उच्चाटनं** स्थान[3]त्याजनम् । **आदिशब्दा**दङ्गभङ्गज्वरग्रहराक्षस-ग्रहणादिकम् ॥१३॥

वशं गतो वश्यः । इह तु वश्यार्थं कर्म वश्यमुक्तम् । आकर्षणे द्वे—पादाकर्षणं पिण्डाकर्षणं च । प्रथमं भूम्या, द्वितीयं आकाशेन । त्रीण्येतानि कर्माणि **वश्याकर्षणकर्माणि** । परपुरे परशरीरे प्रवेशः परपुरशब्देनोक्तः । आदिशब्देन व्युत्क्रान्त्यादीनि गृह्यन्ते । तान्येव कार्याणि **परपुरादिकार्याणि** । **अन्तर्धानानीति** । [4]अदृश्यत्वानि ॥१४॥

---

१. निर्मायं सं-क. । २. मूर्च्छावस्थानम्-भो. । ३. त्यज-क. । ४. नास्ति-क. ।

विद्वेषणं जम्भनं च पातालगमनं तथा ।
विद्याधरचक्रवर्तित्वमजरामरत्वं तथा ॥१५॥

निर्व्याधित्वं च भवति योगमायाविद्यः ।
अक्षरं मन्त्ररूपं च विकुर्वन्ति हि योगिनः ॥१६॥

अन्योन्यमनुरक्तयोरपि **विद्वेषणं** विद्वेषः । **जम्भनं** मूकीकरणम् । **पातालगमनं** बिलप्रवेशः । **विद्याधराणां चक्रवर्ती** यः, तेषां निग्रहानुग्रहक्षमो[1] महाविद्याधरः, तद्भावस्तत्त्वम् । **अजरत्वममरत्वं निर्व्याधित्वमिति**, त्रयमपि सुगमम् । **चार्थो** गम्यते निर्व्याधित्वं चेति । एतन्मोहनादिकं सर्वमनेन योगमायाविद्येन, क्रियत इति शेषः । मायेति महामाया, विद्यैव विद्यः, सर्वबुद्धधर्माणामेकरसत्वं **योगः**, योगश्चासौ **मायाविद्यश्च** । [2]विद्याधरेत्यादि श्लोकार्धं सप्तदशाक्षरम्, निर्व्याधीत्यादिकं चतुर्दशाक्षरम् । एतेषु सर्वबुद्धधर्महरणादिकर्मसु प्रयोगाः **केचिदत्रैव तन्त्रे** (२.३ नि.) वक्तव्याः । **केचिदन्यतन्त्रानुसारेण** द्रष्टव्याः । विज्ञानमात्रेणेत्युक्तम् (१.८), अनुष्ठितमात्रयेत्यर्थः । अतोऽनुष्ठानं दर्शयितुमाह—**अक्षरे(रमि)**त्यादि । अक्षरं मन्त्राक्षरम्, मन्त्ररूपं मन्त्रजा मूर्तिः । अक्षरं च मन्त्ररूपं च तेन तासामित्यर्थः । **विकुर्वन्ति** विक्रीडन्ति कर्मादिसिद्धिभिः । **योगिनः** साधकाः ॥१५–१६॥

---

१. क्षमश्चक्रवर्ती–भो. । २. 'विद्याधरेत्यादि......चतुदर्शाक्षरम्' नास्ति–भो. ।

पठन्ति [ते] चिन्तयन्ति भावयन्ति समाधिना ।
पठिता कुरुते विद्या विद्यासिद्धिं च कारयेत् ॥१७॥

न व्रतं न तपो दुःसहमुपवासं न संवरम् ।
सुखहर्षैश्च सिद्ध्यन्ति प्रज्ञोपायादिभिः सदा ॥१८॥

अक्षरं[1] कथमनुतिष्ठन्तीत्याह—**पठन्ति चिन्तयन्तीति** । अत्र पाठो वाचा जपः । चिन्ता [2]चित्तेन जपः । [3]मन्त्रमूर्तिं कथमनुतिष्ठन्तीत्याह—**भावयन्तीत्यादि** । भावयन्तीति प्राबन्धिकेन मनोविज्ञानेन पश्यन्ति, **समाधिनेति** तदालम्बनया चित्तस्थित्या । पठितेत्यादिना यथानुष्ठानफलमाह—**पठितेति** । जप्ता **विद्या** महामाया । **कुरुत** इति । आकर्षणादीनि सर्वकर्माणि करोति । द्वितीयेन **विद्याशब्देन** भावनामयी प्रज्ञोच्यते । सा पुनर्मूर्त्तिभावनापरिनिष्पत्तिरूपं स्वदेवताकारस्यात्मनः परिस्फुटं दर्शनम् । **सिद्धिं कारयेत्** साधकस्य महामुद्रासिद्धिम्, **च**कारात् [4]कर्माणि च साधयेत् । स्वदेवतारूपस्यैवात्मनो निष्पत्तिः स्वयं परैश्च महामुद्रासिद्धिः ॥१७॥

अनुष्ठाने सौकर्यमाह—**नेत्यादि** । अत्र **न**-शब्देषु कारयेदिति वर्तते, न कुर्यादित्यर्थः । त्रिस्नानत्रिचैलपरिवर्तादिकं नियमः । शाकयावकाद्याहारत्वं **तपः** । [5]**दुःसह**त्वं कष्टम् । अयमुद्देशः । अस्यैव निर्देश **उपवासः संवरश्च** । तत्रोपवासोऽनशनम् । संवरस्तीव्ररागस्यापि गृहिणो ब्रह्मचर्यः(र्यम्) । [6]अनुग्राहिका वेदनाः पञ्चविज्ञान[7]सहजाः **सुखानि**, मनोविज्ञान[8]सहजास्ता एव **हर्षाः**, तैः

---

१. मन्त्रणं–भो. । २. चिन्तेन–क. । ३. अक्षरमू–भो. । ४. कर्मणि–क. ।
५. दुःसहं–ख. । ६. 'अनुग्राहिका वेदनाः' नास्ति–भो. । ७–८. संहजः–ख. ।

नाभिमध्ये स्थितो वीरः कर्णिकागूढगोचरः ।
चित्तमचित्तं चिद्रूपं ज्ञानज्ञेयस्वरूपकम् ॥१९॥

साधकाः सिद्ध्यन्ति । भावनामयी महाडाकिनी तद्रूपभाविता वा बाह्यस्त्री **प्रज्ञा**, तस्या **उपाय** उपशमः श्रीहेरुकरूपभावितेनात्मना परिभोगः । **आदि**शब्दात् पञ्चोपहाराः पञ्चकामगुणाश्च, तैः **सदे**ति प्रतिसन्ध्येयम् ॥१८॥

कथं तावत् प्रज्ञोपायेन सुखहर्षा इत्याह—**नाभी**त्यादि । नाभिपद्मं नाभिः, त**न्मध्ये स्थितः** । कोऽसावित्याह—**वीर** इति । [१]निरुत्तरवीर्ययोगाद् वीरो वज्रसत्त्वः । तत्रासौ कस्मिन् भाजने स्थित इत्याह—**कर्णिके**त्यादि । नाभिकमलस्य कर्णिकायां गूढगोचरः कर्णिकागूढगोचरः । गूहनं गूढं गुप्तिः, तदर्थो गोचरः पात्रं गूढगोचरः, रविशशिनोः संपुट इत्यर्थः । इयता तस्य स्थान[२]भाजने उक्ते । स्वभावमाह—**चित्ते**त्यादिना । चित्तं विज्ञानम् । सन्त्येकपदान्यवधारणानि । तद्यथाऽम्मात्रभक्षोऽब्भक्षः, वायुमात्रभक्षो वायुभक्ष इत्युच्यते; एवमिहापि विज्ञानव्यतिरिक्तस्यार्थस्य ग्राह्यस्याभावाच्चित्तमात्रं विश्वमिति चित्तशब्दस्यार्थः । तदपि **चित्तमचित्तम्** । कस्माच्चित्तम्, ग्राह्याभावात् । कस्माच्चि(दचि)त्तम् ? ग्राह्याभावे ग्राहकस्याप्यभावात् । अथ ग्राहकं हि लोके विज्ञानं प्रसिद्धम् । विज्ञानमेव चेह चित्तम् । तस्माच्चित्तं च तदचित्तं चेति चित्ताचित्तम् । यदि ग्राहकत्वेन चित्तलक्षणेन वियोगात्तदचित्तम्, कतरेण चित्तलक्षणेन योगाच्चित्तं तदित्यत आह—**चिद्रूप**मिति । [३]चेतनं चित्, [४]ख्यातिः प्रकाशः, प्रतिभासनं स्फुटत्वम्, अपरोक्षतेति यावत् । सा रूपमस्येति चिद्रूपम् । चिद्रूपत्वेन चित्त्वलक्षणेन योगाच्चित्तं तदित्यर्थः ।

---

१. निरन्तर-भो. । २. ताजने-क., ज्ञाजने-ख. । ३. चेतने-क. । ४. नास्ति-भो. ।

ननु सर्वमेव विज्ञानमीदृशम्, तत्र कोऽतिशयो वीरस्वभावस्येत्यत आह—**ज्ञानेत्यादि** । स्वं निजं रूपं स्वरूपम् । ज्ञानं च ज्ञेयं चेति द्वन्द्वः । ज्ञानज्ञेयं स्वरूपमेव ज्ञानज्ञेयमस्येति **ज्ञानज्ञेयस्वरूपकम्** । ज्ञायतेऽनेनेति ज्ञानम्, ज्ञायत इति ज्ञेयम् । तत्र पृथग्जनज्ञानानामस्वरूपमपि ज्ञेयं भवति, ग्राह्यग्राहकयो[१]रसतोरपि तैः कल्पनात्, अवस्तुनोरपि[२] ग्राह्यग्राहकाकारयोस्तेषु प्रतिभासात् । यच्च नास्ति, न वस्तु [३]वा, न तद्विज्ञानस्य निजं रूपम्, किं तर्हि भ्रान्तिसमारोपितम् । अत एव भ्रान्तिनिमित्तं तदुच्यते,[४]भ्रान्तिचित्तत्वात् । येषामस्वरूपं ज्ञेयम्, तेषामस्वरूपमपि ज्ञानं [५]भवति, यदुत भ्रान्तिः । तथाहि—भ्रान्तिवशादसद् अवस्तु वा प्रख्याति । ततः [६]सापि ज्ञानम्, प्रख्यातौ कारणत्वात् । सा तु भ्रान्ति[र्] बुद्धेर्निजं रूपम्, आगन्तुकत्वाद् मलानाम् । तस्मादस्वरूपमपि तेषां ज्ञानम् । पारमार्थिकं तु बोधिचित्तं निष्प्रपञ्चज्ञानात्मकम् । प्रपञ्चो भ्रान्तिः । ततः सर्वप्रपञ्चानां तत्राभावात्, स्वरूपमेव तस्य ज्ञानं न भ्रान्तिरपि, सर्वप्रपञ्चनिमित्तानां तत्रास्तमयादप्रतिभासात् । स्वरूपमेव तस्य ज्ञेयम्, नासदवस्तूनामपि । तदनेन श्लोकार्धेन पारमार्थिकबोधिचित्तलक्षणं[७] निष्प्रपञ्चज्ञानरूपत्वं वीरस्य स्वभावः साक्षादुक्तः । महासुखरूपत्वं तु सामर्थ्यादुक्तम्, निष्प्रपञ्चज्ञानसहजत्वान्महासुखस्य । तथा चोक्तम**विकल्पप्रवेशायां धारण्याम्**—

अविकल्पाशयो भूत्वा सद्धर्मेऽस्मिन् जिनात्मजः ।
विकल्पदुर्गं व्यतीत्य क्रमान्निष्कल्पमाप्नुते ॥

---

१. रनयो–क. । २. नोऽपि–क. । ३. 'वा' नास्ति–क. । ४. निमित्तग्राह्यत्वात्–भो. । ५. न भवति–भो. । ६. सापि भ्रान्तिस्तेषामज्ञानं–भो. । ७. 'लक्षणं' नास्ति–भो. ।

तं वीरं कथयिष्यामि गम्भीरे बुद्धशासने ।
आलिकालीसमां कृत्वा तत्र रेखात्रिसम्पुटाम् ॥२०॥

प्रशान्तमचलं श्रेष्ठं वशवर्ति समासमम् ।
निर्विकल्पसुखं तस्माद् बोधिसत्त्वोऽधिगच्छति ।। इति ।

[ए]तस्मिन् [१]गाथाद्वये [२]अविकल्पाशय इति स्थिराशयः । सद्धर्मेऽस्मिन्निति महायाने । जिनात्मज इति बोधिसत्त्वः । विकल्प एव चतुर्विधो दुर्गः, तं क्रमाद् व्यतीत्य अतिक्रम्य । निष्कल्पमाप्नुत इति निर्विकल्पं निष्प्रपञ्चज्ञानं प्राप्नोतीति । तस्मादेव ज्ञानान्निर्विकल्पं सुखमाप्नोति । प्रशान्तम्, निष्क्लेशत्वात् । अचलम्, अपरिं- हाणीयत्वात् । श्रेष्ठम्, सर्वलौकिकलोकोत्तरसुखोत्कृष्टत्वात् । वशवर्ति, यथेच्छं यावदिच्छं च संमुखीकरणात् । समं तुल्यं तदन्यसुखैः सुखज़ात्या, असममेभिरेव चतुर्भिर्विशेषैः ॥१९॥

तमीदृशं **वीरं कथयिष्यामि** । कस्मिन् याने प्रसिद्धमित्याह—**बुद्धशासन** इति । येन यानेन बुद्धो भवति तद्बुद्धशासनम्, महायाने इत्यर्थः । ननु [३]पूर्वश्लोकेन कथित एवायम्, किमुच्यते कथयिष्यामीति ? अत आह—**गम्भीर** इति । गम्भीरमहायाने, मन्त्रयान इत्यर्थः । पारमितानयविलक्षणो हि मन्त्रनये बोधिचित्तस्य मुद्राकारः परिच्छेदश्च क्षिप्रतरं बोधिसाधनो भाव्यते । स चाद्यापि नोक्तः । तेनाह—कथयिष्यामीति । तमेवाह— **आलिकाली**त्यादिना । **तत्रे**ति रविचन्द्रसम्पुटे नियोजितेति नियमनाय योजिता । केत्याह—**रेखे**ति । तस्मादेव वीराच्चन्द्रमध्य- सूक्ष्मरन्ध्रेणोत्थिता अभेद्या अच्छेद्या मृणालतन्तुसूक्ष्मा रश्मिरेखा । कथं नियोजिता—**आलिकालीसमां** तामेव **कृत्वा** आलिः काली च समा

---

१. नास्ति–भो. । २. स्थिराशय इत्यचलाशयगतः–भो. । ३. श्लोकार्धेन–भो. ।

ज्वलितोर्ध्वमुखी रेखा तदाधः स्रुतिकारिणी ।
शुक्ररूपेण स्रवति अमृतं बिन्दुरूपिणम् ॥२१॥

यस्यां सा तथोक्ता ।[1]ताः कथं [2]तस्याम् ? तस्यामेव मुक्तावलियोगेन ग्रथिता यतः । कथं समाः ? यस्मादर्धकाली [3]द्वे कालीशब्देनोक्ते, काल्येकदेशत्वात् । ते अपि षोडशाक्षरे, ङञयोर्वर्जनात् । अतस्तासां साम्यम् । सा च रश्मिरेखा त्रिभिर्वेष्टैः संपुटं वेष्टयति । तस्यामालित्रयं[4] चन्द्रस्योपरि ग्रथितं यथापाठम् । तत्र मध्ये स्वराली अनयोरर्धकाल्यौ । तथा च वक्ष्यति— "दिव्यमक्षरपङ्क्तिभिः" (१.२६) इति । **श्रीसंवरोत्तरे** चोक्तम्—

ककारादि [5]दकारान्तं ङञवर्जं निवेशयेत् ।
धकारादि क्षकारान्तम् आलिद्वयं समालिखेत् ॥
मध्यस्था तु [6]अकाराली न्यस्तव्या शशिमण्डले ॥ इति॥२०॥

ज्वलितेत्यादि । अपरा रश्मि**रेखा** प्रज्ञारागानलेन ज्वलिता यदा वीरादुद्गच्छति, **तदासौ अधः स्रुतिकारिणी** भवति । अत्र हि स्रुतेरर्थः स्रवतिशब्देनोक्तः, [7]स्रुतिरित्यर्थः । अथ तस्यां स्रुतौ कः स्रवतीत्याह—**अमृतमिति** । [8]मुक्तत्वादविनाशित्वान्महासुखत्वाच्चामृतम् । कीदृशमित्याह—**बिन्दुरूपिणमिति** । महासुखचित्तरूपः सितबिन्दुः[9] वीर इत्यर्थः । कथं स्रवतीत्याह—**शुक्ररूपेणेति** । विशुद्धज्ञानरसः सितमुखद्रवरूपत्वेन शुक्रसाधर्म्यात् शुक्रशब्देनोक्तः ।

---

१. आः–क. । २. 'तस्याम्' नास्ति–क. । ३. देकाली–क. । ४. 'आलित्रयं' नास्ति–भो. । ५. हकारान्तं–भो. । ६. अकाली–क. । ७. 'स्रुतिरित्यर्थः.... शुक्रशब्देनोक्तः' नास्ति–क. । ८. नोक्त्वा–ख. । ९. बन्धो वीरकल्पबन्ध–ख. ।

तेन रूपेण स्रवति, [१]क्षरति, तत्क्षरतीति यावत् । तदत्रालिकालीत्यादिना वीरस्य सौस्थित्यमुक्तम् । ज्वलितेत्यादिना कर्म । [२]अमृतमित्यनेन स्वभावान्तरम् । बिन्दुरूपिणमित्यनेन तस्य मुद्राकारः कथितः । कथं पुनरियमस्य [३]मुद्रा भवति ? उच्यते—योऽसाविन्दुर्धवलः सूक्ष्मबिन्दुः, स चित्तम्, अन्तःप्रकाशमानत्वात् । या पुनस्तन्मात्रे चित्तस्यावस्थितिः, सा चित्तव्यतिरिक्तार्थानुपलम्भाच्चित्तमात्रता । या तस्य ग्राह्या-भावादग्राहकता, सा तस्याचित्तता । अत एवासौ शून्यरूपः । या पुनस्तस्य प्रकाशमानता सा चिद्रूपता । यः पुनस्तन्मात्रे स्थितचित्तस्य सर्वप्रपञ्चनिमित्तास्तमयः, सा तस्य ज्ञानज्ञेयरूपता । अयं चास्य [४]वज्रधरस्य सूक्ष्मज्ञानमुद्राकारः । **श्रीसमाजेऽप्युक्तम्**—

आकाशधातुमध्यस्थं भावयेच्चन्द्रमण्डलम् ।
बुद्धबिम्बं विभावित्वा सूक्ष्मयोगं समारभेत् ॥
नासाग्रे सर्षपं चिन्तेत् सर्षपे सचराचरम् ।
भावयेज्ज्ञानपदं रम्यं रहस्यं ज्ञानकल्पितम् ॥ इति ।
(गु. स. ६.८-९)

श्रीवज्रामृतेऽप्ययमस्य सूक्ष्मयोगः साधारः सकर्मक उक्तः—

तिष्ठते निश्चलं विद्या अमृतं ध्यानमारभेत् ।
ध्यायते परमं तत्त्वममृतं बिन्दुरूपिणम् ॥
खमध्ये शशिसंकाशं शून्यतत्त्वमुदाहृतम् ।
अक्षयमव्ययं सूक्ष्मं वज्रसत्त्वमनाहतम् ॥
नाभिमध्ये स्थितो देवः कर्णिकागूढगोचरे ।
स्रवते शुक्ररूपेण भगलिङ्गान्तरे स्थितः ॥ इति ।

तस्माद्यादृशः पठ्यते, तादृश एवायमत्र योगः कर्म च ।

---

१. नास्ति–ख. । २. शुक्रमि–भो. । ३. मुद्राकार–भो. । ४. वज्रसत्त्वस्य–भो. ।

यद्यदिन्द्रियमार्गत्वं यायात् तत्तत्स्वभावतः ।
परमाहितयोगेन सर्वं बुद्धमयं यतः ॥२२॥

नन्विह तन्त्रे चतुर्षु स्थानेषु चत्वारि चक्राणि ध्येयानि, [१]न चण्डाली ? न तया ज्वलन्त्या चक्रचतुष्टयं तापयित्वा निःसृत्य [२]स्फारित्वा सर्वबुद्धानां चतुश्चक्रं तापयित्वा तत आगत्य महासुखचक्रे प्रविश्य हंकारादमृतस्रावणम् । यत्पुनः सर्वमेतदन्यतो दृष्टं **कैश्चिद**ानीयते, तदयुक्तम्, वाचकाभावात्, सर्वतन्त्राणां च नानाभिप्रायत्वात्, सुसंक्षिप्तातिसमयत्वाच्चास्य तन्त्रस्य ॥२१॥

यद्यदित्यादिना कर्मान्तरमाह । **इन्द्रियाणि** चक्षुरादीनि, तेषां **मार्गत्वं** विषयत्वं **यायात्** प्राप्नुयात् । यद्यद्वस्तु यत्किञ्च दृश्येत, श्रूयेत, घ्रायेत, आस्वाद्येत, स्पृश्येत; एतदेव[३] **सर्वं बुद्धमयं** प्रत्येकमशेषबुद्धस्वभावं निचि(श्चि)नुयात् । कथं सर्वबुद्धमयम् ? **स्वभावतः** स्वभावेन, प्रकृत्येति[४] यावत् । तथा ह्यनादिनिधनो[५] धर्मधातुः सर्वधर्माणां प्रकृतिः । स एव च धर्मधातुः सर्वबुद्धानां परमं रूपम् । तस्मात् तेन स्वभावेन [६]सर्वबुद्धमयं तत्तन्न केवलं स्वभावेन **परमाहितयोगेन** च । विनापि तेन चार्थगतेः [७]परम-मुच्यते । लोकोत्तरं ज्ञानं निष्प्रपञ्चं वीराख्यम्, तेनाहितसाधनं जनितत्वं परमाहितं वीरनिष्पन्दत्वमित्यर्थः । तस्मिन् योगोऽधिमोक्षः[८], तेन दर्शनादौ प्रतिभासमानं दृश्यादिकं वीरस्यैव निष्पन्द इत्यनेन चाधिमोक्षेणे[९]त्यर्थः ॥२२॥

---

१. 'न' नास्ति–भो. । २. स्फुरिता–भो. । ३. इतः परं 'ते सर्वबुद्धस्वभावम्' इत्यधिकम्–भो. । ४. इतः परं 'अकृत्रिमम्' इत्यधिकम्–भो. । ५. अनन्तो–भो. । ६. जगत् सर्वं–भो. । ७. परमुच्यते–क., परमहितमु–भो. । ८. मुक्तः–भो. । ९. मुक्तेने–भो. ।

महासमयसिद्धिस्तु महागुलिकासाधनम् ।
महामायाप्रयोगैश्च योगसंवरं कारयेत् ॥२३ ॥

पञ्चपूजोपहारैश्च पञ्चकामगुणैस्तथा ।
सिद्धेन्द्रादिभिर्ज्ञातव्यं सिद्धिः शाश्वताऽव्यया ॥२४॥

महासमयेत्यादिना कर्मान्तरमाह । समयो [१]देवता । समण्डलो मण्डलाधिपतिर्महासमयः । तस्य **सिद्धि**र्निष्पत्तिः । **तु**शब्दः पादपूरणार्थः । सा सिद्धि**र्महागुलिकासाधनं** ज्ञानबिन्दुर्गुलिका, चतुर्बिन्दुः परिवारः, मध्यबिन्दुर्महागुलिका, तया साधनं निष्पादनम्, महासमयस्य सिद्धिः । सिद्धे मण्डले किं कुर्यादित्याह— **महामाये**त्यादि । मण्डलाधिपतिः श्रीहेरुको महामाया, तद्विद्यापि बुद्धडाकिनी महामाया, तयोरेकस्वभावत्वात् । तयोः **प्रयोगैः** कर्मभिराश्लेषचुम्बनादिभि**र्योगसंवरं कारयेत्** । योगश्च संवरं च योगसंवरम् । तत्र नाभिकमलकर्णिकारविसोमसम्पुटगत[२]सितसूक्ष्म-बिन्दुर्योगः । संवरं सुखवरं महासुखं प्रतिवेधविचारणानन्तरं कर्म, ज्वलितेत्यादिना श्लोकेन यत्पूर्वमुक्तम् (१.२१) ॥२३॥

किं केवलमेव[३] ? नेत्याह—**पञ्चे**त्यादि । एभिर्दशभिः सहितमित्यर्थः । तस्मादेव [४]ज्ञानरेतसो डाकिनीकमलोदरगतान्(नां) प्रत्येकं गगनव्यापिनां पुष्पादिमेघानां [५]दशानां क्रमेण स्फुरणात् । उपह्रियन्त [६]**इत्युपहाराः** पुष्पधूपदीपगन्धनि(नै)वेद्यानि । अप्राप्ताः काम्यन्तेऽभिलष्यन्त इति **कामाः**, प्राप्ता गुण्यन्ते पुनर्भुज्यन्त इति **गुणाः**, कामाश्च ते [७]गुणाश्चेति कामगुणाः, प्रणीता

---

१. मण्डलदेवता–भो. । २. गते–ख. । ३. 'कार्यम्' इत्यधिकम्–भो. । ४. ज्ञानबिन्दु–भो. । ५. नास्ति–ख. । ६. 'पञ्च' इत्यधिकम्–भो. । ७. पञ्चगुणा–भो. ।

येन ज्ञानेन सिद्धेन त्रिदशालयमाश्रियात् ।
तदहं कथयिष्यामि देवति सत्यमहं शपे ॥२५॥

तदहं त्वां महामायां विद्यां त्रैलोक्यसाधनीम् ।
वीरं महायोगिनां हि दिव्यमक्षरपङ्क्तिभिः ॥२६॥

रूपशब्दगन्धरसस्पर्शाः । तत्र संवरं गुह्यपूजा रत्न[१]पूजा च । शेषा बाह्यपूजा । एतस्मिन् देवताराधने फलमाह—**ज्ञातव्यमित्यादिना** । ज्ञातव्यं निश्चेतव्यम् । [२]**अव्ययत्वादत्यन्ता**, अक्षयत्वाच्छा**श्वती** महामुद्रासिद्धिः । तां प्राप्स्यामीति शेषः ॥२४॥

एवं समासतः सानुशंसां भावनामुक्त्वा इदानीं भावनासाधारणैरनुशंसैः सहितं जापमाह—**येनेत्यादिना** । **ज्ञानेनेति** विद्यया । **सिद्धेनेत्यनुष्ठितेन** । **त्रिदशा** देवाः, तेषा**मालयं** भवनम् । **देवतीति** बुद्धडाकिन्याः सम्बोधनम् । किमिदं सत्यं न वेत्याह—**सत्यमित्यादि** । अवधारणं गम्यते । सत्यमेवाहं वदामि न कदाचिन्मृषेत्यर्थः ॥२५॥

तत्तर्हि ज्ञानं कतमा देवता किंप्रभावा किंस्वभावा चेत्यत आह—**तदहमित्यादि** । **त्वामित्यादौ** द्वितीया, वक्ष्यामीत्यनेन सम्बन्धात् । कतमा देवतेत्यत्रोतरम्–**त्वां महामायां विद्यामिति**[३] । किंप्रभावेत्यत्रोत्तरम्–**त्रैलोक्यसाधनीमिति** । किंस्वभावेत्यत्रोत्तरम्—**महायोगिनां दिव्यमिति** । षष्ठीसमासोऽयम् । [४]दीव्यत्यस्मिन्निति दिव्यं गुह्यम्, रविसोमसंपुट[५]मित्यर्थः । [६]तद्धि तासां समता । ततस्तदेव योगिनां रतिस्थानम् । **अक्षरपङ्क्तिभिरिति** तिसृभिः स्वरव्यञ्जनपङ्क्तिभिः, भूषितमिति शेषः । तन्मध्यवर्ती **वीरः** श्रीहेरुकः । स तु संपुटो बुद्धडाकिनीत्यर्थः[७] ॥२६॥

---

१. तत्त्वपूजा–भो. । २. अव्ययत्वाच्छाश्वती–ख. । ३. मित्यर्थः–भो. । ४. दिव्य इत्यस्मिन् रतिललितत्वेन दिव्यं–भो. । ५. संपुटं भगमि–भो. । ६. तदपि योगिनां–भो. । ७. 'इत्यर्थः' नास्ति–भो. ।

येन चिन्तितमात्रेण सिद्ध्यते सचराचरम् ।
सर्वकामोपभोगैश्च सेव्यमानो यथेच्छया ॥२७॥

विक्रीडन् हि महायोगी सिद्ध्यते सर्वदा [शुभे] ।
विभिन्नाकाररूपेण योगात्म दर्शयन्ति च ॥२८॥

ददाति च महासिद्धिं कुरुते ताथागतीं श्रियम् ।
सत्त्वार्थं कुरुते सदा विभिन्नैस्तु रसायनैः ॥२९॥

शुक्रमाहत्य मद्यं च महापिण्डं तथैव च ।
महामांसं योगिनीभिराहत्य सह चर्यते ॥३०॥

येनेति वीराधिष्ठितेन रवीन्दुसंपुटेन स्वरव्यञ्जनालित्रय-भूषितेन[१] । **चिन्तितमात्रेणेति** [२]जप्तमात्रेण । यथा तु जापः कर्तव्यस्तद् द्वितीयनिर्देशे वक्ष्यति (२.१२) । **सचराचरमिति** बाह्यं त्रैलोक्यम् । **सिद्ध्यते** विधेयीभवति । **सेव्यमानो** योगी । **कैः** वज्रयोगिनीभिः, [३]**यथेच्छयेति** यादृशानिच्छन्ति, **दर्शयन्तीति** तस्मै दर्शनं ददति । **योगात्मेति** मन्त्रदेवताः ॥२७-२८॥

ददातीति ददति । **महासिद्धिमि**त्यष्टविधां खड्गाञ्जना-दिकाम् । **ताथागतीमिति**, तथताधिगमात् तथागता बुद्धबोधिसत्त्वाः, तेषामियं [४]ताथागती । **श्रीः** सम्पत् । [५]**कुरुत** इति स एव योगी ॥२९॥

मद्यमिति मद्याकर्षणम् । **आहत्येति** आकृष्य । **आयुर्जीवितम्** । **वीर्यमुत्साहः** । **तेजः** प्रभावः । **दिव्यं चक्षुश्च** [६]चक्षुर्विज्ञानम्,

---

१. 'स्थितम्' इत्यधिकम्–भो. । २. नास्ति–क. । ३. 'यथेच्छयेति यादृशानिच्छन्ति' इत्यस्य स्थाने 'विधेयीभवति' इति पाठान्तरं वर्तते–भो. । ४. नास्ति–भो. । ५. सत्त्वार्थं कुरु–भो. । ६. ऋद्धि चेति दिव्यचक्षुरभिज्ञाम्–क., ख., गृहीतपाठस्तु–भो. ।

महायुश्च महावीर्यं महातेजो बलं तथा ।
दिव्यं चक्षुश्च ऋद्धिं च सोमपानं दिने दिने ॥३१॥

स गच्छेद् विपुलमायुर्महाकल्पावसानकम् ।
प्रातिहार्यं दर्शयति असेचनकविग्रहम् ॥३२॥

मनोजल्पनमात्रेण स्वरूपपरिवर्तनम् ।
विद्येश्वरी महद्धिदा पठितसिद्धाऽमोघिनी ॥३३॥

ऋद्धिं चेति ऋद्ध्यभिज्ञां च । **सोमपानम**मृतपानम् । **दिने दिने** प्रतिदिनम् । [1]प्राप्नो(ती)ति श्लोकशेषः ॥३०–३१॥

महायुरित्युक्तम् (१.३१) । [2]तस्यैव निर्देशः– **स** इत्यादि । स योगी **विपुलं** विस्तीर्ण**मायुर्गच्छेत्** प्राप्नुयात् । **महाकल्पोऽवसानं** पर्यन्तोऽस्येति यथोक्तम् । [3]**दर्शयतीति** योगी । प्रति प्रति ह्रियन्ते आवर्ज्यन्तेऽनेन सत्त्वा इति प्रतिहार्यम्, [4]स्वार्थेऽण् **प्रातिहार्यम्** । तच्च त्रिविधम्–ऋद्धिप्रातिहार्यम्, आदेशनाप्रातिहार्यम्, अनुशासनी-प्रातिहार्यं च । यथाक्रमं तिस्रोऽभिज्ञाः– ऋद्धिः, परचित्तज्ञानम्, आश्र(स्र)वक्षयज्ञानं च । **असेचनकविग्रहं** दर्शनैरतृप्तिकरं शरीरं दर्शयतीति पूर्वेण सम्बन्धः ॥३२॥

स्वरूपमात्मस्वरूपं तस्य **परिवर्तनं** पररूपपरिग्रहः । मनसा चिन्तितं **मनोजल्पमात्रम्**, एवंरूपोऽहं स्यामिति । [5]स्तुतिमुखेनोप-

---

१. पानं प्रा–भो. । २. 'तस्यैव.....इत्यादि' नास्ति–ख. । ३. 'दर्श....योगी' नास्ति–भो. । ४. 'स्वार्थेऽ.....हार्यम्' नास्ति–भो. । ५. अनुशंसामु–भो. ।

विद्ये ते सदृशी नास्ति त्रिषु लोकेषु काचन ।
तन्त्राणामागमः सोऽयं कथितस्तव शोभने ॥३४॥

॥ इति योगेश्वरीमहाविद्यासिद्धिनिमित्तनिर्देशः ॥१॥

संहरन्नाह—**विद्येश्वरी**त्यादि । **पठितसिद्धे**ति वर्तमाने क्तः । जापमात्रेण सिद्ध्यतीत्यर्थः. । अमोघप्रभावयोगा**दमोघिनी,** सिद्धायां सत्यामवश्यं यथोक्तफलदानात् ॥३३॥

विद्ये त इति । हे[1] विद्ये । ते **सदृशी** त्वया तुल्या नास्ति मेऽन्या विद्या । **त्रिषु लोकेष्विति** । त्रिषु तथागतवज्रपद्मकुलेषु । **आगमः** साधनम् । **शोभने** इति सम्बोधनम् ॥३४॥

उपायाङ्गेन **योगेश्वरी,** प्रज्ञाङ्गेन **महाविद्या** । का चासौ ? महामाया । तस्याः **सिद्धि**रनुष्ठानम्, तस्या **निमित्तं** चिह्नम्, विविधः[2] प्रभावः, तस्य **निर्देशः** कथनम् ॥

॥ गुणवत्यां श्रीमहामायातन्त्रटीकायां प्रथमो निर्देशः ॥

---

१. ते–ख. । २. त्रिविधः–क. ।

द्वितीयो निर्देशः

अथातो महायोगेश्वरीणां दिव्यं योगसिद्धिफलप्रदं गुह्याक्षरं वक्ष्यामि ॥१॥

येन चिन्तितमात्रेण प्रार्थितं ददते वरम् ।
आदिमाक्षरयोगेन उच्छ्वासं कुरुते सदा ॥२॥

अथात इत्यादि । इयमेकपदी गाथा द्वादशाक्षरा । **अथ**शब्दः समग्र[1]जपप्रस्तावनार्थः । **अत** इति देवतामूर्तिभावनादूर्ध्वम् । **महायोगेश्वरीणां दिव्यमिति**[2] । सवीरं वीरभाजनम्, नाभिकमलकर्णिकायां चिन्तयेदिति शेषः । तस्मिन् किं जप्यमित्याह—**गुह्ये**त्यादि । गुह्यमप्रकाश्यत्वात् । गुह्यतेऽनेन देवतातत्त्वमिति वा[3] गुह्यम् । गुह्यं च **तदक्षरं** च । **योगो** देवतासमाधिः, तस्य **सिद्धि**र्निष्पत्तिः, **फलं** तस्या एव निष्पत्तेर्महामुद्रासिद्धिः । ते द्वे प्रकर्षेण ददातीति **योगसिद्धिफलप्रदम्** ॥१॥

चिन्तितमात्रेणेति विनापि योगसिद्धिं जपमात्रेण **प्रार्थितं** विद्याधरत्वादिकं **वरम्** । संपुटगर्ते गुह्याक्षरं दृष्ट्वा तच्छीर्षे वीरमुत्थाप्य जपेदिति भावः । कथं जपेदित्याह–**आदिमे**त्यादि । [4]अत्रादिममक्षरं प्रणवः, प्रायेण मन्त्राणामादौ तस्य दृष्टत्वात् । तस्य योगेन शनैरुच्चारेण । कुरुते, योगीति सम्बन्धः । किं कुरुते ? **उच्छ्वासम्**, प्राणवायोरूर्ध्वगमनम् ॥२॥

---

१. जय–क. । २. ति सम्बन्धः–भो. । ३. नास्ति–ख. । ४. 'अत्र' नास्ति–भो. ।

अष्टान्तेन च संयुक्तमूकारतिलकेन हि ।
निःश्वासं कुरुते योगी भावाभावविवर्जितम् ॥३॥

अष्टान्तेनेति [१]अष्टमवर्गान्तेन, हकारेणेत्यर्थः । [२]**निःश्वासं कुरुत** इति सम्बन्धः । कथं कुरुते ? **ऊकारेण** हकारस्याधस्तात् समायुक्तं यथा भवति, हकारं शीर्षे च सबिन्दुकं यथा भवति । हूंकारेणेति समुदायार्थः । कीदृशमुच्छ्वासनिःश्वासं कुरुत इत्याह—**भावाभावविवर्जितमिति** । यथाक्रममिति शेषः । ज्ञानमात्रता हि प्रणवार्थः, "ॐकारं ज्ञानहृदयम्" (११.२) इति **श्रीगुह्यसमाज**वचनात् । निराभासत्वेन कायवाक्चित्तसमता हूंकारार्थः, "हूंकारं कायवाक्चित्तं त्रिवज्राभेद्यसमावहम्" (११.३) इति **तत्रैव** वचनात् । अत ॐकारसूचिताया विश्वस्य चित्तमात्रताया दर्शनाद् भाववर्जितम् । तदेव चित्तमात्रं विश्वमभावः, चित्तव्यतिरिक्तानां भावानामसत्ता, तस्यापि चित्तमात्रस्य विश्वस्य या समतापत्तिर्निराभासीभावो हूंकारः सूचितः। तद्दर्शनादभाववर्जितम् । [३]एवं भावाभावविवर्जितम् । तत्तर्हि चित्तमात्रतायाः समतापत्तेश्च दर्शनं कीदृशम् ? अत्रोपदेशः— प्रणवमुच्चारयन्नेव वीरादुच्छ्वासेन सह ज्ञानरश्मिरेखामुद्गच्छन्तीं [४]पश्येत् । तया स्फुरित्वा विश्वस्य बुद्धमयीकरणं बीजाक्षरमुच्चारयन् स्वदेवताकारेण तस्य विश्वस्य विभावनं चित्तमात्रतादर्शनम् । ततो हूंकारनिःश्वासेन विश्वस्य वीरे संहारः समतापत्तिदर्शनम् । एतदुभयं शनैः [शनैः] पुनः पुनस्तावत् कुर्याद्यावत् खेदो न भवतीत्ययमत्र तन्त्रे जापः ॥३॥

---

१. 'अष्टमवर्गान्तेन' नास्ति–भो. । २. 'निःश्वासं.......सम्बन्धः' नास्ति–भो. । ३. 'एवं......तम्' नास्ति–भो. । ४. पश्यते–क. ।

न तस्य व्रतादिनियमो यन्त्रणाधारणादिकम् ।
होमयागादिकर्माणि निवर्तन्तेऽपरापरम् ॥४॥

मन्त्रसंस्थानधर्मात्मा योगस्त्रिविध उच्यते ।
त्रिविधेन तु ज्ञानेन भवदोषैर्न लिप्यते ॥५॥

एवं योगपरो नित्यं सतताभ्यासतत्परः ।
वज्रसत्त्वसमः सोऽपि मासेनैकेन सिद्ध्यते ॥६॥

अत्रानुष्ठानसौकर्यमाह—**न तस्येत्यादिना** । **तस्येति** जपतः, **व्रतं** मौनस्नानभक्ष्यादिनियमः, [१]**यन्त्रणा धारणा** च प्राणवायोः । **निवर्तन्त** इति तन्त्रान्तरेभ्यो नानुवर्तन्ते । **अपरापरमिति** [२]चार्थो गम्यते । एभ्योऽन्यदपि [३]बाह्यकर्म सर्वं निवर्तत इत्यर्थः ॥४॥

ननु जल्पनं जपः । तदत्र जपता किं केवल[४] एव जल्पः करणीयः, किं वा मूर्तिज्ञानयोरपि भावनेत्यत आह—**मन्त्रेत्यादि** । तत्त्वालम्बनसमाधिर्योगः । स **योगस्त्रिविधस्त्रिप्रकारः** । कुतः ? यस्मान्**मन्त्रसंस्थानधर्मात्मा** । तत्त्वद्योतकं वचनं मन्त्रः, देवतामूर्तिः संस्थानम्, मन्त्रार्थज्ञानं धर्मः । **त्रिविधेन तु ज्ञानेनेति** । अनन्तरोक्तेन योगत्रयेण, न तु जल्पमात्रेण । **भवदोषैर्न लिप्यत** इति संसारदोषैः पापादिभिर्विमुच्यत इत्यर्थः ॥५॥

एवमिति योगत्रयम् । **नित्यमिति** प्रत्यहम् । **सततमिति** प्रतिसन्ध्यम् । [५]**सिद्ध्यत** इति सम्पद्यते । **वज्रसत्त्वः**

---

१. मालामन्त्रधा–भो. । २. चादर्थो–ख. । ३. नास्ति–भो. । ४. लमेव–ख. । ५. 'सिद्ध्य.......द्यते' नास्ति–भो. ।

इन्द्रवर्णसम्प्रयुक्तामादिमाक्षरभावनाम् ।
स विद्यया सम्पुटितं तमाकर्षयति क्षणात् ॥७॥

द्वितीयाक्षरप्रयुक्तया चिन्तया हि विभावनम् ।
सर्वमपि च त्रैलोक्यं समस्तं वशमानयेत् ॥८॥

श्रीहेरुकः, तेन **समः** सदृशः । **अपि**शब्दाद् वज्रडाकिनीसमः । **स** इति योगी । तदत्र हेरुकस्य ज्ञानडाकिनीनां मूर्तिस्तदहङ्कारेण भावनीया । मन्त्रः प्रणवहूंकारौ शनैरुच्चार्यमाणौ, तन्मध्ये च शनैरुच्चार्यमाणो मूलमन्त्रः । मन्त्रार्थज्ञानं रविसोमसम्पुटोदरगत-विद्याक्षर[१]शीर्षे वीरबिन्दुमुत्थाप्य तदुत्थितेन रश्मिना सर्वभावानां बुद्धमयीकरणं वीरबिन्दौ च संहरणं वेदितव्यम् । एवं मन्त्रसंस्थानधर्मयोगैः षण्मासजपे कृते सदृशसिद्धौ लब्धायामलब्धायां वा सम्यक् प्रयुक्तानि विद्याक्षराणि यथास्वमवश्यं[२] कर्म साधयन्ति ॥६॥

विद्याक्षराणि तत्प्रयोगांश्च सूचयितुमाह—**इन्द्रवर्णे**त्यादि । इन्द्रगोप इन्द्रशब्देनोक्तः । **आदिमाक्षरं** प्रणवः । तस्य **भावनां** यस्याकर्षणाय प्रयुञ्जीत । विद्येति **विद्या**योगी । **स** योगी **तं** साध्यं क्षिप्रमानयति । क्षिप्रमित्यस्य निर्देशः—**क्षणा**दिति । एतदुक्तं भवति—बुद्धडाकिन्यादियोगं कुङ्कमारुणं कृत्वा वीरभाजने कुङ्कमारुणं प्रणवं विचिन्त्य तद्बिन्दौ वीरं विन्यस्य प्रणवरश्मिभिर्वीरमरुणीकृत्य वीरादरुणरश्मिरेखाद्वयं निःसार्य एकस्या अग्रे पाशं द्वितीयस्या अङ्कुशं विचिन्तयेत् । साध्यं पाशेन कण्ठे बद्ध्वा अङ्कुशेन हृदि विद्ध्वा क्षिप्रमाकृष्यमाणं विचिन्तयेत् । मुहूर्तादाकृष्टो भवतीति ॥७॥

द्वितीयेत्यादि । आलिपाठे द्वितीयमक्षरमाकारः, तस्मिन्

१. क्षरबिन्दु–भो. । २. 'स्वमवश्यं' नास्ति–भो. ।

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च इन्द्रः कामेश्वरस्तथा ।
आकृष्यन्ते सपत्नीका ज्ञानाक्षरेण चोदिताः ॥९॥

आकाराक्षरसंयुक्ताः कायवाक्चित्तसंस्थितम् ।
त्रिसंयोगभावनया पिण्डाकृष्टिश्च उत्तमा ॥१०॥

प्रयुक्तस्तच्छीर्षमुत्थापितो वीरः । तेन भावयन्ति परमाणुशो रञ्जयन्ति स्वदेवतायोगिनः । **विभावन**मिति विधिसाध्यभावनम् । **सर्वमपि चे**ति साध्याङ्गसमस्तमित्यादि । अप्यर्थो गम्यते । **त्रैलोक्यमपि समस्तं वशमानयति,** किं पुनः प्राणिशतं प्राणिसहस्रं वेत्यर्थः । किमुक्तं भवति–षण्णामन्यतमयोगं जवारुणं कृत्वा आकारं जवारुणं सम्पुटे विन्यस्य तच्छीर्षे च वीरं तेनैव रञ्जितं तद्रश्मिना साध्यान् प्रति परमाणुं रञ्जयित्वा वशीकृतान् पादतले निपतितांश्चिन्तयेत् । सर्वे ते वशमायान्तीति ॥८॥

ब्रह्मेत्यादि । **कामेश्वरो** मारः । [1]एते ब्रह्मादय **आकृष्यन्ते** । अक्षयत्वाद**क्षर**श्चित्तवज्रस्तस्य गुह्याक्षरम् अक्षराक्षरम् । अक्षरज्ञानेति क्वचित् पाठः । तत्र **ज्ञानं** [2]बीजाक्षरम्, उभयस्थायिहूंकार इत्यर्थः। स चाकृष्टौ जवारुणः, तेन **चोदिताः** प्रेरिताः सन्तः । कथं चोदिताः ? प्रथमाकृष्टि[3]प्रयोगवत् । हूंकारनिश्वासेनात्राकृष्टिरित्य**परे** । वीरोत्थितरश्मिशुण्डाभिरत्र तन्त्रे [4]सर्वाकृष्टिप्रयोगा इति **केचित्** ॥९॥

उत्तमां पिण्डाकृष्टिमाह—**आकारे**त्यादिना । **आकारश्चाक्षरं** च ताभ्यां **युक्ताः**, आकारेण हूंकारेण वा सम्यग् युक्ताः, साधका

१. 'एते.....ष्यन्ते' नास्ति–भो. । २. वीरा–भो. । ३. कृष्टिविधि–भो. । ४. आकृष्टि–भो. ।

खेकारसंयुतं रक्तं श्वेतं ध्यात्वा चतुर्मुखम् ।
कपालहस्तमात्मानं शुक्राकृष्टिश्च उत्तमा ॥११॥

चिकारेण समायुक्तं पीतवर्णं प्रभास्वरम् ।
ध्यात्वात्मानं हयमुखं मद्याकृष्टिश्च उत्तमा ॥१२॥

इत्यर्थः । त्रिभिः संयोगस्त्रिसंयोगः । **कायवाक्चित्तसंस्थितमिति** साध्यस्य काये कण्ठे हृदये चावस्थितमिति । किमुक्तं भवति—षण्णामन्यतमयोगं जवारुणं कृत्वा सम्पुटगर्भे आकारस्य शीर्षे हूंकारस्य वा बिन्दौ वीरं विन्यस्य यंकारजं वायुमण्डलारूढं साध्यं वीरारुणरश्मिरेखाद्वयमुखपाशाङ्कुशाभ्यां यथाक्रमं कण्ठे बद्ध्वा हृदि विद्ध्वा च द्रुतमन्तरिक्षेणाकृष्यमाणं चिन्तयेत् । क्षणादाकृष्टो भवति[1] ॥१०॥

खेकारेत्यादि । एतदुक्तं भवति—खेकारेण श्वेतं चतुर्मुखं कपाल[2]पाशहस्तमात्मानं रक्तचित्तं विभाव्य [3]खेकारशिरःस्थित-वीरोत्थितरश्मिनलिकया साध्यगुह्यप्रविष्टया तदीयं शुक्रमाकृष्य कपाले क्रियमाणं चिन्तयेत् । क्षणादाकृष्टं भवतीति ॥११॥

चिकारेत्यादि । ह्रस्वचिकारेण **पीतवर्णं**[4] पीतप्रभमात्मानं **हयमुखं ध्यात्वा** चिकारशिरःस्थितवीररश्मिशुण्डया [5]पात्रस्थं मद्यमाकृष्य भाजनं पूर्यमाणं चिन्तयेत् । क्षणात् पूरितं भवतीति ॥१२॥

---

१. इति दर्शितम्–भो. । २. 'पाश' नास्ति–भो. । ३. 'खेकार' नास्ति–भो. । ४. वस्त्रं–क. ख. । ५. पत्रस्थं–क. ख. ।

रकारेण समायुक्तं रक्तवर्णं महाद्युतिम् ।
चतुर्भुजं चतुर्मुखं जम्बुवक्त्रं च सुस्थितम् ॥१३॥

विभाव्य क्रुद्धमात्मानं रक्ताकृष्टिश्च उत्तमा ।
षडक्षरसमायुक्तं षड्भिः स्थानेषु संयुतम् ॥१४॥

सिद्ध्यन्ति वज्रयोगिन्यो योगश्च डाकिनीगणः ।
चक्षुर्द्वयं च कर्णौ च नासिका हृदयं तथा ॥१५॥

रकारेणेत्यादि । रेफेण **रक्तवर्णं चतुर्भुजं चतुर्मुखं जम्बुवक्त्रं महाद्युतिं क्रुद्धमात्मानं विभाव्य** रश्मिजलूकया[१] साध्यशरीराद् रुधिरमाकृष्यमाणं चिन्तयेत् पूर्ववदिति ॥१३–१३½॥

स्वदेवतायोगेषु षडङ्गन्यास एषामेव विद्याक्षराणाम् । अतः प्रस्तावात् तमप्याह—**षडित्यादिना** । अनन्तरोक्तानि षड् विद्याक्षराणि षड् वर्णाः, तैः **समायुक्तं** चिन्तयेदिति सम्बन्धः । स्वदेवतादेहमिति शेषः । [२]क्व समायुक्तमित्याह—**षड्भिः स्थानेष्विति** । षट्सु [३]प्रदेशेष्वित्यर्थः । एवं सति **वज्रयोगिन्यः सिद्ध्यन्ति**, नान्यथा । वज्रो हेरुकः, योगिन्यः पञ्चडाकिन्यः । **योगः** श्रीहेरुकः, तस्य **डाकिनी[गणः]** । संवरे ताभिरेव योगिनीभिः सह सुखवरे सति षट्[४]सुखस्थानेष्वित्युक्तम् । तान्येव स्थानान्याह— **चक्षुरित्यादिना** । मानसं **हृदयम्** । चकाराज्जिह्वा कायश्च ॥१४–१५॥

---

१. कया पद्मरूपवत् साध्य–भो. । २. कुतः–क. । ३. अङ्गेषु–भो. । ४. षट्सु स्था–ख., षट्स्था–भो. ।

सिंहविक्रीडितां मुद्रां योगिनो बन्धयन्ति हि ।
प्राणायामं सुयन्त्रित्वा ध्यात्वा ज्वलति तत्क्षणात् ॥१६॥

अकनिष्ठभुवनपर्यन्ते सप्तलोके चराचरे ।
सर्वे ततो भावयन्ति न च तं बुद्धयन्ति हि ॥१७॥

योगान्तरमाह—**सिंहे**त्यादि । सिंहो वीरः, तस्य **विक्रीडितं** यस्यां सा तथोक्ता । **मुद्रा**मिति रविसोमसम्पुटाम्, **बन्धयन्ती**ति बद्धां चिन्तयन्ति, तिसृभिरक्षरपङ्क्तिभिः पूर्ववत् (१.२६) । **योगिन** इति चतुर्देवीपरिवृतश्रीहेरुकयोगे स्थिताः । **प्राणायाम**मिति उच्छ्वास-निश्वासौ । **सुयन्त्रित्वे**ति सुष्ठु यन्त्रित्वा, क्रमेण सूक्ष्मीकृत्येत्यर्थः । **ध्यात्वे**ति । तत्रैव वीरे शशिविवरद्वारदृश्ये मनः समाधाय **ज्वलति तत्क्षणा**दिति ॥१६॥

वीरे स्थिरीकृतचित्तस्य धगिति ज्ञानं ज्वलति, अवभासं करोति । कियति दूरे ज्वलतीत्याह–[1]**सप्तलोक** इति । पातालं भूः स्वर्गः प्रथमं ध्यानं द्वितीयं तृतीयं चतुर्थमिति सप्त लोकाः, तेषां समाहारः सप्तलोकम्, [2]नपुंसकं त्रिभुवनवत् । त्रीणि ध्यानानि प्रत्येकं [3]त्रिभूमिकानि, चतुर्थमष्टभूमिकम् । तस्याष्टमी भूमिरकनिष्ठम् । तेनाह—**अकनिष्ठभुवनपर्यन्त** इति । तत्र चराः सत्त्वाः,[4]अचरा विमानभुवनादयः । तेनाह—**चराचर** इति । इदानीं तस्य वीरस्य सर्वसत्त्वैर्दृश्यतामदृश्यतां च दर्शयितुमाह[5]—**भावयन्ती**त्यादि । **सर्व** इति सर्वसत्त्वाः, **भावयन्ती**त्यभ्यस्यन्ति, स्वचित्तस्यैव तथा

---

१. अकनिष्ठेत्यादि–भो. । २. 'नपुं......नवत्' नास्ति–भो. । ३. नास्ति–भो. । ४. अचराधि–क. । ५. 'आह......इत्यादि' इत्यस्य स्थाने 'सर्वैरित्याद्याह' इति–भो. ।

यदि सर्वे बुद्धयन्ति जगत्क्रीडा विनश्यति ।
तस्माद् गुप्तमिदं ज्ञानमप्रकाश्यमनक्षरम् ॥१८॥

बुद्धयन्ति हि संबुद्धा योगनिद्रासमागताः ।
ध्यायन्त एकरूपाणि पिण्डं तद्गतमानसाः ॥१९॥

तथा दर्शनात् । **न च तं बुद्धयन्तीति** [1]तत्त्वादर्शनात्, अभूतैरेव रूपैस्तस्य बालेषु प्रख्यानात् ॥१७॥

जगत्क्रीडेति विश्वस्य क्रीडा तैस्तैराकारैर्द्वयकल्पना **विनश्यतीति** पूर्वमेव नष्टा स्यात् । न चाद्यापि नष्टा । यत एवं **तस्मात्** । **इदं** [2]ज्ञानमिति ज्ञानतत्त्वमद्वयं वीराख्यम्, **गुप्तमिति** बालेषु गोपितम् । केन (काभिः)? [3]अभूतरूपसन्दर्शिनीभिर्भ्रान्तिभिः । कीदृशम्[4] ? अवाग्गोचरत्वाद**प्रकाश्यम्** । मनोजल्पाविषयत्वा-**दनक्षरम्** ॥१८॥

के तर्ह्येनं परमार्थतः पश्यन्तीत्याह—[5]**बुद्धयन्तीत्यादि** । **हि**शब्दोऽवधारणे भिन्नक्रमश्च, [6]**संबुद्धा हीति** । तथागता एवेत्यर्थः । तथागतानामपि तद्दर्शनं यदि प्रकृतिसिद्धं स्यात्, तदाऽन्येषामगतिरेव स्यात् । अथ [7]योगाधीनम्, तदा तेनैव योगेनान्येऽपि तं पश्येयुरित्यत आह—**योगे**त्यादिना । एकान्तनिर्विक्षेपत्वेन निद्रासाधर्म्यान्निद्रेव निद्रा, योगश्चासौ निद्रा च **योगनिद्रा**, [8]तया **समागताः** संगताः सन्तः । तस्यैव निर्देशो [9]**ध्यायन्त** इत्यादि । **रूपाणीति** सर्वधर्मान्[10] । **एकेति** निराभासप्रकाशमात्रैकरसान् ।

---

१. नास्ति—क. ख. । २. ज्ञानं गुह्यमित्याह—भो. । ३. भूतरूपास—भो. । ४. तज्ज्ञानम्—भो. । ५. बुद्ध इत्याद्याह—भो. । ६. 'संबुद्धा हीति' नास्ति—भो. । ७. वज्रयोगा—भो. । ८. 'तया समागताः' नास्ति—भो. । ९. पिण्डमित्यादि—भो. । १०. धर्मस्वभावान्—भो. ।

भावयन्ति नवद्वारोद्भवान् बुद्धात्मकान् हि ते ।
भक्षयेन्निर्विकल्पेन निःस्वभावेन धीमता ॥२०॥

अङ्गुष्ठानामिकाद्वारे चिन्तामणिरवस्थितः ।
अमृतात्मकं संवृत्तं नित्यसिद्धिरवाप्यते ॥२१॥

॥ इति योगेश्वरीमहाविद्यायोगनिर्णयो नाम द्वितीयो निर्देशः ॥२॥

पिण्डमिति तान्येवात्यन्तपिण्डनात् सुसूक्ष्मीकरणात् पिण्डं बिन्दुमात्रं सर्षपसूक्ष्ममित्यर्थः । एतेन वीरस्य मुद्रारूपं प्रसाधितम् । **तद्गतमानसा** इति । तत्रैव पिण्डे स्थितचित्ताः । एतेन योगनिद्रार्थः सूचितः ॥१९॥

एवंविधानां [१]योगानां निष्पत्तिकारणं समयमाह[२]—**भावयन्तीत्यादिना** । भावयन्तीत्यधिमुञ्चेदित्यर्थः । कानधिमुञ्चेत् ? **नवद्वारोद्भवा** [३]येऽर्थास्तान् । कीदृशानधिमुञ्चेत् ? [४]**बुद्धात्मकान्** शाश्वताऽक्षोभ्यरत्नेशलोकेशामोघस्वभावामित्यर्थः । **भक्षयेत्** तानेव विकल्पभक्षणार्थम् । **निर्विकल्पेनेति** निःशङ्केन । **निःस्वभावेनेति** ग्राह्यग्राहकनिराभासेन । **धीमतेति** प्रकाशमात्रतानिष्ठेन, चेतसेति शेषः[५] ॥२०॥

अङ्गुष्ठेत्यादि । [६]**द्वारे चिन्तामणिरिति** । अङ्गुष्ठानामिकयोर्मुखे चिन्ता[७]मणिरवस्थित इत्यर्थः । ततस्तेनैव तान् भक्षयेदिति

---

१. योगनि–भो. । २. नवद्वारेत्यादि–भो. । ३. ये द्रव्या–भो. । ४. 'आह–आत्मेति'–भो. । ५. नास्ति–भो. । ६. 'द्वारे....रिति' नास्ति–क. ख. । ७. मणिभूतः–भो. ।

भावः । कदेत्याह—**अमृतेत्यादि** । यदा तत्सर्वममृतात्मकं **संवृत्तम्**, वक्ष्यमाणविधिनेत्यर्थः । ततः किं स्यादित्याह—**सिद्धिरित्यादि** ॥२१॥

योगेश्वरी महाविद्येति व्याख्यातम् (पृ. २४) । तस्या **योगो** रविसोमसम्पुटे बिन्दुयोगः, स येन प्रकारेण निरूप्यते—सिंहविक्रीडितमित्यादिना (२.१६), तस्य **निर्णयः**, तस्य **निर्देशः** कथनम् ।

॥ गुणवत्यां महामायातन्त्रटीकायां द्वितीयो निर्देशः ॥

तृतीयो निर्देशः

अथापरान् सम्प्रवक्ष्ये समयोत्तमसाधनान् ।
द्रव्यगणान् भक्ष्यमाणान् सर्वज्ञफलदायकान् ॥१॥

येन भक्षणमात्रेण सिद्ध्यन्ते गूढमातरः ।
दन्तिनो नुस्तुरङ्गस्य तथा गोः कुक्कुरस्य च ॥२॥

महापलसमायुक्तं पञ्चज्ञानामृतं तथा ।
अष्टमितश्चतुर्दर्शी यावदसह भाविताः ॥३॥

सप्तदिनानि जम्बूके स्थापिता अथ चोद्धृताः ।
तानि सिद्धार्थमाना वै गुलिकाः पञ्च कारयेत् ।
गोपितं चान्यतन्त्रेषु सम्यग् बुद्ध्वा महाफलम् ॥४॥

[1]**अपरानिति** अनन्तरोक्तेभ्यो [2]नवभ्योऽन्यान् । द्रव्याणि च तानि गणाश्च गणैकदेशत्वात् प्रत्येकमिति **द्रव्यगणाः**, [तान्] । [3]**सर्वज्ञे**ति सर्वज्ञत्वम्, तदेव फलम्, तद्दायकान् ॥१॥

येनेति येन द्रव्यगणेन । [4]**गूढमातरो** वज्रडाकिन्यः ॥२॥

महत्त्वेन समायुक्तं [5]महागुणेन भूषितं **महापलम्** । तथा-शब्दः समुच्चये । [6]**चतुर्दशी[मि]**त्यादि । अष्टमिह्रस्वो जम्बूकदीर्घश्चेह छान्दसः । **असहे**ति प्रत्येकम् । **भाविता** इति पञ्चामृतेन लिप्तशोषितानि कृत्वा, **सप्तदिनानि** ॥३–४॥

---

१. अथेत्यादि–ख. भो. । २. 'नवभ्यो' नास्ति–क. । ३. नास्ति–भो. ।
४. भूतमा–भो. । ५. 'महा......षितम्' नास्ति–क. ख. । ६. 'चतु....छान्दसः' नास्ति–भो. ।

यावत् तथा चाष्टमितश्चतुर्दशीं
जम्बूकमध्येऽसह सम्प्रयोज्य ।
शिवाङ्गमध्ये त्वथ भूतरात्रौ
स्थाप्यानि सिद्धार्थफलानि तानि ॥५॥

द्रव्याणि वै पञ्च तथा प्रमाणं
यथा मयैव त्विह तन्त्र उक्तम् ।
अन्येषु तन्त्रेषु च नोक्तसर्वं
संगोपितं बुद्ध्य महाफलानि ॥६॥

कृष्णाष्टमीमारभ्य यावत्कृष्णचतुर्दशीमिति । एवं कृते पश्चात् **संप्रयोज्येति** [१]एकीकृत्य । **भूतरात्रौ शिवाङ्गमध्ये स्थाप्यानीति** स्थापनीयानि **तानीति** । तथा भावितस्थापितानि द्रव्याणि **सिद्धार्थफलानीति** सर्षपप्रमाणानि ॥५॥

कानि [२]पुनस्तानि द्रव्याणीत्याह—**पञ्चेति** । पञ्चपललानीत्यर्थः[३] । [४]**तथा प्रमाणमिति** । उपलक्षणत्वात् तथाविधानं च । **इह तन्त्रे उक्तमिति** साकल्येनोक्तम् । अत एवाह—**अन्येषु तन्त्रेषु चेत्यादि** । **नोक्तसर्वमिति** न सर्वमुक्तम् । ततः किमित्याह— **संगोपितमिति** । किं कृत्वा गोपितमित्याह—**बुद्ध्वा महाफलानीति** । महाफलानि तानि ज्ञात्वेत्यर्थः । कुतो महाफलानि ? पञ्चानां स्कन्धानां पञ्चज्ञानभावितानां शिवाङ्गस्थितानां [५]संपुटपात्रे स्थितानां वीरसारूप्यगमनात् ॥६॥

---

१. नास्ति–भो. । २. 'पुनस्तानि द्रव्याणि' नास्ति–भो. । ३. 'त्यर्थः' नास्ति–भो. । ४. 'तथा' नास्ति–भो. । ५. 'संपुट........तानां' नास्ति–क. ख. ।

अथात्र साधनं येन चित्तपद्मं विभावयेत् ।
चतुर्देवीसमायुक्तं रक्तवर्णसमप्रभम् ॥७॥

नीलोत्पलप्रभं पूर्वे बुद्धबिम्बोपशोभितम् ।
दक्षिणे पीतवर्णं च पश्चिमे तु सितप्रभम् ॥८॥

अथेत्यादि । अथेति अनन्तरम् । **अत्र** तन्त्रे यत् **साधनम्**[१] । **येन** [२]कर्मणा भगवान् समण्डलः साध्यते आराध्यते, तद्भवति तत्प्रभूयत इत्यर्थः । **विभावयेत् पद्ममिति** । निराभासबोधिचित्तभावनया गगनसमीकृते जगति वज्रमयीं भूमिं विचिन्त्य घोरश्मशानाष्टकमध्यस्थकूटागारान्तरालकमलमष्टदलं चतुर्दलं वा चिन्तयेत् । **रक्तवर्णसमप्रभमिति** रक्तं रक्तप्रभं च । मनसेति वीराख्येन सुविशुद्धमनोबिन्दुना [३]कर्णिकावस्थितेन स्फुरित्वा च चतुर्षु दिग्दलेषु स्थितेन संलक्षितम् । **चतुर्देवीसमायुक्तमिति** । पूर्वदलादिबिन्दुभ्यो यथाक्रमं वज्रमणिपद्मकर्मकुलेशानामुत्कुलानां च प्रत्येकमनन्तानां स्फुरणे सति तत्र संहारजनिताभिर्वज्ररत्न-पद्मविश्वडाकिनीभिस्तेष्वेव दलेष्वध्यासितम् ॥७॥

बुद्धबिम्बोपशोभितमिति । बुद्धो वज्रधरः, [४]तस्य बिम्बं मूर्तिः श्रीहेरुकः, तेन मण्डलनायकेनोपशोभितम् । ताभिरेव देवीभिर्वक्ष्यमाणगीतिसंचोदिताद् मूलमनोबिन्दो[५]र्बीजद्वयाकारपरिणतात् पञ्चकुलेश–उत्कूलस्फुरणव्याप्तासु दिक्षु तत्संहारोच्छ्वसित[६]-बीजद्वयपरिणामेन बुद्धडाकिनीपरि[७]रब्धेन [८]भगवता श्रीहेरुकेण[९] उपशोभितम् । तत्पुनर्बुद्धबिम्बं कीदृशमित्याह–**पूर्वेत्यादि** । **चतुर्वक्त्रमिति**[१०] चतुर्मुखम् । **चतुर्भुजं त्रिनेत्रमिति** सुगमम् ।

---

१. साधनोपायभूतम्–भो. । २. मार्गेण–भो. । ३. पद्मकर्णिका–भो. । ४. नास्ति–भो. । ५. 'बीज......णतात्' नास्ति–ख. । ६. तमन्यबी–ख. । ७. बद्धेन–भो. । ८. नास्ति–भो. । ९. योगात्–क. ख. । १०. 'चतुर्दिग्दर्शितम्' इत्यधिकः पाठः–भो. ।

उत्तरे रक्तवर्णं तु ज्वालामालाकुलं तथा ।
त्रिनेत्रं सुन्दरं ध्यायेच्चतुर्वक्त्रं चतुर्भुजम् ॥९॥

पूर्वे देवीं त्रिनेत्रीं वामे खट्वाङ्गघण्टे दक्षिणतस्तथा वज्रकपालहस्तामिति भावयेत् । दक्षिणे देवीहस्ते त्रिशूलं च रत्नं च पताका च जम्बुकश्च । पश्चिमेन देवीहस्ते धनुश्च बाणश्च विश्वपद्मं च कपालं च । उत्तरे देवीहस्ते खड्गश्च पाशश्च डमरुश्च कपालं च ॥१०॥

कस्मिन् मुखे किं वर्णमित्याह—पूर्वमुखे नीलोत्पलवर्णम्, दक्षिणमुखे पीतम्, पश्चिममुखे [१]सितम्, उत्तरमुखे [२]रक्तवर्णमित्यर्थः । यश्च मूले मुखे वर्णः, स एव देहे वर्ण इति प्रसिद्धमेतत् । **ज्वालामालाकुलमिति** । प्रलयानलसमानां ज्वालानां माला आकुला अस्येति तथोक्तम् ॥८-९॥

वाम इत्यादिना देवीनां चिह्नमाह—**वामे खट्वाङ्गघण्टे** अस्या इति वामखट्वाङ्गघण्टाम्, **दक्षिणतस्तथा वज्रकपाल-हस्तामिति**, वज्रं च कपालं च ते हस्तयोरस्या इति तथोक्ताम् । **पूर्व** इति पूर्वदले । **देवीमिति** । एतदुत्तरत्रापि सर्वत्र सम्बन्धनी-यम् । इह तावद् [३]वज्रडाकिनीम् । उत्तरत्र यथाक्रमं रत्नडाकिनीं पद्मडाकिनीं विश्वडाकिनीं च । **दक्षिण** इत्यादि । **त्रिशूलं च रत्नं च पताका च जम्बुकश्च** हस्ते यस्या इति तथोक्ताम् । [४]**पश्चिमेनेति** । [५]सप्तम्यर्थे तृतीया । **धनुश्च बाणश्च विश्वपद्मं च कपालं च**, तद्योगाद् [६]धनुर्बाणविश्वपद्मकपालिनीम् । [७]**खड्गेत्यादि** । **खड्गश्च पाशश्च डमरुश्च कपालं च**, तानि

---

१. सितरक्तं-भो. । २. श्याम-भो. । ३. श्रीवज्र-भो. । ४. पश्चिमेत्यादि-भो. । ५. 'सप्त..........तीया' नास्ति-भो. । ६. 'धनु........नीम्' नास्ति-भो. । ७. उत्तरेत्यादि-भो. ।

कायवाक्चित्तवज्रं तं तत्र मध्ये विचिन्तयेत् ।
कपालमथ खट्वाङ्गं धनुर्बाणधरं तथा ॥११॥

आदिमन्त्रेण संयुक्तं ध्यात्वा ज्वलति तत्क्षणात् ।
तथा योगी साधयते द्रव्यं सिद्धिफलप्रदम् ॥१२॥

हस्तेष्वस्या इति तथोक्ताम् । एता अपि ज्वालामालाकुलाश्चतुर्वक्त्राश्चतुर्भुजास्त्रिनेत्राः, प्रधानानुवर्तित्वाद् [१]गुणानाम् । अत एव भगवन्मुखानुसारेण पूर्वा नीलवर्णा, दक्षिणा पीता, पश्चिमा [२]सितवर्णा, उत्तरा श्यामा । मुखमप्यासां तथैव, किन्तु मूलमुखमासां देहवर्णम् । [३]देहवर्णस्य भगवन्मुखस्य स्थाने नीलमुखमासाम् ॥१०॥

भगवतः स्थानचिह्नान्याह—**काये**त्यादिना । **कायवाक्-चित्तवज्रः** श्रीहेरुकः, **तं विचिन्तयेत्** । **तत्रे**ति रक्तकमले । **मध्य** इति कर्णिकायाम् । **कपाल**मित्यादि । तस्य हस्तेष्विति शेषः । यथैव श्रीहेरुकस्तथैव बुद्धडाकिनी, किन्तु रक्तवर्णा रक्तमूलमुखा च । सा चास्य संमुखी भुजद्वयेन गाढमाश्लिष्टकन्धरा ॥११॥

समयं विना न सिद्धयः, ततः [४]समयप्रज्वालनमाख्यातुमाह—**आदी**त्यादि । आदिमन्त्रः प्रणवः, तेन **संयुक्तं** [५]समयद्रव्यं **ज्वलती**ति सम्बन्धः । **ध्यात्वे**ति यथोपदेशं ध्याते सति । **द्रव्य**मिति समयद्रव्यम् । **साधयत** इति निष्पादयति । कीदृशं निष्पादयति ? **सिद्धिफलप्रदम्** । उक्तं च **श्रीमति गुह्यसमाजे**—'ॐकारं सर्वमन्त्राणां ध्यात्वा ज्वलति तत्क्षणात्' (१६.३८) इति ॥१२॥

---

१. गणा–भो. । २. सितरक्त–भो. । ३. नास्ति–भो. । ४. समयमाख्यातु–भो. । ५. 'समय' नास्ति–भो. ।

योगाश्च सिद्धयोगाश्च सहसाऽऽस्था प्रवर्तते ।
अन्तर्धानाददृश्योऽसौ साहस्रैकावभासकः ॥१३॥

हरति सर्वसिद्धानां प्रभुङ्क्ते देवकन्यकाः ।
गङ्गावालुसमान् बुद्धान् सवज्रालयसंस्थितान् ॥१४॥

स्वहस्तस्थामलकवत् पश्यति वज्रचक्षुषा ।
गङ्गावालुसमान् क्षेत्रान् कायवाक्चित्तलक्षणम् ॥१५॥

भावयन्ति हि सर्वात्म स्थितं चित्ताख्यनाटकम् ।
तत्त्वानुत्तरसंसिद्धं बुद्धबोधिस्थितं शिवम् ॥१६॥

ज्वालनानुशंसामाह—[1]**योगा** इत्यादि । अत्र योगिन एव योगाः । योगिनो योगिन्यश्च सिद्धाः सन्तीति प्रत्ययो लोकस्य प्रवर्तते, प्रभावदृष्टान्तस्य ज्वालनस्य दर्शनादित्यर्थः । अन्तर्धानादिसिद्धेः प्रभावमाह—[2]**अन्तरित्यादिना** । **साहस्रैकावभासक** इति । चतुर्द्वीपकानां लोकधातूनां सहस्रं साहस्रो लोकधातुः, तस्यैकस्यावभासकः, आधिपत्येन परार्थक्रियया च ॥१३॥

सर्वसिद्धानामिति विद्याधरादीनाम्, कन्यामिति योज्यम् । वज्रालयस्तेषामेव बुद्धानां बुद्धक्षेत्रं संस्थितम्, तेषामेषा[3] पर्षत् । सह तासामिति **सवज्रालयसंस्थितान्** ॥१४॥

चक्षुर्वज्रं **वज्रचक्षुः**, दिव्यचक्षुरभिज्ञेत्यर्थः । [4]**स्वहस्ते-त्यादि** । स्वहस्ते स्थितमेकमामलकं यथेत्यर्थः[5] । [6]**कायवाक्-**

१. महायोगे–क. ख. । २. सर्वैरि–भो. । ३. मेष–ख. । ४. हस्त–ख. भो. । ५. 'क्षेत्रमिति बुद्धक्षेत्रम्, तत्रस्थानां सत्त्वानामित्यर्थः' इत्यधिकः पाठः–भो. । ६. कायेत्यादि–भो. ।

अत्र श्लोकः—

रूपाणि मुद्राणि च न्यासचिह्नं
द्रव्याणि ध्यानानि च भावनानि ।
नानाविधा उपायाश्च निर्दर्शितानि
उक्तानि देवीमनईप्सितानि ॥१७॥

चित्तलक्षणमिति । कायचित्तानि इन्द्रियज्ञानानि, वाक्चित्तानि मनोविज्ञानानि, सजल्पत्वात् । तेषां लक्षणं स्वरूपम्, **भावयन्तीति** मनसा पश्यन्ति । कथं पश्यन्ति ? **सर्वात्म,** [१]सर्वात्मनेत्यर्थः । किमेतदित्याह—**चित्तेत्यादि** । **चित्ताख्यमिति** वज्रचित्तम्, पर-चित्त[२]ज्ञानमित्यर्थः । [३]आत्मनः स्वदेवताकारेण भावनं **योगतन्त्रे** तदिह **नाटकम्,** नाटकसाधर्म्यात् । तस्मादुद्भवोऽस्येति । यथोक्तम्, समयद्रव्यसाधने [४]स्तोकमुक्तम् ।

[५]अयं.......

श्रावकप्रत्येकबुद्धानामपीदृशं शिवमस्ति, ततो विशिनष्टि—**तत्त्वेति** । सर्वप्रपञ्चरहितं ज्ञानमित्यर्थः । बोधिसत्त्वानामपीदृशं ज्ञानमस्ति, तत्तु बुद्धज्ञानेन सोत्तरम् । ततो विशेषणार्थमाह—**अनुत्तरमिति** । नास्मादुत्तरमस्तीत्यनुत्तरम् ॥१५–१६॥

अत्र श्लोक इति । यथोक्ते तन्त्रार्थे संग्रहश्लोकः ।

रूपाणीति देवतादीनां वर्णसंस्थानानि । **मुद्राणीति** मुद्रणानि । षडङ्गन्यासकुलिशाब्जशोधनादीनि, तस्यैव **चिह्नमिति**

---

१. सर्वभावात्मने–भो. । २. चित्ताभिज्ञान–भो । ३. इतः पूर्वं 'कथं पश्यन्ति ? सर्वात्मनः' इत्यधिकम्–भो. । ४. श्लोक–क. ख. । ५. अत्र केचन श्लोका अधिकाः, तेषां संस्कृतव्याख्या नोपलभ्यते, भोटानुवादस्तु वर्तते ।

तन्त्रं गृहे यस्य भवेत नित्यं
धारेत वाचेत विभावयेत ।
न तत्र रोगा न जरा न मृत्यु-
विघ्नानि देव्यः परिरक्षयन्ति ॥१८॥

इति महावज्रडाकिनीनां मतं महागुह्यं समाप्तं सोपचारम् ।

॥ इति तृतीयो निर्देशः ॥

॥ इति महामायातन्त्रं समाप्तम् ॥

कपालखट्वाङ्गादि । **द्रव्याणि** समयवस्तूनि । **ध्यानानीति** । 'ध्यै चिन्तायाम्', जपा इत्यर्थः । **भावनानि** मण्डलचक्रादिसमाधयः । **नानाविधा उपायाः** कर्मप्रसरहीनसिद्ध्यादयः । एतानि सर्वाणि **निदर्शितानि** सूचितानि । इयता सर्वेण किं कृतमित्याह–**देवीत्यादि** । देव्या महामायया यानि **मनईप्सितानि** हृदयेप्सितानि **तान्युक्तानि** ॥१७॥

[१]तन्त्रपरिग्रहेऽनुशंसामाह—[२]**तन्त्रमित्यादिना** श्लोकेन । **तन्त्रं** महामायाख्यम् । **गृहे यस्येति** यस्य गृहे । **भवेत नित्यमिति** नित्यं तिष्ठते । **धारेतेति** धारयेत । **वाचेतेति** वाचयेत, पठेदित्यर्थः । **विभावयेतेति** [३]विभावयेत् । **विघ्नानीति** विघ्नाः ॥१८॥

---

१. तत्र–क. ख. । २. तन्त्रं यस्य गृहे–भो. । ३. समाधीयेत्–भो. ।

महत्यश्च ता **वज्र**[1]**डाकिन्यश्च** तासाम्, **मतम्** उपरिगृहीतः सिद्धान्तः, समस्तं **योगिनीतन्त्रमित्यर्थः**, तस्य रहस्यं सारम् । किं तदित्याह—**महागुह्यमिति** । आदौ परमगुह्यमित्युक्तम्, अन्ते तदेव महागुह्यमिति पर्यायान्तरेणोक्तं महामायाख्यं तन्त्रमित्यर्थः[2] । तत् **समाप्तं** निष्ठितम् । **सोपचारमिति** । साध्यसाधनार्थो[3] विधि–[4] रुपचारः, सह तेन वर्तत इति सोपचारम्, न तेन शून्यमित्यर्थः ।

महामायातन्त्रे विवृत(ति)मिति कृत्वा गुणवती-
मवाप्तं यत्पुण्यं परिणतमृगाङ्कद्युति मया ।
जिनानामात्मैकः कुलिशधरभावो भवतु मे
ततोऽत्यन्तं दुःखक्षयमखिललोकं च लभताम्[5] ॥

इति गुणवत्यां महामायातन्त्रटीकायां तृतीयो निर्देशः ।

गुणवतीनाम महामायातन्त्रटीका

[6]**महापण्डितरत्नाकरशान्तिपादानां समाप्तेति ।**

*

---

१. योगिन्यः–भो. । २. 'इत्यर्थः' नास्ति–भो. । ३. नोपाय–भो. । ४. धिः सोपचा–भो. । ५ इतः परमपि श्लोक एको भोटानुवादेऽधिकः । ६ 'महा' नास्ति–क. ख. ।

परिशिष्टानि

१. महामायासाधनम्

२. महामायासाधनोपायिका कुक्कुरिपादानाम्

३. गद्य-पद्यानुक्रमणी

४. टीकाकारोद्धृतवचनानुक्रमणी

५. टीकाधृत-ग्रन्थग्रन्थकार-मतमतान्तर सूची

६. संकेत सूची

७. विशिष्टशब्दानुक्रमणी

यो नैको नाप्यनेकः स्वपरहितमहासम्पदाधारभूतो
नैवाभावो न भावः स्वमिव समरसो दुर्विभाव्यस्वभावः ।
निर्लेपं निर्विकारं शिवमसमसमं व्यापिनं निष्प्रपञ्चं
वन्दे प्रत्यात्मवेद्यं तमहमनुपमं धर्मकायं जिनानाम् ॥

(से० टी०, पृ० ५७)

[1]महामायासाधनम्

महामायाह्वयं देवं चतुर्मुखं चतुर्भुजम् ।
अङ्के यस्य तथा देवी चतस्रो दिक्षु चापराः ॥
महावज्रधरस्यैव कृपया भीषणाकृतेः ।
महामायाभिधानस्य साधनं साधु कथ्यते ॥

इह भावनाधिकृतो मन्त्री चतुर्देवीगीतिचोदनाविबुद्धः प्रातरुत्थाय स्वहृत्सूर्यस्थं हुँकाररश्मिभिरात्मानं विशोध्य कृतमुखशौचादिको हुं फडिति स्थानात्मयोगरक्षां कृत्वा ध्यानालयं प्रविश्य हुंकारेण अर्घ्यं परिजप्य सुखासनोपविष्टः पुरस्तादन्तरिक्षे भगवन्तं सपरिवारमालोक्य हृन्मन्त्रकिरणोद्भवैः पञ्चोपहारमेघैः सम्पूज्य पापदेशनादिकमिति कुर्यात्—देशयाम्यहमात्मनः पापम्, अनुमोदे सर्वपुण्यानि, सर्वबुद्धबोधिसत्त्वार्यपृथग्जनानां परिणामयामि सर्वमात्मनः कुशलमनुत्तरायां सम्यक्संबोधौ, आबोधेस्त्रीणि रत्नानि शरणं गच्छामि, बुद्धरत्नं धर्म्मरत्नं संघरत्नम्, अहो बताहमनुत्तरां सम्यक्सम्बोधिमधिगच्छेयं सर्वसत्त्वानामर्थाय हिताय यावदेतेषाम् अत्यन्तनिष्ठे निर्वाणे निरुत्तरे च तथागतज्ञाने प्रतिष्ठापनाय । तदनु चित्तमात्रमेवेदं सर्वमसत्येव तेन तेनाकारेण प्रख्याति । तद्यथा स्वप्न इत्यधिमुच्य सर्वाकारान् परित्यज्य निर्मलनभोनिभं निराभासमनन्तं प्रकाशमात्रं पश्येत्, ॐ शून्यताज्ञानवज्रस्वभावात्मकोऽहमिति चाधितिष्ठेत् । अनन्तरं पुरस्तादन्तरिक्षसूर्ये हुँकारेण विश्ववज्रं विचिन्त्य तद्दीप्तरश्मिस्फुरणैरधो वज्रमयीं भूमिं तिर्यग्वज्रप्राकारमुपरि

---

1. साधनमाला, भाग २, पृ० ४५८–४६५, गायकवाड ओरियन्टल सीरीज़ सं० 41

वज्रपञ्जरं मध्ये घोरश्मशानं विभाव्य तन्मध्ये कूटागारमेकपुटं सर्वरत्नमयं पश्येत्—

चतुरस्रं चतुर्द्वारं चतुस्तोरणभूषितम् ।
हाराद्यैरप्सरोभिश्च भास्वद्वेदीचतुष्टयम् ॥

तन्मध्ये रक्तकमलमष्टदलं ध्यात्वा तत्कर्णिकायामनादिनिधनं तारमुक्ताफलनिभं ज्ञानामृतबिन्दुं ध्यायात् ।

इत्ययमनादियोगो नाम प्रथमः समाधिः ।

मध्यबिन्दुत एव चतुरो बिन्दूनष्टदिग्दलेषु संस्फार्य बीजाकारपरिणतान् पश्येत्, यथाक्रमं हुं स्वा आ हाः । यथाक्रमं तेभ्यो वज्रमणिपद्मकर्मकुलेशान् तत्कुलानि च संस्फार्य पुनस्तेष्वेव संहृत्य तत्परिणताश्चतस्रो योगिनीः पश्येत् । पूर्वदले वज्रडाकिनीं नीलवर्णां नीलपीतसितहरितवदनां वज्रकपालघण्टाखट्वाङ्गधारिणीम्, दक्षिणदले रत्नडाकिनीं पीतवर्णां पीतनीलसितहरितवदनां रत्नच्छटा-त्रिशूलग्रीवानिपीडितजम्बूकपताकाधारिणीम्, पश्चिमदले पद्मडाकिनीं सितवर्णां सितपीतनीलहरितवदनां विश्वकमलशरकपालचापधराम्, उत्तरदले विश्वडाकिनीं हरितवर्णां हरितपीतसितनीलवदनाम् असिडमरुपाशकपालधराम् । चन्द्रासनप्रभाः सर्वाः । शेषमासां प्रभुमिव नाथमुत्थापयेयुस्ता वज्रगीतिकयाऽनया—

हले सहि विअसिअ कमलु पबोहिउ वज्जें ।
अललललहो महासुहेण आरोहिउ णच्चें ॥
रविकिरणेण पफुल्लिउ कमलु महासुहेण ।
अललललहो महासुहेण आरोहिउ णच्चें ॥

अथ गीतिकानुभावेन भगवान् बिन्दुरूपतां हित्वा बीजद्वयाकारेणाविर्भवति । ॐ हुँ । ततः ॐकाराद् वैरोचनं तत्कुलं च संस्फार्य संहरेत्, हुँकारात् पञ्चजिनान् तत्कुलानि च । ततः ॐकारोद्भवया बुद्धडाकिन्या सहैव भगवान् हेरुको हुँकारादुत्पद्यते ।

भस्मनोद्धूलितः कृष्णो ललितार्कासनप्रभः ।
कपिशोर्ध्वज्वलत्केशः कपालमकुटोत्कटः ॥
नीलपीतमहाश्वेतहरिताद्यचतुर्मुखः ।
कपालशरखट्वाङ्गचापधारिचतुर्भुजः ॥
पञ्चबुद्धविशुद्ध्या तु पञ्चमुद्राविभूषितः ।
चक्री कुण्डलकण्ठी च हस्ते रुचकमेखलाम् ॥
नरचर्माम्बरधरो द्वादशारुणलोचनः ।
ज्वालामालाकुलक्रोधः परमानन्दसुन्दरः ॥
अर्धपर्यङ्कनाट्यस्थो नवनाट्यरसैर्युतः ।
अन्तःकरणोद्गीर्णैश्च जनौघैर्जगदर्थकृत् ॥
प्रियतुल्यायुधा रक्ता तत्कण्ठाश्लेषिदोर्द्वया ।
श्रीबुद्धडाकिनी रक्तपीतश्वेतहरिन्मुखी ॥
बुद्धाभिषेका शबरी हेवज्रे गीयते यथा ।
तथेह बुद्धडाकिन्या हेरुकः संप्रपूज्यते ॥
बुद्धो रक्तोऽत्र सत्त्वानां बुद्धकायेन रञ्जनात् ।
शुद्धा धर्माः प्रकृत्येति वागीशस्यैव शुक्लता ॥

तदनु भगवतश्चक्षुरिन्द्रिये ॐकारं रक्तं श्रोत्रेन्द्रिये हुँकारं नीलं घ्राणेन्द्रिये चीकारं पीतं जिह्वेन्द्रिये आःकारं सितम् उष्णीषस्थाने रेफं हरितं मनसि खकारं सितं चिन्तयेत् । इति षडिन्द्रिये षडक्षरन्यासः ।

कवचम्—ॐ आः हुँ इति कायवाक्चित्ताधिष्ठानं यथाक्रमं शिरःकण्ठहृदयेषु । स्तनान्तरे सूर्ये स्वदेवताबीजं तज्ज्ञानस्वभावं दृष्ट्वा तत्किरणाङ्कुशैर्ज्ञानमण्डलमाकृष्य हुँकारेण विघ्नानुत्सार्य अर्घ्यं दत्त्वा जः हुँ वँ होः इत्याकृष्य प्रवेश्य बद्ध्वा वशीकृत्य तेन सहैकलोलीभूतं समयमण्डलं पश्येत् । ततो ज्ञानबीजरश्मिचोदित-तथागतप्रेषिताः पञ्चयोगिन्य आगत्य पञ्चज्ञानाम्बुपूर्णै रत्न-कलशैर्भगवन्तो योगिन्यश्चाभिषिञ्चेयुः । अभिषिच्यमानानां शिरसि स्वकुलेश उत्पद्यते । भगवतोऽक्षोभ्यः, बुद्धडाकिन्यादीनां यथाक्रमं शाश्वताक्षोभ्यरत्नेशवागीशामोघसिद्धयः । ततो ज्ञानबीजरश्मिमुख-स्फारिताभिः पञ्चोपहारपञ्चकामगुणपूजाभिर्भगवन्तं भगवतीं च पूजयेत् । ततो भगवन्तं देवीनां मुखैः स्तूयात्—

दंष्ट्रोत्कटमहाभीममुण्डस्रग्दामभूषितम् ।
भक्षमाणं महामांसं श्रीहेरुकं नमाम्यहम् ॥ इति ।

ततो दिग्देव्यः स्फुरणयोगेन बुद्धडाकिन्यामन्तर्भवेयुः । ततोऽस्याः शिरसि हृदि नाभौ गुह्ये ऊर्वोश्च यथाक्रमं ॐ हुँ स्वा आ हा इत्येतान् विभाव्य तैरन्योन्यावधिस्फुरद्भिरस्याः शरीरमभिव्याप्य तया ह्रीःकारजरक्तकमलया अकारजमुक्ताकर्णिकया तद्वद् हुँकारजकुलिश ॐकारजमणिः प्रारभेत रतिमनुरागं यामीत्यनेन मन्त्रेण । ततो मणिद्वयरश्मिचोदितास्तथागता आगत्य मुखे प्रविश्य विलीय कमलदले पतेयुः । तत् पञ्चज्ञानामृतं जिह्वाग्रललितेन गृह्यमाणं चिन्तयेदिति ।

श्रीमण्डलराजाग्रीनाम द्वितीयः समाधिः ।

ततो भगवच्चोदिता बुद्धडाकिन्यादयः पञ्चभगवत्काय-मेघस्फुरणैः सत्त्वानामर्थं यथाक्रमम् आदर्शज्ञानं सुविशुद्धधर्मधातुज्ञानं समताज्ञानं प्रत्यवेक्षणाज्ञानं कृत्यानुष्ठानज्ञानं महावज्रधरपदं चोत्पाद्य स्वकायमेघान् मूलकाये संहरेयुरिति ।

कर्मराजाग्रीनाम तृतीयः समाधिः ।

यदि पुनर्योगी चित्तं स्थिरीकर्तुमिच्छेत्, सर्वसमाधीनामग्र-निष्पत्तये, तदा समासतः समाधित्रयं विभाव्य नाभिकमलकर्णिकायां रविसोमसम्पुटप्रान्तेषु निःसन्धि ध्यात्वा तन्मध्ये सर्षपसूक्ष्मसित-स्वच्छज्ञानं बिन्दुरूपं महासुखमयं वीरं विचिन्त्य तद्रश्मिरेखां मृणालतन्तुनिभां चन्द्रमध्येन निर्गत्य सम्पुटं तिर्य्यक् त्रिभिर्वेष्टैः संयम्य स्थितां दृष्ट्वा चन्द्रोपरि स्थितेषु त्रिषु वेष्टार्धेषु ग्रथितान् प्रत्येकं षोडश वर्णान् पश्येत् । उक्तं हि संवरोत्तरे—

ककारादिदकारान्तं ङञवर्जं निवेशयेत् ।
धकारादिहकारान्तम् आलिद्वयं समालिखेत् ।
मध्यस्थेनं त्वकारालिर्न्यस्तव्यः शशिमण्डले ॥ इति ।

इहाप्युक्तम्—"दिव्यमक्षरपङ्क्तिभिः" (१.२६) इति । एवं नाभिमध्ये कमलकर्णिकारविसोमसंपुटगर्भे वीरं भावयन् भावना-परिपाकमधिमुच्य तस्मादेव द्वितीयसूक्ष्मरेखाज्वलितैकज्वालावदव-स्थितां पश्येत् । तस्याः प्रभावे(ण) स्रवदमृतपूरप्लावितो वीरः सा च रश्मिरेखा सितीभवेत् । ततो वीरे नियमितचित्तस्तं पश्येत्, यावत् चेतसः स्थैर्यलाभं निमित्तैरुपलक्षयेत् । उपलक्षिते स्थैर्ये तस्या रश्मिरेखायाः स्फुटमालोकमनन्तं विश्वमवभासयन्तं विचिन्त्य सर्वं करतलामलकवत् पश्येत्, सर्वसमाधींश्चाशु निष्पादयेत् ।

इति बिन्दुयोगः ।

जप्तविद्यस्य सिद्धिरिति जप उच्यते । तथैव षड्देवताचक्रं योगी नाभिकमलकर्णिकावस्थितरविसोमसम्पुटगर्भे चिरं विचिन्त्य तथैव च तद्रश्मिरेखया वर्णावलीत्रयग्रथितया वेष्टत्रयसंयुते मन्त्रं जपेत् । इह तन्त्रे अ(त्र्य)क्षरा मन्त्राः । तत्र भगवतो मन्त्रः, ॐ हुँ हुँ । बुद्धडाकिन्यादीनां यथाक्रमम्– ॐ ॐ हुँ, ॐ हुँ हुँ, ॐ स्वा हुँ, ॐ आ हुँ, ॐ हा हुँ । कथं जपेत् ? संपुटगर्भे जप्यं बीजाक्षरं विन्यस्य तच्छीर्षे वीरमुत्थाप्य ॐकारमुच्चारयन् वी(वि)राट्-रश्मिरेखामुच्छ्वासवायुना सहोत्थाप्य तयावभास्य जगद् बुद्धमयं कुर्यात् । बीजाक्षरमुच्चारयन् तेषु सर्वबुद्धेषु स्वदेवतास्वभावतामधि-मुञ्चेत् । अन्त[ः] हुँकारं उच्चारयन् निश्वासवायुना समाकृष्य तद्बुद्धमयं जगद् वीरे संहरेत् । एवं पुनः पुनः कुर्यात्, यावत् खेदो न भवति । सति खेदे विश्रम्य सर्वमिदं कुशलमनुत्तरायै सम्यक्सम्बोधयेऽभिमतफलसिद्धये च परिणमय्य पूर्ववत् पूजां कृत्वा स्वहृद्बीजाक्षरे मण्डलमन्तर्भाव्य, तत उत्थाय स्वदेवतात्मकमात्मान-मधिमुच्य सर्वं कुर्वीत । सर्वं च भोज्यं पञ्चभिर्बीजैः पञ्चज्ञानामृतमयं कृत्वा स्वहृदये च देवताचक्रमधिमुच्य विचिन्त्य च तज्जिह्वासु तदमृतं जुहुयात् । स्नानं कुर्वन् देवताभिषेकविधिं ध्यायात् ।

मध्याह्नसायाह्नसन्ध्ययोस्तु मण्डलगृहं प्रविश्य स्वहृद्बीजरश्मिभि-राधारमण्डलं निर्माय [तस्मा]देव बीजाच्चतस्रो योगिनीः क्रमेण संस्फार्य यथास्थानं निवेश्य पूर्ववदभिषेकादिकं सर्वविधिमनुष्ठाय मण्डलमन्तर्भाव्य तत उत्थाय पूर्ववत् समाहितयोगं कुर्यात् ।

अर्धरात्रसन्ध्यायां त्वयं विशेषः— संपूज्यार्घ्यं दत्त्वा ॐ वज्र मुरिति ज्ञानमण्डलमुत्सृज्य स्वज्ञानबीजे समयमण्डलमन्तर्भाव्य, निराभासं सम्बोधिचित्तमधिमुच्य सुप्यात् । एवं दिनान्तरेष्वपि देवीसङ्गीतिचोदनोत्थापितः सर्वं पूर्ववत् कुर्यात् । एवं प्रत्यहं यावत् सिद्धिनिमित्तानि लभते । तत्र मण्डलेश्वरस्य मन्त्रो लक्षजापेन सिद्ध्यति, शेषाणामयुतजापेन । मालामन्त्राश्च तन्त्रान्तरादानेतव्याः । तान् स्वहृत्सूर्ये हृच्चन्द्रे वा यथायोगं मण्डलीकृत्य प्रदीपमालावज्ज्वलतश्चेतसाऽभिलिख्य मनसा वाचयन्निव जपेदिति ।

ब्रुवतैवं महामायासाधनं यन्मयार्जितम् ।
कुशलं तेन बुद्धः स्यां वशी विश्वार्थसाधने ॥

॥ महामायासाधनं समाप्तम् ॥

—

[1]महामायासाधनोपायिका

कुक्कुरीपादानाम्

नमो वज्रडाकाय ।

प्रथमं मुखशौचादिकं कृत्वा मृदुविष्टरोपविष्टः स्वहृदि सूर्यमण्डले हुंकारबीजं दृष्ट्वा पुरतः करुणाचलवज्रं वक्ष्यमाणक-वर्णभुजायुधं विचिन्त्य पूजापापदेशनापुण्यानुमोदनापुण्यपरिणामना-त्रिशरणगमनादिप्रणिधिं च कृत्वा स्वकायवाक्चित्ते नामाक्षरं भावयेत् । तच्च नामाक्षरम्— हे इति हेत्वपगताः सर्वधर्माः, ह इति हान्युत्पादिताः सर्वधर्माः, ए इति पर्येषणविमुक्ताः सर्वधर्माः, रु इति प्रतिश्रुत्कोपमाः सर्वधर्माः, र इति रतिसमायुक्ताः सर्वधर्माः, उ इति उत्पादव्ययधर्मिणः सर्वधर्माः, क इति सर्वसौख्यसमायुक्ताः सर्वधर्माः, अ इति अकारो मुखं सर्वधर्माणामाद्यनुत्पन्नत्वात् । इति कृत्वा शून्यतां विभाव्य मन्त्रमुच्चारयेत्— ॐ शून्यताज्ञानवज्रस्वभावा-त्मकोऽहम् । हुँकारेण विघ्नमुत्सार्य वज्रपञ्जरं विभाव्य श्मशानाष्टकमध्ये रक्तचतुर्दलकमलपद्मवरटकसूर्यमण्डले हुँकारबीजं दृष्ट्वा मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षास्वभावात्मिकाश्चतुर्देव्यः सञ्चोदयन्ति श्रीवज्रगीत्या अभ्यन्तरसाधने—

हले सहि विअसिअ कमलु पबोहिउ वज्जें ।
अलललललहो महासुहेण आरोहिउ नृत्यें ॥
रविकिरणेण पफुल्लिअ कमलु महासुहेण ।
अलललललहो महासुणेह आरोहिउ नृत्यें ॥
[वज्रडाकिनीनृत्येन वज्रसत्त्वं निवेशयेत् ॥]

---

1. साधनमाला, भाग २, पृ० ४६६–४६८, गायकवाड ओरियन्टल सीरीज़, सं० 41

इति गीतिसमनन्तरं मायाबद्धवस्तुसंवित्त्या मनसा हुँकारोद्भूतं करुणाचलवज्रं नीलपीतसितश्यामचतुर्मुखं चतुर्भुजं दक्षिणे भुजे कपालशरधरं वामे खट्वाङ्गधनुर्धरं रौद्रासनस्थं त्रिनेत्रं सार्द्रमुण्ड-स्रग्दाममालिनं कपालमालाभिः शिरसि भूषितम् अस्थ्यलङ्कारविभूषितम् ईषद्दंष्ट्राकरालवदनं पिङ्गलोर्ध्वकेशम् काये चीकारं पीतं चक्षुषोः ॐकारं सितं श्रोत्रयोः हुँकारं रक्तं नासिकायां खकारं सितं कण्ठे आःकारं सितं हृदये रेफं रक्तं षड़ङ्गन्यासलक्षितं स्वाभप्रज्ञालिङ्गितं व्योमावकाशिनं वज्रधराविशे(भिषे)किनं कायवाक्चित्ताधिष्ठितं सुविशुद्ध धर्मधातुज्ञानस्वभावमात्मानं विभाव्य तत्र पूर्वदले वज्रडाकिनी नीलवर्णा नीलपीतरक्तश्यामचतुर्मुखा चतुर्भुजा वामभुजे खट्वाङ्गघण्टां दक्षिणे वज्रकपालहस्ता पृथिवीधात्वादर्शज्ञानस्वभावा, दक्षिणदले रत्नडाकिनी पीतवर्णा पीतनीलरक्तश्यामचतुर्मुखा चतुर्भुजा वामभुजे पताकां कञ्चुकं च दक्षिणे त्रिशूलरत्नहस्ता अब्धातुसमताज्ञानस्वभावा, पश्चिमदले पद्मडाकिनी सितारुणवर्णा रक्तपीतनीलश्यामचतुर्मुखा चतुर्भुजा वामभुजे धनुः कपालं दक्षिणे शरविश्वपद्महस्ता तेजोधातु-प्रत्यवेक्षणाज्ञानस्वभावा, उत्तरदले विश्वडाकिनी श्यामवर्णा श्यामपीत-रक्तनीलचतुर्मुखा चतुर्भुजा वामभुजे पाशकपालं दक्षिणे खट्वाङ्ग-डमरुहस्ता वायुधातुकृत्यानुष्ठानस्वभावा । देव्यः सर्वा रौद्रासनस्थाः कपालमालाभिः शिरसि विभूषिताः सार्द्रमुण्डस्रग्दाममालिन्यस्त्रिनेत्रा ईषद्दंष्ट्राकरालवदना ज्वलितोर्ध्वपिङ्गलकेशाः स्फुरद्रश्मिमालिन्यः । एवं चतुर्देवीसमावृतमात्मानं करुणाचलवज्रं ध्यात्वा शिरसि हृदि नाभौ गुह्ये वायुमाहेन्द्रवरुणाग्निमण्डलेषु यथोपदेशं विभाव्य नपुंसकजापं कुर्याद् मन्त्री । खिन्ने सति मन्त्रजापं कृत्वा ॐ आः ह्रीं हुं फट् एवं भवसमसर्वभावस्वभावमन्त्रसंस्थानधर्मात्मा योगी सर्वविषयादि-कृत्यं कुर्यात् प्राकृतकल्पमुक्तये इति ।

॥ महामायासाधनोपायिका समाप्ता ॥

कृतिरियं कुक्कुरिपादानामिति ।

पुनरुद्धृत–महामायातन्त्र

गद्य-पद्यानुक्रमणी

*

टीकाकारोधृतवचनानुक्रमणी

टीकाधृत–ग्रन्थग्रन्थकार–मतमतान्तर सूची

सङ्केत सूची

अ. प्र. धा.	अविकल्पप्रवेशा धारणी
गु. स.	गुह्यसमाज
द. भू.	दशभूमिकशास्त्र
धा. पा.	धातु पाठः
ल. सू.	लङ्कावतारसूत्र
व. त.	वज्रामृततन्त्र
सं. त.	संवरोत्तरतन्त्र

*

विशिष्टशब्दानुक्रमणी

*

དཔལ་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་དང་དེའི་འགྲེལ་པ་

རིན་ཆེན་འབྱུང་གནས་ཞི་བས་མཛད་པའི་

ཡོན་ཏན་ལྡན་པ་དང་བཅས་པ།

[भोटखण्ड]

དཔལ་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ།

ངེས་པར་བསྟན་པ་དང་པོ།

༄༅། །རྒྱ་གར་སྐད་དུ། ཤྲཱི[1]མཧཱམཱཡཱཏནྟྲརཱཛ[2]ནཱམ། བོད་སྐད་དུ་དཔལ་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་[3]ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ། དཔལ་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

དཔལ་ལྡན་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ། །
མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་འཁོར་ལོ་[4]བསྐྱར། །
ཡེ་ཤེས་ལུ་དང་སྐུ་གསུམ་ཉིད། །
འགྲོ་བ་སྐྱོབ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། ༡།

དཔལ་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་འགྲེལ་པ་ ཡོན་ཏན་ལྡན་པ།

༄༅། །རྒྱ་གར་སྐད་དུ། གུཎཝཏཱིཤྲཱིམཧཱམཱཡཱཊཱིཀཱ བོད་སྐད་དུ། དཔལ་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་འགྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྡན་པ། དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།[5] །དཔལ་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །བཅོམ་ལྡན་

---

1. སྣར་o ཤྲཱི་ མེད།
2. སྣར་o (རཱཛ) མེད།
3. སྡེ་o སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་པོ་
4. ཅོ་o འཁོར་ལོས་
5. རྒྱ་དཔེར་o དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མེད།

ཇི་སྙེད་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ། ।
ཀུན་ཏུ་རྟོག་པའི་འཆིང་གཅོད་ཅིང་། ।
འཇིག་རྟེན་བྱ་བར་རབ་འཇུག་པ། ।
དེ་སྙེད་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། ३।

འདས་འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱུག་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།[1] ।
གང་གིས་ཡོན་ཏན་[2]རྣམས་ཀྱི་དོན་ཕྱིར་རིགས་རྣམས་དང་། ।
ལྷ་མོ་རྣམས་དང་རིགས་ཀྱི་གཙོ་བོའི་སྐུར་མཛད་ཅིང་། ।
སྐུ་ཡི་མཚན་མ་རྫོགས་འགྲོ་དེ་ཉིད་གཅིག་པུ་ཡི། ।
རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ་ཞི་བའི་དོན་དུ་ངེས་བསྟེན་བྱ། ।
གང་ཞིག་ཚིག་ཚོར་རབ་ཏུ་མང་པོ་[3]དཔལ་ལྡན་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་[4]རྒྱུད། ।
མདོ་དོན་མ་ལུས་ཡོངས་སུ་ཤེས་པའི་སྐྱེ་བོ་དེང་སང་འགའ་ཙམ་སྲིད། །
དེ་བས་བློས་ལྡན་གསལ་ཞིང་དག་པའི་སྐྱེ་བོ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་ཡི་[5]ནི། ।
ཚིག་དོན་སོ་སོར་ཤེས་པ་རྙེད་པར་[6]བྱ་ཕྱིར་བདག་གིས་འགྲེལ་པ་འདི། ।

---

1 རྒྱ་དཔེར° (ཤྲཱིབྷཱུཏཌཱམརཱཡ) དཔལ་འབྱུང་པོ་འདུལ་བྱེད་ལ་
2 རྒྱ་དཔེར° (ཛགདརྠ) འགྲོ་བའི་དོན་ཕྱིར་ གསེར° འགྲོ་བ་
3 སྡེ° མང་མོ་
4 གསེར° ཆེན་མོ་
5 གསེར° ཡིས་
6 གསེར° རྙེས་པར་

དེ་ནས་དེ་ལས་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་གསང་བའི་དབང་ཕྱུག་མ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གསང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱུད་བཤད་པར་བྱ་སྟེ། ༣ །

སྐྱེ་བོ་འདོད་པ་ཐ་དད་རྣམས་ལ་གཟིགས་ནས་ནི། །
བདེ་བར་གཤེགས་པས་བྱང་ཆུབ་ལམ་ནི་སྣ་ཚོགས་གསུངས། །
འདོད་ལྡན་མང་དུ་རང་ཉིད་འཇུག་པ་སྤྲོད་པས་ན། །
རྣམ་འགྲེལ་ཡོན་ཏན་ལྡན་འདི་བྱ་བར་འོས་པ་ཡིན། །

དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་[1]སོགས་པ་ལ། རྒྱུད་འདི་ནི་རང་གི་རྒྱུད་མ་ཡིན་ནོ། །འོ་ན་ཅི་ཞེ་ན། རྒྱུད་གཞན་དང་འབྲེལ་བ་[2]སྟེ། དེ་བས་ན་དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བའི་[3]དོན་རྒྱུད་འདི་རྒྱུད་ཕྱི་མ་ལ་ལྟོས་པའི་རྗེས་ཐོགས་ཡིན་པར་གསལ་བར་བྱེད་དོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འདིའི་དང་པོར་འདི་སྐད་བདག་གིས་ཐོས་པ་ལ་སོགས་གླེང་གཞིའི་ཚིག་ཕྲད་སྦྱར་བར་མ་མཛད་དེ། ཕྱི་མ་ཉིད་ལ་སྦྱར་བའི་ཕྱིར། དཔེར་ན་དཔལ་རྡོ་རྗེ་རྩེ་མོ་ལ་སོགས་པའི་རྒྱུད་བཞིན་ནོ། །དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲས་གང་གི་ཕྱིར་མདོར་བསྡུས་པ་ལ་དགའ་བ་རྣམས་འདི་ཉིད་ཀྱིས་མྱུར་དུ་བྱང་ཆུབ་བསྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་ཏེ། དེ་ནས་རབ་ཏུ་བཤད་པར་བྱ། །ཞེས་བྱ་བ་དང་སྦྱར་ཏེ། རབ་ཏུ་རྣམ་པར་ཕྱེ་སྟེ་བཤད་པ་ནི་རབ་ཏུ་བཤད་པར་བྱ་བའོ།[4] །རྒྱུད་

---

1 གསེར་༠ ཤེས་བྱ་བ་ སྡེ་བསྟན་ནང་ཡོད་པའི་ཞེས་བྱ་བ་ཞེས་པའི་ཚིག་རྣམས་ཀྱི་སར་གསེར་
ཕྲིས་ནང་ཤེས་བྱ་བ་ཞེས་འདུག་པས་གཤམ་དུའང་དེ་ལྟར་ཡིན་པར་ཆུབ་པར་མཛོད།

2 སྡེ་༠ འགྲེལ་པ་

3 རྒྱ་དཔེར་༠ (ཤཱསྟྲ) ཚིག་དོན་

4 གསེར་༠ བྱའོ།

ཅེས་བྱ་བ་ནི་རབ་ཏུ་རྒྱས་པ་[1]སྟེ། རྒྱུའི་རྒྱུད་དང་། འབྲས་བུའི་རྒྱུད་དང་། ཐབས་ཀྱི་རྒྱུད་དེ་རྣམ་པ་གསུམ་མོ། །

དེ་ལ་རང་བཞིན་གྱིས་འོད་གསལ་བ་ཐོག་མ་དང་ཐ་མ་མེད་པའི་[2]བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དེ་ནི་རྒྱུ་[3]དེ་ས་བོན་ནོ། །དེ་གང་གི་ས་བོན་ཞེ་ན། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྟེ། ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱིའོ། །དེ་ཉིད་[4]ནི་བླ་ན་མེད་པའི་འབྲས་བུ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་འབྲས་བུའོ། །དེ་ཡང་རང་བཞིན་གྱིས་[5]འོད་གསལ་བའི་སེམས་གློ་བུར་གྱི་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་ཟད་པས་རྣམ་པར་དག་པའི་མཚན་ཉིད་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་ཆོས་སྐུ་སྟེ། ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པ་དང་། སྤྲུལ་པའི་སྐུས་བསྡུས་པའི་ཡོན་ཏན་[6]མཐའ་ཡས་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་རྟེན་དུ་འགྱུར་[7]བ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ།[8] །དེ་ཉིད་ནི་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་སྟེ། རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ་ཆེན་པོའི་གོ་འཕང་ངོ་། །རྒྱུ་དེ་ལས་[9]དེའི་འབྲས་བུ་རྫོགས་པར་བྱེད་པ་ནི་ཐབས་[10]ཏེ། དེ་ཡང་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་ཐེག་པ་ཆེན་

---

1. གསེར༷ པ་ མེད།
2 རྒྱ་དཔེར༷ (ཙིཏྟ) སེམས་
3 བོད་དཔེ་རྣམས་སུ་རྒྱུད་ཅེས་བྱུང་ཡང་རྒྱ་དཔེར་རྒྱུ་ཞེས་གསལ་བ་ལེགས།
4 རྒྱ་དཔེར༷ དེ་ཉིད་ མེད།
5 གསེར༷ གྱི་
6 རྒྱ་དཔེར༷ ཡོན་ཏན་ མེད།
7 གསེར༷ གྱུར་
8 གསེར༷ ཏེ།
9 གསེར༷ རྒྱུད་དེ་ལས་
10 རྒྱ་དཔེར༷ (སཱདྷནོཔཱཡ) སྒྲུབ་པའི་ཐབས་

པོ་[1]ལ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱིས་བསྐལ་པ་གྲངས་མེད་པ་གསུམ་དུ་སྒྲུབ་པའི་ལམ་འཁོར་དང་བཅས་པའོ། །གསང་སྔགས་ཀྱི་ཐེག་པ་ལ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ལམ་ནི་ཤིན་ཏུ་རྒྱ་ཆེན་པོ་དེ་ཉིད་མདོར་བསྡུས་པའི་རང་བཞིན་ཤིན་ཏུ་མྱུར་བ་དང་། ཤིན་ཏུ་བདེ་བར་བྱང་ཆུབ་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་[2]ལོ་ལ་སོགས་པའི་[3]ལམ་འཁོར་དང་བཅས་པའོ། །རྒྱུ་དང་། འབྲས་བུ་དང་། ཐབས་དེ་དག་གི་དབང་དུ་བྱས་ནས་གང་བསྟན་པ་དེ་དག་ནི་རྒྱས་པ་སྟེ། གོ་རིམ་[4]བཞིན་དུ་རྒྱུའི་རྒྱུད་དང་། འབྲས་བུའི་རྒྱུད་དང་། ཐབས་ཀྱི་རྒྱུད་དེ། རྒྱུད་རྣམ་པ་གསུམ་པོ་འདི་དག་རབ་ཏུ་བཤད་པར་བྱའོ། །

འོ་ན་རྒྱུད་དེའི་མིང་ཅི་ཞེ་ན། མཆོག་ཏུ་གསང་བ་ཞེས་[5]པའི་སྒྲ་ནི་ཟད་པར་མི་འགྱུར་བ་དང་། གྲགས་པ་ལ་འཇུག་པ་སྟེ། མཆོག་ཏུ་གསང་བ་ཞེས་[6]བྱ་བའི་མིང་ཅན་དུ་གྲགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །གང་རྣམས་ཀྱིས་[7]མཆོག་ཏུ་གསང་བ་ཡིན་ཞེ་ན། རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ཀྱིས། །ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། འདི་ནི་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་མ་ལུས་པ་རྣམས་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གསང་བའི་རྒྱུད་

---

1 རྒྱ་དཔེར་。 ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ མེད།

2 གསེར་。 དཀྱིལ་གྱི་འཁོས་ལོ་

3 རྒྱ་དཔེར་。 (ཨཱཀཱར) རྣམ་པའི་ཞེས་པའམ་འབྱུང་གནས་

4 ཅོ་。 གོ་རིགས་

5 གསེར་。 ཅེས་

6 གསེར་。 ཅེས་

7 གསེར་。 ཀྱི་

ཅེས་བྱ་བའི་[1]བར་དུ་མཆོད་པའི་དོན་དང་སྦྱར་བར་བྱའོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་ཞེས་བྱ་བ་ལ། དེ་ནི་ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བ་སྟེ། ཨེ་ཨར་བྱས་ནས་ཊཱ་[2]གསུམ་པའི་དོན་དུ་སྦྱར་བས་ཊཱས་[3]ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །ཨག་ཨག་ནི་གྱ་གྱུར་འགྲོ་བའོ། །འདིར་ཐམས་ཅད་དུ་འགྲོ་བ་ནི་གྱ་གྱུར་འགྲོ་བའོ།། ཊཱས་གྱ་གྱུར་འགྲོ་བའི་ངང་ཚུལ་གང་རྣམས་ལ་ཡོད་པ་དེ་དག་ནི་ནམ་མཁའ་ལ་འགྲོ་བ་རྣམས་ཏེ། རྫུ་འཕྲུལ་གྱིས་བྱེ་བ་ཕྲག་བརྒྱ་སྟོང་གི་སྐུས་ཅིག་ཅར་ཐམས་ཅད་དུ་འགྲོ་བ་མི་རྣམས་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་སྐད་དུ་ཡང་།

དེ་ནི་ནམ་མཁར་འགྲོ་མ་ཞེས། །
ཁམས་ལས་འདིར་ནི་རྣམ་པར་བརྟག །
ནམ་མཁའ་ཀུན་དུ་རྒྱུ་གྲུབ་པས། །
མཁའ་འགྲོ་མ་ཞེས་བརྗོད་བརྟགས་སོ།[4] །

ཞེས་གསུངས་སོ། །

རྡོ་རྗེའི་སྒྲ་སྒྲོགས་པ་ནི་ཕྱི་རོལ་གྱི་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམ་པར་བཅད་པའི་དོན་ཏོ།། རྡོ་རྗེ་ཡང་ཡིན་ལ་མཁའ་འགྲོ་མ་ཡང་ཡིན་པས་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ཏེ། སྤྲོས་པ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ལས་བྱུང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་རྣམས་ཇི་ལྟ་བུ་ཞིག་ཡིན་ཞེ་ན། གསང་བའི་དབང་ཕྱུག་མ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། འདིར་རིགས་

---

1 རྒྱ་དཔེར༌ (པཱུརྦཔདལོཔསྟུཔུརམཎཱུཏྠཾ ནཱམ སཏྱབྷཱམཱ བྷཱམེདི ཡཐཱ།) ཀང་པ་སྔ་མ་ཕྱི་བའི་ཕྱིར་མཆོག་ཏུ་གསང་བ་ཞེས་བྱ་བ་བདེན་གྲོས་མ་གྲོས་པ་བཞིན་ནོ།
2 བོད་དཔེ་རྣམས་སུ་ཏྲ་ཞེས་བྱུང་ཡང་རྒྱ་དཔེར་ཊཱ་ཞེས་གསལ་བ་ལེགས།
3 བོད་དཔེ་རྣམས་སུ་ཏྲ་ཞེས་བྱུང་ཡང་རྒྱ་དཔེར་ཊཱ་ཞེས་གསལ་བ་ལེགས།
4 སྡེ་བཀའ༌ རྒྱུད༌ ཀ༌ ༡༥༧ ན ༥ ཊཱ་ནི་ནམ་མཁར་འགྲོ་བ་ཞེས།…… མཁའ་འགྲོ་མ་ཞེས་རབ་ཏུ་གྲགས།

གང་ཞིག་གིས་ནི་ཀུན་ཁྱབ་པ། །
རྒྱུ་དང་མི་རྒྱུ་ཚངས་སྣོང་། །
ལྷ་མོ་ཐམས་ཅད་སྐྱེད་བྱེད་ཅིང་། །
ཚངས་ལ་སོགས་པའི་བདག་ཉིད་ཆེ། ༤།

ལྟེ་ནི་གསང་བ་ཡིན་ལ། དེ་[1]རྣམས་དེ་ལ་འཁྱིན་པ་དང་ཡང་དག་པར་སྦྱུད་པར་བྱེད་པས་ན་དབང་ཕྱུག་མའོ། །དེ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རིགས་ཀྱི་དབང་མོ་ནི་སངས་རྒྱས་མཁའ་འགྲོ་མའོ། །རྡོ་རྗེའི་རིགས་ཀྱི་ནི་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མའོ།། ནོར་བུའི་རིགས་ཀྱི་ནི་རིན་ཆེན་མཁའ་འགྲོ་མའོ། །པད་མའི་རིགས་ཀྱི་ནི་པད་མ་མཁའ་འགྲོ་མའོ། །ལས་ཀྱི་རིགས་ཀྱི་དབང་མོའི་[2]ནི་སྣ་ཚོགས་མཁའ་འགྲོ་མའོ། །དེ་རྣམས་ཀྱི་ཡང་དབང་མོ་ནི་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་སྟེ། གང་གི་ཕྱིར་འདི་ནི་གསང་བ་ལས་ཀྱང་ཤིན་ཏུ་གསང་བ་ཡིན་པ་དེའི་ཕྱིར། མཆོག་ཏུ་གསང་བའོ།། དེ་རྗོད་པར་བྱེད་པའི་ཚིག་ལ་[3]ཡང་དེ་སྐད་ཅེས་བྱ་སྟེ། རོལ་སྟེད་མ་ཕྲོགས་པའི་སྟན་ངག་བཞིན་ནོ། ༡-༣ །

མིང་[4]འདི་ཉིད་ཀྱི་དོན་བསྟན་པར་བཞེད་ནས། གང་ཞིག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཚངས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་ཕྱམ་ནིད་སྟེ་གན་པོ་ཡིན་ལ།

---

1 གསེར་༠ ངེས་ན་དེ་རྣམས་
2 གསེར་༠ མོ་
3 རྒྱ་དཔེར་༠ ([illegible]) རྒྱུད་ལ་
4 གསེར་༠ མི་

མན་ནི་[1]ཀྲིན་ཡིན་ཏེ། ཡི་གེ་རྣམ་པར་བསྒྱུར་བའི་ངེས་པའི་ཚིག་ཏུ་བྱས་པས་ཚངས་པར་འགྱུར་ཏེ། འདིར་འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྣ་མར་གྱུར་པས་ཐམས་ཅད་ལས་ཆན་པས་ན་ཚངས་པ་སྟེ། ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པ་དང་། སྤྲུལ་པའི་སྐུས་བསྡུས་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་སོ། །དེ་རྣམས་ཀྱི་སྣང་ནི་སྐྱེ་གནས་ཏེ། ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །ཡང་ན་ཁྱད་པར་དུ་གྱུར་པའི་ཐར་པ་ནི་ཚངས་པ་ཡིན་ལ། སྐུ་ཉིད་[2]ཀྱི་སྐྱེ་གནས་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྣང་ཡང་ཡིན་པས་ཚངས་སྣང་སྟེ་ཆོས་ཀྱི་སྐུའོ།[3] །འདིར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ཡོངས་སུ་དག་པ་རྣམས་ཀྱི་སེམས་ཅན་གྱི་འཇིག་རྟེན་རྣམས་ནི་རྒྱུ་བའོ། །དེ་རྣམས་ཀྱི་སྣོད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་འདིར་མི་རྒྱུ་བའོ། །དེ་རྣམས་དང་ལྡན་ཅིག་འཇུག་པས་ན། རྒྱུ་མི་རྒྱུ་བཅས་ཚངས་སྣང་སྟེ། དེ་དག་ལ་གང་གིས་ཁྱབ་པ་ཞེས་བྱ་བར་འབྲེལ་ཏེ། མ་ལུས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་དེ་དག་ཀུན་ལ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་ལྟར་ཇི་ལྟར་[4]ཚངས་པའི་སྣང་ལ་ངེས་ཁྱབ་ཅེ་ན། གང་གི་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚངས་པའི་སྣང་སྟེ། དེའི་རང་བཞིན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།[5] །ཅིའི་ཕྱིར་རྒྱུ་བ་དང་མི་རྒྱུ་བའི་འཇིག་རྟེན་ལ་ངེས་ཁྱབ་ཅེ་ན། དེ་ལས་བྱུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཉིད་བསྟན་པའི་ཕྱིར་ལྷ་མོ་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ལྷ་མོ་ཐམས་ཅད་ནི་རིགས་ལྔའི་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་སོ། །ཚངས་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་

---

1 རྒྱ་དཔེར་༠ མ་ནིཏྲ་ གསེར་༠ མ་ནི་ནི་

2 རྒྱ་དཔེར་༠ (ཀཱཡདྭཡ) སྐུ་གཉིས་

3 རྒྱ་དཔེར་༠ (ཨོཾ་ཧཱུྃ) ཞེས་པའི་དོན་ནོ།

4 གསེར་༠ དེ་ལ་ཇི་ལྟར།

5 རྒྱ་དཔེར་༠ དེའི་རང་བཞིན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། མེད།

དེ་རྣམས་ཀྱི་ནི་གསང་ཆེན་འདི། །
སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་དབང་ཕྱུག་ཆེ། །
སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་དྲག་ཆེན་མོ། །
འབྱུང་བ་ཡང་དག་སྡུད་མཛད་མ། ༥།

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔ་རྣམས་ཏེ། རིགས་དེ་དག་མཐའ་ཡས་པ་དེ་རྣམས་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ནི་རྒྱུར་གྱུར་པའི་ཕྱིར་རོ། །བདག་ཉིད་ཆེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མཐུ་ཆེ་བའོ། ༥ །

དེ་སུ་ཞིག་ཅེ་ན་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་པོའི་སྐབས་ནི་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ་མཆོག་ཏུ་གསང་བའི་སྐུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་བསྟན་ཏོ། །དབང་ཕྱུག་ཆེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ། གང་གི་ཕྱིར་ཚངས་པ་ལ་སོགས་པ་[1]འབྱིན་པར་བྱེད་པས་དེ་དག་ནི་དབང་ཕྱུག་ཡིན་ལ། དེ་དག་ཀྱང་འདིས་འབྱིན་པར་བྱེད་པས་ན་འདི་ནི་དབང་ཕྱུག་ཆེའོ། །གང་གི་ཕྱིར་དབང་ཕྱུག་ཆེན་མོ་ཡིན་པ་དེའི་ཕྱིར། དེ་རྣམས་ཀྱི་[2]ནི་གསང་ཆེན་འདི། ཞེས་གསུངས་ཏེ། དེ་རྣམས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་[3]རྣམས་སོ།། གསང་ཆེན་ནི་མཆོག་ཏུ་གསང་བའོ། །འདི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའོ།། འདི་ལྟར་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལ་ལྟོས་ནས་ཕྲ་བའི་རང་བཞིན་ནི་གསང་བར་བརྗོད་དོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རིགས་རྣམས་ལས་རིགས་ཀྱི་བདག་པོ་ལྔ་ནི་གསང་བ་ཡིན་ཏེ་རིགས་རྣམས་

---

1 རྒྱ་དཔེར་° (དེབྲྣམ) ལྷ་རྣམས་
2 སྡེ་° ཀྱིས་
3 ཅོ་° མ་ མེད།

ཧྲིའི་བདག་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་མཁའ་འགྲོ་མ་ལྔ་ནི་གསང་བ་དེ་ལས་ཀྱང་གསང་བར་གྱུར་པའོ། །འདི་ལྟར་རང་རང་གི་རིགས་ལ་ཁྱབ་པའི་རིགས་ཀྱི་དབང་པོ་རྣམས་ནི་གསལ་བའི་མཚན་ཉིད་དེ། དངོས་པོའི་ཆ་གཙོ་བོར་བྱས་པས་ན་དེ་དག་ནི་རིགས་[1]པའོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ནི་གསལ་བ་དེ་ཉིད་[2]ཀྱིས་སྟོང་པའི་མཚན་ཉིད་དེ། དངོས་པོ་མེད་པའི་ཆ་གཙོ་བོར་བྱས་ནས་དེ་དག་ནི་[3]དེ་བས་ཕྲ་བའོ། །དེ་བས་ན་གསང་བ་ལས་ཀྱང་ཤིན་ཏུ་གསང་བར་གྱུར་པ་རྣམས་ཀྱི་ཡང་གསང་བ་ནི་སྒྱུ་མ་ཆེན་མོ་སྟེ། འདི་ལྟར་རིགས་སོ་སོའི་ཆོས་ཉིད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ནི་རྒྱ་ཆེ་བ་ཡིན་ལ། འདི་ནི་ལྔ་ཆར་གྱི་ཆོས་ཉིད་མཉམ་པ་ཉིད་ཐུན་མོང་བ་སྟེ། དེས་ན་འདི་ནི་གསང་བ་དེ་རྣམས་ཀྱི་[4]ཡང་གསང་ཆེན་ནོ། །དེ་རྗོད་པར་བྱེད་པའི་རྒྱུད་ལ་ཡང་གསང་ཆེན་ཞེས་བརྗོད་དོ། །

གསང་ཆེན་ཞེས་བརྗོད་མོད། ཡང་ཅིའི་ཕྱིར་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ཡིན་ཞེ་ན། དེའི་ཕྱིར་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། གང་གི་ཕྱིར་དེ་ནི་དྲག་མོ་ཆེན་པོ་སྟེ། མཆོག་ཏུ་རྣམ་པར་འཆེ་བའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ལས་ཤེ་ན། གང་གི་ཕྱིར། འབྱུང་བ་ཡང་དག་སྤྱུད་མཛད་མའོ། །མ་རིག་པ་ལས་བྱུང་བས་ན་འབྱུང་བ་སྟེ། སངས་རྒྱས་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་ལ་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་དོ།། དེ་ཡང་དག་པར་སྤྱུད་པ་ནི་དེ་འཇོམས་པར་མཛད་པ་སྟེ།[5] དེ་བཅོམ་པས་ན་ཐར་

---

1 རྒྱ་དཔེར་° (ཨཽདཱརིཀ) རགས་པ་

2 རྒྱ་དཔེར་° (ཨུབྷཡ) དེ་གཉིས་

3 གསེར་° དེ་དག་ནི་ མེད།

4 གསེར་° ཀྱིས་

5 སྡེ་° དེ་

གང་གིས་འདི་ཀུན་ལ་ཁྱབ་པ། |
རྒྱུ་དང་མི་རྒྱུའི་འཇིག་རྟེན་གསུམ། |
དེས་ནི་དེ་ནས་འདི་བསྡུས་ནས། |
འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་ཡང་སྤྲོའོ། ༦།

པའི་མཆོག་ཏུ་[1]གྱུར་པའོ། །འདི་སྐམ་དུ་རྣམ་པར་འཆི་བ་ནི་མ[2]་ཡིན་ལ། ཨི་ཨར་བྱས་པས་མར་གྱུར་ཏེ། ཛྷ་ཀྱེན་དུ་སྒྱུར་བས་ཡང་འདྲེན་པར་བྱེད་དེ། དེས་ན་མཱཡཱ་ཞེས་བྱ་བར་དགོངས་སོ། ༥ །

རྣམ་པ་གཞན་གསུངས་པ། གང་གིས་ཞེས་བྱ་བ་དང་། འཇིག་རྟེན་གསུམ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་[3]ཡོངས་སུ་དག་པའོ། །རྒྱུ་མི་རྒྱུར་བཅས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྔ་མ་བཞིན་ནོ། ཁྱབ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་ལས་བྱུང་བ་སྟེ། གང་གི་ཕྱིར་རྒྱུ་མི་རྒྱུར་བཅས་པ་རྣམས་ཆོས་ཀྱི་སྐུའི་རྒྱུ་མཐུན་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། འདི་སྐམ་དུ་ངེས་པར་སྤྲུལ་པ་ནི་སྒྱུ་མ་སྟེ། མའི་མྣཱ་ལ་ཙའི་ཀྱེན་སྒྱུར་བས་ཡ་དྲངས་པས་མཱཡཱར་འགྱུར་བར་དགོངས་སོ། །རྣམ་པ་གཞན་གསུངས་པ་དེ་ནས་དེ་ཡིས་[4]ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཞན་ཏེ། རྣམ་པ་གཞན་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་ཡིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཧེ་རུ་ཀའི་གཟུགས་ཅན་གྱི་

---

1 རྒྱ་དཔེར་。 (པརྨོཀྵ་) གཞན་གྱི་ཐར་པ་

2 རྒྱ་དཔེར་。 (མྣིང) མྣིང་ཀྱེན་

3 སྡེ་。 ས་ཞེས་

4 གསེར་。 དེ་ཡི་

གསང་བ་པ་[1]རྣམས་འདི་ཡི་ནི། །
སྒྱུ་མའི་བདག་ཉིད་ཅེས་རྣམ་གྲགས[2] །
འཇིག་རྟེན་གསུམ་སྒྲུབ་རིག་མ་[3]སྟེ། །
འདོད་པ་ཐམས་ཅད་རབ་སྟེར་བ། ༧།

སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོས་སོ། །བསྒྲུས་ཞེས་བྱ་བ་དང་། འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་གཟིགས་པས་བསྒྲིལ་[4]ཏེ་ཐལ་བར་མཛད་པའོ། །ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ཕྱི་ནས་སོ། །སྤྲོའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་དག་ཉིད་ཀྱིས་ཞི་སྡང་མེད་པར་[5]མཛད་ནས་རྒྱལ་མཚན་ཆེན་པོའི་དྲིལ་བུའི་སྒྲ་རྣམས་ཀྱིས་སླར་གསོ་བར་མཛད་པའོ། ༦ །

དེས་ཅིར་འགྱུར་ཞེ་ན། གསང་བ་པ་རྣམས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཕྱི་རོལ་རྡོ་རྗེ་རིགས་ཀྱི་ལྷ་རྣམས་ནི་ཅུང་ཟད་གསང་བར་འགྱུར་པས་ན་གསང་བའོ། །དེ་རྣམས་ཀྱིས་མ་ནི་མར་གྱུར་པ་སྟེ། དེ་བས་ན་འདི་ནི་སྒྱུ་མའི་[6]བདག་ཉིད་ཅེས་རྣམ་གྲགས་ཞེས་གསུངས་ཏེ། སྒྱུ་མའི་སྒྲུབ་པ་ནི

---

1 སྡེ་༚ འགྲེལ་པར་༚ མ།
2 སྣར་༚ རྣམ་གྲངས་
3 སྡེ་༚ ..གྲེལ་པར་༚ རིག་པ་
4 རྒྱ་དཔེར་༚ ངན་པ་རྣམས་
5 རྒྱ་དཔེར་༚ (ནིརྟོཔ) ཉེས་པ་མེད་པ་
6 རྒྱ་དཔེར་༚ (མཧཱམཱཡཱ) སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་

གང་ཞིག་རྣམ་པར་ཤེས་ཙམ་གྱིས། །
སྒྲུབ་པའི་དབང་ཕྱུག་རིག་པ་ཉིད། །

སྔར་བཤད་པ་བཞིན་དུ་དགོངས་སོ།[1] །རྣམ་པར་གྲགས་པ་ནི་རབ་ཏུ་གྲགས་པར་གྱུར་པའོ།[2] །དེ་ལྟ་བུར་གྱུར་པའི་བདག་ཉིད་ཅན་ཡིན་མོད། དེས་སྒྲུབ་པ་པོ་རྣམས་ལ་ཅི་ཞིག་བྱེད་ཅེ་ན། དེའི་ཕྱིར་འཇིག་རྟེན་གསུམ་སྒྲུབ་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཟླ་ན་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡིན་པས་ན་རིག་པ་སྟེ། སྒྱུ་མའི་[3]བདག་ཉིད་དུ་གྲགས་པའི་རིམ[4]་པས་སྒྲུབ་པ་པོ་རྣམས་ལ་འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་སྒྲུབ་པའོ། །འདོད་པ་ཐམས་ཅད་ནི་བསམ[5]་པ་ཐམས་ཅད་དེ། རིག་འཛིན་ལ་སོགས་པའོ། །སྟེར་བ་ནི་དེ་དག་ཁྱད་པར་དུ་སྟེར་བར་བྱེད་པ་སྟེ། ཚིགས་སུ་བཅད་པ་ཕྱེད་པོ་འདི་ནི་བསྟན་པའོ། ༧ །

འདི་ཉིད་ཀྱིས་[6]ཉེ་བར་བསྟན་པ་ནི། གང་ཞིག་ཅེས་བྱ་བ་ནས་སྒྱུ་མའི་རིག་པ་འདི་ཞེས་བྱ་བའི་བར་ཡིན་ཏེ། གང་ཞིག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་རིག་པའོ། །རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཙམ་གྱིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་ཙམ་སྟེ། སྒྲུབ་པོ་རྣམས་ལ་འགྲུབ་པར་འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་དང་འབྲེལ་ཏེ། སྒྲུབ་པའི་དབང་ཕྱུག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་

---

1 རྒྱ་དཔེར་° མའི་མ་ལ་ཆའི་རྐྱེན་སྦྱུར་བས་སྔར་བཤད་པ་བཞིན་དུ་དགོངས་པའོ།

2 རྒྱ་དཔེར་° ཡིག་ཕྲེང་འདི་མེད།

3 རྒྱ་དཔེར་° (མཧཱམཱཡཱ) སྒྱུ་མ་ཆེན་པོ།

4 གསེར་° རིགས་པས་ རྒྱ་དཔེར་° (བིདྱཱ) རིག་པ་

5 གསེར་° བསམས་

6 གསེར་° ཀྱི་

ལྷ་དང་ནོར་བདག་དྲི་ཟ་དང་། །
གནོད་སྦྱིན་ལྷ་མིན་མི་དང་བཅས། ༥།
རིག་པ་འཛིན་དང་གང་ཡང་རུང་། །
མིའམ་ཅི་དང་ལྟོ་འཕྱེ་ཆེ། །
སྲིན་པོ་དང་ནི་ཤ་ཟ་རྣམས། །
སྒྲུབ་པོ་རྣམས་ལ་འགྲུབ་པར་འགྱུར། ༦།
དབང་དུ་འདུ་འགྱུར་འབྱུང་པོ་རྣམས། །
ཆུ་ལས་སྐྱེས་དང་ཐང་ལས་སྐྱེས། །

སྒྲུབ་པ་པོ་རྣམས་ཀྱི་དབང་ཕྱུག་སྙེ་རིག་པ་ཉིད་དོ། །ཅི་ཞིག་འགྲུབ་པར་འགྱུར་ཞེ་ན། ལྷ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ལྷ་ནི་བརྒྱ་བྱིན་ལ་སོགས་པའོ།། ནོར་བདག་ནི་ཡི་དྭགས་ཛྷུ་འཕྲུལ་ཅན་ནོ། །དྲི་ཟ་ནི་ཡུལ་འཁོར་སྐྱོང་ལ་སོགས་པའོ། །བཅས་པ་ནི་དེ་དག་[1]དང་ལྡན་ཅིག་ཏུ་འཇུག་པའོ།[2] །སྒྲུབ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྒྲུབ་པ་པོའོ། །འགྲུབ་པར་འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དབང་དུ་གྱུར་པའོ། ༥–༦ །

དབང་དུ་འདུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དབང་དུ་གྱུར་[3]པ་ཉིད་དོ། །འབྱུང་པོ་ནི་སེམས་ཅན་རྣམས་སོ། །ཆུ་ལས་སྐྱེས་པ་ནི་ཆུ་སྲིན་ལ་སོགས་པའོ། །ཐང་ལས་སྐྱེས་པ་ནི་སྟག་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་ལྟར་རེ་ཞིག་ཕྱི་རོལ་གྱི་འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་

---

1 རྒྱ་དཔེར་。 (ཡཀྵ) གནོད་སྦྱིན་

2 རྒྱ་དཔེར་。 (ཡཐོཀྟ) ཇི་ལྟར་བརྗོད་པ་བཞིན་

3 གསེར་。 སྒྱུར་

ཆོས་རྣམས་རང་བཞིན་འོད་གསལ་བ། །
གདོད་ནས་དག་ཅིང་རྟོག་པ་མེད། ༡༠།

སྒྲུབ་པ་ངེས་པར་བསྟན་ནས་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་སྒྲུབ་པ་ངེས་པར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་ཆོས་རྣམས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། འདིར་ཚིག་རྐང་དང་པོ་གཉིས་ཀྱིས་ནི་རྒྱུའི་རྒྱུད་མདོར་བསྡུས་ནས་བསྟན་ཏོ།། རང་བྱུང་ཡེ་ཤེས་ལྔ་པར་འགྱུར། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་འབྲས་བུའི་རྒྱུད་དོ། །ཚིག་རྐང་པ་གསུམ་པ་དང་། ལྔ་པ་དང་། དྲུག་པས་ནི་ཐབས་ཀྱི་རྒྱུད་བསྟན་ཏོ། །རང་བཞིན་ནི་གཉུག་མའི་རང་བཞིན་ནོ། །འོད་གསལ་བ་ནི་སྣང་ཞིང་གསལ་བ་སྟེ། ཤིན་ཏུ་དྲི་མ་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་ཅི་ཞིག་ཞེ་ན། ཆོས་རྣམས་ཏེ། རང་གི་[1]མཚན་ཉིད་འཛིན་པས་ན་ཆོས་ཏེ། དངོས་པོའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོ།[2] དེ་ཡང་འདིར་[3]དངོས་པོ[4]་ཐམས་ཅད་སེམས་ཙམ་སྟེ། དཔེར་ན་མི་ལམ་ན་ཁང་ཁྱིམ་དང་། སྐྱེད་མོས་ཚལ་དང་། རྫིང་བུ་དང་། རྟ་དང་། གླང་པོ་དང་མི་ལ་སོགས་པའི་གཟུགས་སུ་སེམས་ཉིད་སྣང་བ་ལྟར་སེམས་ཉིད་དངོས་པོ་དེ་དང་དེའི་རྣམ་པར་སྣང་སྟེ། སེམས་ལས་བྱུང་བ་ནི་སེམས་ལས་གུད་ན་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་སྐད་དུ་ཡང་ས་བཅུ་པ་ལས།[5] ཁམས་གསུམ་པོ་འདི་དག་ནི་

1 སྣེ་° རང་བཞིན་ རྒྱ་དཔེར་སྭལཀྵཎ་ཞེས་འདུག་པ་ལྟར་ལེགས་པར་སྣང་།

2 རྒྱ་དཔེར་° (སརྦཱཏྨ ཨིཏྱརྠཿ) ཆོས་ཐམས་ཅད་དོ་ཞེས་པའི་དོན་ནོ།

3 གསེར་° སྣེ་° འདི་ལྟར་ཞེས་འདུག་ཀྱང་ཙ་ནི་ལེགས་པར་སྣང་།

4 རྒྱ་དཔེར་° དངོས་པོ་ ·མེད།

5 སྣེ་བཀའ་° ཕལ་ཆེན་ ཁ ༣༣༠ བ ༨

སེམས་ཙམ་མོ་ཞེས་གསུངས་སོ། འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་ཀྱང་།[1]

ཇི་ལྟར་བྱིས་པས་རྣམ་བརྟགས་པའི། །
ཕྱི་རོལ་དོན་ནི་ཡོད་མིན་པས། །
བག་ཆགས་ཀྱིས་ནི་དཀྲུགས་པའི་སེམས། །
དོན་དུ་སྣང་བ་རབ་ཏུ་སྐྱེ། །

ཞེས་གསུངས་ཏེ། བག་ཆགས་ཀྱིས་དཀྲུགས་པ་ནི་བག་ཆགས་ཀྱིས་བཙོམ་ཞིང་བསླད་པའོ།[2] །ཆོས་ཐམས་ཅད་སེམས་ཙམ་ཡིན་མོད། ཡང་དེ་རང་བཞིན་གྱིས་སྣང་ཞིང་འོད་གསལ་བའི་ཕྱིར་[3]ཡིན་ཞེ་ན། གདོད་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། གདོད་ནས་ནི་ཐོག་མ་མེད་པ་ཉིད་ནས་སོ། །ཐོག་མ་མེད་པ་ཉིད་ནས་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དྲི་མ་མེད་པས་ན་དག་པའོ། །སྒྲིབ་པ་རྣམས་ཀྱི་བག་ཆགས་མེད་པས་ན་རྟོག་པ་མེད་པའོ། །ཅིང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གང་གི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །གང་གི་ཕྱིར་གདོད་མ་ནས་དག་པའི་ཕྱིར་རང་བཞིན་གྱིས་སྣང་ལ་རྟོག་པ་མེད་པའི་[4]ཕྱིར་རང་བཞིན་གྱིས་འོད་གསལ་བའོ། །

འོ་ན་དྲི་མ་རྣམས་ཀྱང་ཡོད་ལ་དེའི་བག་ཆགས་རྣམས་ཀྱང་ཡོད་བཞིན་དུ་ཅིའི་ཕྱིར་དག་པ་དང་རྟོག་པ་མེད་ཅེ་ན། དེ་དག་གི་རང་བཞིན་དེ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཏེ། ནམ་མཁའ་ལ་རྡུལ་དང་། དུ་བ་དང་། ཁུག་རྣ་ལ་སོགས་པ

1 སྡེ་བཀའ་° ཙ། ༡༦༥ ན ༦ ཇི་ལྟར་བྱིས་པས་བརྟགས་པ་ལྟར། །ཕྱི་རོལ་གྱི་ནི་དོན་མེད་དོ། །བག་ཆགས་ཀྱིས་ནི་དཀྲུཊ་པའི་སེམས། །དོན་དུ་སྣང་བ་ཤིན་ཏུ་འབྱུང་།
2 རྒྱ་དཔེར་° (ཨིཊྚཿ) ཞེས་པའི་དོན་ནོ།།
3 རྒྱ་དཔེར་° (ཀཱྃ) གསེར་° ཅིའི་ཕྱིར་ཡིན།
4 རྒྱ་དཔེར་° (ཏྲིཥྚི ཀཱཡེ དམྣཱཏྟ) སྐུ་གསུམ་གྱི་ཕྱིར་

ཐབས་བརྗོད་པ་ཡིས་དེ་ལས་ནི། །
རང་འབྱུང་ཡེ་ཤེས་ལྷུ་ལྷན་འགྱུར། །
རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་སྦྱོར་བའི་མ། །
ཁམས་གསུམ་པོ་ནི་མ་ལུས་ཀུན། ༡༡།

བཞིན་དུ་དྲི་མ་རྣམས་དེ་ལ་གློ་བུར་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་བས་ན་ཆོས་རྣམས་[1]ནི་རང་བཞིན་གྱིས་འོད་གསལ་བའོ། །ཅི་སྟེ་དེ་ལྟར་མ་གྱུར་ན་འགའ་ཡང་བྱང་ཆུབ་ཐོབ་པར་མི་འགྱུར་ཏེ། སེམས་ཀྱི་རང་བཞིན་དྲི་མར་གྱུར་ན་སེམས་ལ་ཡོད་པ་དེ་ཟད་པར་འགྱུར་བ་མི་རིགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་རང་བཞིན་གྱིས་འོད་གསལ་བའི་སེམས་ཉིད་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་རྒྱུ་ཡིན་ལ། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་འབྲས་བུ་ཡིན་ནོ། །བྱང་ཆུབ་དེ་ཡང་བག་ཆགས་དང་བཅས་པའི་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་ཟད་པའི་སེམས་ཀྱི་རྒྱུད་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་པ་ཡིན་ལ། དེ་ཉིད་ནི་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་སྟེ། ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པ་དང་སྤྲུལ་པའི་སྐུས་བསྡུས་པའི་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་གཞི་དང་གནས་སུ་གྱུར་པས་ན་སྐུའོ། ༡༠ །

དེ་ལ་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ཉིད་ཀྱིས་[2]ནི་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་རང་བྱུང་བ་ཡིན་ཏེ། སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་ཟད་པ་རང་ཉིད་འབའ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་པ་སྟེ། རང་གི་རང་བཞིན་ཁོ་ན་སྣང་ངོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །སྐུ་གསུམ་གྱིས་ནི་[3]ཡེ་ཤེས་ལྷུ་པོར་འགྱུར་ཏེ། དེ་ལ་དེ་དག་གི་ཡེ་ཤེས་ལྷུ་ནི་མེ་ལོང་ལྟ་བུའི་ཡེ་ཤེས་

---

1 རྒྱ་དཔེར་。 ཆོས་རྣམས་ མེད།

2 རྒྱ་དཔེར་。 (སྭཡཾབྷུཿ) རང་བྱུང་ནི་

3 རྒྱ་དཔེར་。 སྐུ་གསུམ་གྱིས་ནི་ མེད།

དང་། མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་དང་། སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་དང་། བྱ་བ་གྲུབ་པའི་ཡེ་ཤེས་དང་། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་སོ། །དེ་ལ་མེ་ལོང་ལྟ་བུའི་ཡེ་ཤེས་ནི་མེ་ལོང་དྲི་མ་མེད་པ་ལྟར་དག་ཅིང་མཐའ་མེད་ལ་རྟག་པ་[1]སྟེ། ཡེ་ཤེས་བར་མ་གསུམ་གྱི་[2]གནས་སུ་གྱུར་པ་དང་། ཡེ་ཤེས་གཞན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གཟུགས་བརྙན་འཆར་བའི་གནས་ཡིན་ལ། གཟུགས་བརྙན་གང་ཞིག་ཤར་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ཆོས་ཐམས་ཅད་གཟིགས་པར་གྱུར་པའོ། །མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ནི་རྟག་ཏུ་བྱམས་པ་ཆེན་པོ་དང་སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་མཚུངས་པར་ལྡན་པས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་བདག་ཉིད་ཁྱད་པར་མེད་པར་མཁྱེན་པའོ། །སོ་སོར་རྟོགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ནི་ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་ལ་ཐོགས་པ་མེད་པ་དང་། ཏིང་ངེ་འཛིན་དང་། གཟུངས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གནས་སུ་གྱུར་པས་འཁོར་གྱི་[3]དཀྱིལ་འཁོར་དུ་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ཐམས་ཅད་སྟོན་པར་མཛད་ཅིང་། ཆོས་ཀྱི་ཆར་[4]ཆེན་པོ་འབེབས་པར་མཛད་པའོ། །ཡེ་ཤེས་གང་གིས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་མཐའ་ཡས་པ་ཐམས་ཅད་དུ་སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་ཀྱི་སྤྲུལ་པ་རྣམས་ཀྱིས་མཐའ་ཡས་པའི་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་དོན་མཛད་པ་དེ་ནི་དེ་རྣམས་ཀྱི་བྱ་བ་གྲུབ་པའི་ཡེ་ཤེས་སོ། །ཡེ་ཤེས་གང་གིས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དེ་བཞིན་ཉིད་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་པ་ལ་གཟིགས་པ་སྟེ། མཚན་མའི་དྲི་མ་ཐམས་ཅད་ཤིན་ཏུ་མི་སྣང་བས་དེ་ཙམ་དུ་གཟིགས་པ་སྟེ།

---

1 གསེར། ལྷག་པ་

2 གསེར། གྱིས་

3 རྒྱ་དཔེར། (ཛྙཱ) ཆོས་ཀྱི་

4 རྒྱ་དཔེར། (ཛྙཱཉྡྲི) ཆོས་ཀྱི་ལྷ་བ་

དེ་ནི་དེ་རྣམས་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་སོ། །དེ་ལ་ཡེ་ཤེས་དང་པོ་གསུམ་ནི་ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པའི་སྐུའོ། །བཞི་པ་ནི་སྤྲུལ་པའི་སྐུའོ། །ལྔ་པ་ནི་ཆོས་ཀྱི་སྐུའི་ཕྱོགས་གཅིག་སྟེ། རང་བྱུང་ཡང་ཡིན་ལ་ཡེ་ཤེས་ལྔ་པ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱ་སྟེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་ལས་ཏེ། འདི་ལྟར་རྒྱུ་ཡོད་དུ་ཟིན་ཀྱང་ཐབས་མ་རྫོགས་པར་འབྲས་བུར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ཏེ། རྒྱུ་ནི་ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་ཅན་ཡིན་པས་ཐམས་ཅད་ཐོག་མ་ཉིད་ནས་བྱང་ཆུབ་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ།། དེ་བས་ན་ཐབས་གཙོ་བོར་གྱུར་པར་བསྟན་ཏོ། །དེ་ཅི་ཞིག་ཅེ་ན། རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་ལྔའོ། །སྒྱུར་བའི་མ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའོ། །ཁམས་གསུམ་པོ་ནི་མ་ལུས་ཀུན། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཁམས་གསུམ་པ་ཐམས་ཅད་དེ། དེ་དག་ལས་ཡང་དག་པར་བྱུང་བ་ནི་རིགས་ཀྱི་དབང་པོ་རྣམས་དང་རིགས་རྣམས་སོ། །ཅིའི་ཕྱིར་དེ་དག་ཁམས་གསུམ་པ་ཡིན་ཞེ་ན། དེ་དག་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱི་གསང་བ་གསུམ་གྱི་རྡོ་རྗེའི་ཁམས་སུ་འདུས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་དེ་དག་ཐབས་ཡིན་ཞེ་ན། „བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྣོད་དུ་གྱུར་པའི་མཚན་ཉིད་རྒྱུ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ཡོད་པ་ལ་འདི་རྣམས་ཉིད་བསྒོམ་པ་དང་བཟླས་པ་འཁོར་དང་བཅས་པས་མྱུར་དུ་བྱང་ཆུབ་ཐོབ་པར་བྱེད་ལ། དེ་ཐོབ་ནས་ཀྱང་དེ་དག་ཉིད་ལོངས་སྤྱོད་པ་[1] དང་། སྤྲུལ་པའི་སྐུས་བསྡུས་པ་རྣམས་ཀྱིས་གཞན་རྣམས་སྣོད་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་རྣམ་པ་གསུམ་ཐོབ་པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། ” །

1 གསེར。 ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པ་

མ་ལུས་ལུས་པ་མེད་གྲུབ་ཅིང་། །
སྒྱུ་མ་ཀུན་གྱིས་རྣམ་རོལ་པའོ། །
སངས་རྒྱས་ཀུན་ལས་ཕྲོགས་ནས་སུ། །
ལྷ་མཆོག་ལྷ་སྐྱེས་བུ་མོ་སྒྲོད།[1] ༡༣།

མ་ལུས་པ་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ། མ་ལུས་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་ལ་སོར་པ་ཕུང་པོ་གསུམ་པོ་དེ་དག་ལས་ཕུང་པོ་གཅིག་ཀྱང་དོར་བ་མེད་པའོ། །ལུས་པ་[2]མེད་པ་ནི་ཕུང་པོ་གཅིག་གིས་ཀྱང་ལྷ་གཅིག་ཀྱང་དོར་བ་མེད་པ་སྟེ། མ་ལུས་པ་ཡང་དེ་ཡིན་ལ་ལུས་པ་མེད་པ་ཡང་དེ་ཡིན་པས་དེ་དག་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། །གྲུབ་ཅིང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གང་ཞིག་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཙམ་གྱིས་སྒྲུབ་པ་པོ་རྣམས་ལ་ལམ་དང་འབྲས་བུ་རང་བཞིན་གྱིས་རྫོགས་པར་གྱུར་པའོ། །ཅིའི་ཕྱིར་འགྲུབ་ཅེ་ན། སྒྱུ་མ་ཀུན་ལ་རྣམ་པར་རོལ་པའི་ཕྱིར་ཏེ། ལམ་དང་འབྲས་བུ་ལ་སོགས་པའི་གནས་སྐབས་འདི་དག་ཐམས་ཅད་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ཁོ་ན་ལ་རག་ལས་པའི་ཕྱིར་རོ།[3] །འཇིག་རྟེན་གསུམ་བསྒྲུབ་ཅེས་གང་སྔར་བསྟན་པ་དེའི་ཉེ་བར་བསྟན་པ་མཛད་ནས། འདོད་པ་ཐམས་ཅད་རབ་སྟེར་བ། །ཞེས་བྱ་བ་གང་སྔར་བསྟན་པ་དེ་ཉེ་བར་བསྟན་པའི་ཕྱིར། སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ནི་སངས་རྒྱས་རྣམས་སོ། །འཕྲོག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བདག་གམ་བདག་གི་དོན་གྱི་ཕྱིར་དགུག་པའོ། །ལྷ་མཆོག

---

1 སྡེ་。 བསྒྲོད་

2 སྡེ་。 ལུས་ལ་

3 རྒྱ་དཔེར་。 (ཨིཏྱརྠཿ) ཅེས་པའི་དོན་ནོ།

རྣལ་འབྱོར་དབང་ཕྱུག་བྱེད་རིག་པ།　།
དེ་བཞིན་དུ་ནི་མིག་འཕྲུལ་བྱེད།　།
རྨོངས་པ་དང་ནི་རེངས་པ་དང་།　།
བསྐྲད་དང་གསད་པ་ལ་སོགས་པ།　༡༣།
དབང་དང་དགུག་པ་ལ་སོགས་དང་།　།
ནམ་མཁར་འགྲོ་བ་ཉིད་ཀྱང་ངོ་།　།

ནི་ལྷའི་གཙོ་བོ་རྣམས་ཏེ།　བརྒྱ་བྱིན་ལ་སོགས་པའོ།　།སྤྱོད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་བཀུག་ནས་ཉེ་བར་སྤྱོད་པའོ།　༡༣ །

རྣལ་འབྱོར་ནི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ནོ།　།དེའི་དབང་ཕྱུག་ནི་སྨོམས་པར་འཇུག་པ་དང་ལྡང་བ་དག་ལ་དབང་ཐོབ་པའོ།[1]　།མིག་འཕྲུལ་ནི་ཡོད་པ་དང་མེད་པའི་དམག་ལ་སོགས་པ་ཇི་ལྟར་རིགས་པར་སྤྲུལ་ཏེ་སྟོན་པ་དང་།　མི་སྣང་བར་ཡང་བྱེད་པའོ།　།རྨོངས་པ་ནི་བརྒྱལ་བའི་གནས་སྐབས་སུ་གྱུར་པའོ།　།རེངས་པ་ནི་མི་གཡོ་བར་བྱས་པའོ།　།བསྐྲད་པ་ནི་གནས་ནས་གཡོ་བའོ།　།བསད་པ་ནི་དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་སོགས་པ་ལ་ཤིན་ཏུ་གནོད་པར་བྱེད་པ་རྣམས་གཞོམ་པའོ།། སོགས་པའི་སྒྲས་ནི་ཡན་ལག་ཉམས་པ་དང་།　རིམས་དང་།　སྲིན་པོས་བཟུང་བ་ལ་སོགས་པ་བསྡུའོ།　༡༣ །

དབང་ནི་དབང་དུ་གྱུར་པ་སྟེ།　[2]འདི་དབང་དུ་བྱེད་པའི་ལས་ལ་དབང་

1　རྒྱ་དཔེར་°　(ཀྵེཏྲ མདྷྱམསྱ)　རིག་མ་ནི་སྒྲུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་ཞེས་ལྷག

2　གསེར་°　འདི་དབང་དུ་གྱུར་པ་སྟེ།

གཞན་གྱི་གྲོང་སོགས་བྱ་བ་དང་། །
མི་སྡང་བ་དང་གང་ཡང་རུང་། ༡༤།
ཞི་འགྲུས་པ་དང་རྨུགས་པ་དང་། །
དེ་བཞིན་ས་འོག་འགྲོ་བའོ། །
རིག་འཛིན་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་[1]ཉིད་འགྱུར། །
འཆི་བ་མེད་ཅིང་རྒྱས་པ་མེད། ༡༥།

ཞེས་བྱའོ། །དགུག་པ་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། རྐང་པས་དགུག་པ་དང་། གོང་བུར་དགུག་པའོ། །དང་པོ་ནི་ས་ལས་འོང་བའོ། །གཉིས་པ་ནི་ནམ་མཁའ་ལས་འོང་བའོ། །ལས་རྣམས་ནི་དབང་དང་དགུག་པའི་ལས་གསུམ་མོ། ། གཞན་གྱི་གྲོང་ནི་གཞན་གྱི་ཡུལ་ལ་འཇུག་པའོ།[2] །སོགས་པའི་སྒྲས་ནི་གོང་དུ་འཕོ་བ་ལ་སོགས་པ་གཟུང་ངོ་། །བྱ་བ་ནི་གཞན་གྱི་གྲོང་ལ་སོགས་པ་ལ་དེ་དག་ཉམས་སུ་བླང་བའོ། །མི་སྡང་བ་ནི་མི་མཐོང་བར་བྱ་བའོ། ༡༤།

ཞི་འགྲུས་པ་ནི་ཕན་ཚུན་ཆགས་པ་དང་ལྡན་པ་དག་ཀྱང་སྡང་བར་བྱ་བའོ། རྨུགས་པ་ནི་ལྐུགས་པའོ། །ས་འོག་འགྲོ་བ་ནི་ལྷ་མ་ཡིན་གྱི་སྒོར་འཇུག་པའོ།། རིག་འཛིན་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་བ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་རིག་འཛིན་རྣམས་ཚར་གཅད་པ་དང་རྗེས་སུ་གཟུང་བའི་ནུས་པ་ཅན་དེ་ནི་འཁོར་ལོས་སྒྱུར་[3]བ་སྟེ་དེའི་དངོས་ནི་དེ་ཉིད

---

1 སྣར་° བསྒྱུར་

2 རྒྱ་དཔེར་° (པརཔུརཤཱཛྙེཥྚཱ) གཞན་གྱི་གྲོང་ཞེས་པའི་སྒྲས་བརྗོད་པའོ།།

3 རྒྱ་དཔེར་° འཁོར་ལོས་སྒྱུར་ མེད།

རྣལ་འབྱོར་སྒྱུ་མའི་རིག་པ་འདི། །
འདི་ཡིས་ན་བ་མེད་པར་འགྱུར། །
སྔགས་ཀྱི་ཡི་གེའི་གཟུགས་ཀྱིས་སུ། །
རྣལ་འབྱོར་བས་ནི་རྣམ་རོལ་བྱེད། ༡༧།

དོ། །འཆི་བ་མེད་པ་དང་། ནུས་པ་མེད་པ་དང་། ན་བ་མེད་པ་གསུམ་ནི་གོ་སླ་སྟེ། ན་བ་མེད་པ་ཉིད་དང་ཞེས་དང་གི་དོན་ཤེས་པར་བྱ་སྟེ། སྔོངས་པ་ལ་སོགས་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་རྣལ་འབྱོར་མ་[1]སྒྱུ་མའི་རིག་པ་འདི་ཡིས་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་མའོ། །སྒྱུ་མ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་སྟེ་དེ་ཉིད་ནི་རིག་པའོ། །སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་རོ་གཅིག་ཏུ་སྦྱོར་བས་[2]རྣལ་འབྱོར་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་ཡང་ཡིན་ལ་སྒྱུ་མའི་རིག་པ་ཡང་ཡིན་པས་ན་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ།[3] །དེ་ལྟར་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལས་[4]འཕྲོག་པ་ལ་སོགས་པའི་ལས་ཀྱི་སྦྱོར་བ་ཁ་ཅིག་ནི་རྒྱུད་འདི་ཉིད་ལས་བརྗོད་པ་ཡིན་ལ། ཁ་ཅིག་ནི་རྒྱུད་གཞན་གྱི་རྗེས་སུ་འབྲང་སྟེ་ལྟ་བར་བྱའོ། །གང་ཞིག་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཙམ་གྱིས་ཞེས་[5]བྱ་བ་ནི་ཉམས་སུ་བླངས་པ་ཙམ་མོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་ཉམས་སུ་བླང་པ་དེ་བསྟན་པའི་ཕྱིར།

1 གསེར་༠ མ་ མེད།

2 གསེར་༠ སྦྱོར་བས་ན་

3 རྒྱ་དཔེར་༠ (ཀྵིཏྟྣ་རེཊྚྣི···) རིག་མ་འཛིན་པ་ལ་སོགས་པའི་ཚིགས་བཅད་ཕྱེད་ནི་ཡི་གེ་བཅུ་བདུན་པ་དང་། ན་མ་མེད་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པ་ནི་ཡི་གེ་བཅུ་བཞི་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ལྷག

4 རྒྱ་དཔེར་༠ (ནྣམཏརཀ) ཆོས་འཕྲོག་

5 གསེར་༠ ཅེས་པ་

བཟླགས་པ་དང་ནི་བསམས་པ་ཡིས། །
བསྒོམ་པ་དང་ནི་ཏིང་འཛིན་རྣམས། །
བཟླགས་པས་བྱེད་པའི་རིག་པ་སྟེ། །
རིག་པའི་དངོས་གྲུབ་བྱེད་པར་འགྱུར། ༡༧།

སྔགས་ཀྱི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། སྔགས་ནི་སྔགས་ཀྱི་ཚོགས་སོ། །ཡི་གེའི་གཟུགས་ནི་ཡི་གེ་ལས་སྐྱེས་པའི་གཟུགས་ཏེ། སྔགས་དང་ཡི་གེའི་གཟུགས་དེ་དག་གི་ཞེས་བྱ་བའི་[1]དོན་ཏོ། །རྣལ་འབྱོར་པ་ནི་སྒྲུབ་པོ་རྣམས་སོ།། རྣམ་པར་རོལ་པ་ནི་ལས་ལ་སོགས་པ་གྲུབ་པའི་རྣམ་པ་རྩེ་བའོ། ༡༥-༡༦ །

སྔགས་[2]ཇི་ལྟར་ཉམས་སུ་བླང་ཞེ་ན། བཟླག་པ་དང་ནི་བསམ་པ་དང་།། ཞེས་གསུངས་ཏེ། བཟླག་པ་ནི་ངག་གི་བཟླས་པའོ།[3] །ཡི་གེའི་གཟུགས་ཉིད་ཇི་ལྟར་ཉམས་སུ་བླང་ཞེ་ན། བསྒོམ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་[4] སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། བསྒོམས་པ་ནི་ཡིད་ཀྱིས་རྣམ་པ་རྒྱུན་ཆགས་སུ་འཇུག་པས་ལྟ་བའོ། །ཏིང་འཛིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དམིགས་པ་དེ་ཉིད་ལ་སེམས་གནས་པའོ། །བཟླགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་ཇི་ལྟར་ཉམས་སུ་བླངས་པའི་འབྲས་བུ་སྟོན་པ་ཡིན་ཏེ། བཟླ༷་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བཟླས་བརྗོད་དོ། །རིག་པ་ནི་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའོ། །བྱེད་པ

---

1 གཞིར་° ཅེས་བྱ་བ

2 ཕྱི་དཔེར་° (ཨཀྵར) ཡི་གེ

3 ཕྱི་དཔེར་° (ཙིནྟ ཙིནྟིན ༩༥) བསམ་པ་ནི་བསམས་བཞིན་བཟླས་པའོ།

4 སྡེ་° ·བྱ་བར་

བརྟུལ་བཞུགས་མེད་ཅིང་དཀའ་ཐུབ་མེད། །
དཀའ་སྤྱོད་སྤྱང་[1]བ་སྤོམ་མེད་པར། །
རྟག་ཏུ་ཤེས་རབ་ཐབས་སོགས་ཀྱིས། །
རྟག་ཏུ་དགའ་དང་བདེ་བས་འགྲུབ། ༡༨།

ཞེས་བྱ་བ་ནི་དགུག་པ་ལ་སོགས་པའི་ལས་ཐམས་ཅད་བྱེད་པའོ། །རིག་པའི་སྔགས་གཉིས་པས་ནི་བསྒོམས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཤེས་རབ་སྟོན་ཏོ། །དེ་ཡང་སྐུའི་བསྒོམ་པ་རྫོགས་པ་སྟེ། རང་གི་ལྷའི་གཟུགས་ཀྱིས་རྣམ་པར་བདག་ཉིད་གསལ་བར་བལྟའོ། །དངོས་གྲུབ་བྱེད་པ་ནི་དེས་སྒྲུབ་པ་པོ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོར་སྒྲུབ་པའོ།། གང་[2]ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལས་རྣམས་ཀྱང་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་སྟེ། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ནི་རང་གི་ལྷའི་གཟུགས་སུ་རྫོགས་པར་བྱས་ལ་[3]རང་ངམ་གཞན་གྱིས་མཐོང་བར་འགྱུར་པའོ། ༡༧ །

བདེ་བླག་ཏུ་ཉམས་སུ་བླང་བ་བསྟན་པའི་ཕྱིར། བརྟུལ་ཞུགས་མེད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། འདིར་མེད་ཅེས་བྱ་བའི་སྒྲས་ནི་བྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་སྔ་མ་དང་སྦྱར་ཏེ་བྱ་བ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །བརྟུལ་ཞུགས་ནི་ཁྲུས་གསུམ་དང་། གོས་གསུམ་བཟེ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །དཀའ་ཐུབ་ནི་སྨྲེ་ཚོད་དང་། སྲིད་པ་ཟ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །དཀའ་སྤྱོད་ནི་བསྙེན་པར་དཀའ་བ་སྟེ་

---

1 སྣ་◦ བསྟུང་

2 གསེར་◦ རྒྱ་དཔེར་◦ དང་

3 གསེར་◦ པ་

ལྟེ་བའི་དབུས་གནས་¹དཔའ་བོ་སྟེ། །
གེ་སར་གསང་བའི་སྤྱོད་ཡུལ་ལ། །
སེམས་དང་སེམས་མེད་སེམས་ཀྱི་གཟུང་། །
ཡེ་ཤེས་ཤེས་བྱའི་རང་བཞིན་བདག ༡༧།

སྟེ་འདི་ནི་བསྟན་པའོ། །འདིའི་ཉེ་བར་བསྟན་པ་ནི། སྣུང་[2]བ་དང་། སྟོམ་པ་མེད་པའོ། །དེ་ལ་སྣུང་[3]བ་ནི་དུས་མ་ཡིན་པར་མི་ཟ་བའོ། ། སྟོམ་པ་ནི་འདོད་ཆཊ་སྟོམ་པར་གྱུར་ཅིང་ཁྲིམ་པ་ཡིན་ན་ཡང་ཚངས་པར་སྤྱོད་པའོ།[4] །རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལྔ་དང་ལྡན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་ཚོར་བ་སིམ་པ་ནི་བདེ་བའོ། །ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་དང་ལྡན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་སིམ་པ་ནི་དགའ་བ་སྟེ། དེས་སྒྲུབ་པ་པོ་རྣམས་ལ་སྒྲུབ་པར་འགྱུར་བའོ། །བསྒོམས་པ་ལས་བྱུང་བ་ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་ཆེན་མོ་དང་། དེའི་གཟུགས་བསྒོམ་པའི་ཕྱི་རོལ་གྱི་བུད་མེད་ནི་ཤེས་རབ་བོ། །ཐབས་ནི་དེ་ལ་ཉེ་བར་བསྒྲོད་པ་སྟེ། བདག་ཉིད་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་གཟུགས་སུ་བསྒོམས་པས་ཉེ་བར་སྤྱོད་པའོ། །སོགས་པའི་སྒྲས་མཆོད་པ་རྣམ་པ་ལྔ་དང་། འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་ལྔ་རྣམས་ཀྱང་གཟུང་ངོ་། །དེ་རྣམས་ཀྱིས་རྟག་ཏུ་སྟེ་ཐུན་མཚམས་རྣམས་སུའོ། ༡༨ །

ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱིས་རེ་ཞིག་ཇི་ལྟར་ན་དགའ་བ་དང་བདེ་བར་འགྱུར་

---

1 སྡེ་。 ནས་

2 གསེར་。 བསྣུང་

3 གསེར་。 བསྣུང་

4 རྒྱ་དཔེར་。 (ཨནུསྨྲྀཏྱ ཀྵེདན) རྗེས་སུ་འཛིན་པའི་ཚོར་བ།

ཞི་ན། ལྔ་བའི་དབུས་གནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ལྔ་པ་ནི་པད་མའི་ལྔ་པའོ། །དེའི་དབུས་སུ་གནས་པ་དེ་སུ་ཞིག་ཅེ་ན། དཔའ་བོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། རྒྱུན་མི་ཆད་པར་[1]བརྩོན་པ་དང་ལྡན་པས་ན་དཔའ་བོ་སྙེ་ཧོ་ཧྃ་སེམས་དཔའོ། །དེ་འདིར་སྟོད་གང་ན་གནས་ཤེ་ན། ཀཾཀ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ལྔ་བའི་པད་མའི་ཀཾཀ་[2]ལའོ།། གསང་བའི་སྤྱོད་ཡུལ་ན་གསང་ཞིང་སྦ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་སྤྱོད་ཡུལ་ཏེ། ཉི་མ་དང་ཟླ་བ་ཁ་སྦྱར་བའི་སྤྱོད་[3]སྟོད་ཅེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །འདི་ཙམ་གྱིས་ནི་དེ་གནས་པའི་སྟོད་བསྟན་ནས་རང་བཞིན་བསྟན་པའི་ཕྱིར། སེམས་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། སེམས་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པའོ། །ཚིག་གཅིག་ལ་ཡང་ངེས་པར་གཟུང་བར་སྣང་སྟེ། དཔེར་ན་ཆུ་ཙམ་འཐུང་བ་ལ་ཟས་སུ་ཆུ་འཐུང་ཞེས་བྱ་བ་དང་། རླུང་ཙམ་ཟ་བ་ལ་ཟས་སུ་རླུང་ཟ་ཞེས་བྱ་བ་ལྟ་བུའོ།། དེ་བཞིན་དུ་འདིར་ཡང་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལས་མ་གཏོགས་པའི་[4]གཟུང་བ་མེད་པའི་སེམས་ཀྱི་སྐྲས་སྐྲ་ཚོགས་འདི་དག་སེམས་ཙམ་མོ་ཞེས་ངེས་པར་གཟུང་ངོ་།། སེམས་དེ་ཡང་སེམས་མེད་པའོ། །ཅིའི་ཕྱིར་སེམས་ཤེ་ན། གཟུང་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཅིའི་ཕྱིར་སེམས་པ་མེད་ཞེ་ན། གཟུང་བ་མེད་པས་འཛིན་པ་ཡང་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་གི་ཕྱིར་འཇིག་རྟེན་ན་དོན་འཛིན་པ་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པར་གྲགས་ལ། རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཉིད་ནི་སེམས་ཡིན་པས་སེམས་ཀྱང་དེ་ཡིན་ལ་སེམས་མེད་པ་ཡང་དེ་ཡིན་པས་ན་སེམས་མེད་པའོ། །གལ་ཏེ་འཛིན་

1 རྒྱ་དཔེར་° (ནིརྟུཏྟར) ལྷན་མེད་པ་
2 གསེར་° ཀརྣིཀ
3 གསེར་° སྤྱོད་ མེད།
4 རྒྱ་དཔེར་° (ཨབྷྱུ) དོན་གྱི་

པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་སེམས་དང་བྲལ་བས། དེ་སེམས་མེད་པ་ཡིན་ན་སེམས་གང་གི་མཚན་ཉིད་དང་ལྡན་པས་དེ་ལ་སེམས་ཞེས་ཅིའི་ཕྱིར་བྱ་ཞེ་ན། སེམས་ཀྱི་གཟུགས་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། [1]གསལ་བའི་ཕྱིར་སེམས་ཀྱི་གཟུགས་ཏེ། སེམས་དང་། སྣང་བ་དང་། སྒྱུ་བ་དང་། ཡོངས་སུ་གསལ་བ་དང་། ལྐོག་ཏུ་གྱུར་པ་མ་ཡིན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུ་སྟེ། རང་བཞིན་འདི་ལ་ཡོད་པས་ན་སེམས་ཀྱི་གཟུགས་ཏེ། སེམས་ཀྱི་གཟུགས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་དེ་དང་ལྡན་པས་སེམས་ཞེས་བྱའོ། །

འོ་ན་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཐམས་ཅད་དེ་ལྟ་བུ་ཉིད་ཡིན་བཞིན་དུ་དཔའ་བོ་ལ་ཡང་ཁྱད་པར་གྱི་རང་བཞིན་ཅི་ཞིག་ཡོད་ཅེ་ན། ཡེ་ཤེས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། རང་ཉི་གཅིག་མའོ། །བཞིན་ཉི་དེའི་ངོ་བོ་སྟེ་དེའི་རང་བཞིན་ནོ།། འདིས་ཤེས་པར་བྱེད་པས་ན་ཡེ་ཤེས་ཡིན་ལ་ཤེས་པར་བྱ་བས་ན་ཤེས་བྱའོ། ། ཡེ་ཤེས་དང་ཤེས་བྱ་ཉི་ཟླས་དབྱེ་བ་སྟེ། ཡེ་ཤེས་བྱ་བའི་རང་བཞིན་འདི་ལ་ཡོད་པས་ན་ཡེ་ཤེས་ཞེས་བྱ་བའི་རང་བཞིན་བཞག་གོ །དེ་ལ་སོ་སོའི་སྐྱེ་བོ་རྣམས་ཀྱི་ནི་རང་བཞིན་མ་ཡིན་པ་ཡང་ཤེས་བྱར་འགྱུར་ཏེ། གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་དག་དེ་དག་གིས་བརྟགས་པའི་ཕྱིར་ཏེ། གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་རྣམ་པ་དངོས་པོར་མེད་བཞིན་དུ་དེ་རྣམས་ལ་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ཡང་མེད་པ་དང་། དངོས་པོ་མ་ཡིན་པ་དེ་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་གཉུག་མའི་རང་བཞིན་མ་ཡིན་ནོ། ། འོ་ན་ཅི་ཞིག་ཅེ་ན། །འཕྲུལ་པས་སྒྲོ་བཏགས་པ་སྟེ། འཕྲུལ་པས་མཚན་མར་གཟུང་བའི་ཕྱིར་འཕྲུལ་པའི་མཚན་མའོ་ཞེས་བརྗོད་དོ།[2] །གང་དག་གི་རང་

---

1 རྒྱ་དཔེར༌ (ཙིཏཏཾ ཙིཏྟ) སེམས་ཅན་ནི་སེམས་སོ།།

2 རྒྱ་དཔེར༌ (ཙིཏྟཧྲྀད) འཁྲུལ་པའི་སེམས་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།།

བཞིན་མ་ཡིན་པའི་ཤེས་བྱར་གྱུར་པ་དེ་རྣམས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱང་[1]རང་བཞིན་མ་ཡིན་པར་འགྱུར་ཏེ་འདི་དག་འཁྲུལ་པའོ། །འདི་ལྟར་འཁྲུལ་པའི་དབང་གིས་མེད་པ་དང་དངོས་པོ་མ་ཡིན་པ་ཡང་སྣང་སྟེ། དེའི་ཕྱིར་འཁྲུལ་པ[2]དེ་ཡང་དེ་དག་གི་ཤེས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། སྣང་བའི་རྒྱུར་གྱུར་པའི་ཕྱིར་རོ། །འཁྲུལ་པ་དེ་ནི་བློ་ཡིས་བསྐྱེད་པ་ཡིན་གྱི་བློའི་གཉུག་མའི་རང་བཞིན་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དྲི་མ་རྣམས་བློ་བུར་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་རང་བཞིན་མ་ཡིན་པ་ཡང་དེ་རྣམས་ཀྱི་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ། །དོན་དམ་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ནི་སྤྲོས་པ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བདག་ཉིད་དེ། སྤྲོས་པ་ནི་འཁྲུལ་པའོ། །དེ་བས་ན་དེ་ལ་སྤྲོས་པ་ཐམས་ཅད་མེད་པས་རང་བཞིན་ཉིད་དེའི་ཡེ་ཤེས་ཡིན་གྱི་འཁྲུལ་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། སྤྲོས་པའི་མཚན་མ་ཐམས་ཅད་དེ་ལ་མི་སྣང་ཞིང་ནུབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །རང་བཞིན་ཉིད་དེའི་ཤེས་བྱ་ཡིན་གྱི་མེད་པ་དང་དངོས་པོ་མ་ཡིན་པ་ཡང་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

ཚིགས་སུ་བཅད་པ་ཕྱེད་པོ་[3]དེས་ནི་དཔའ་བོའི་དོན་དམ་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་[4]སྤྲོས་པ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ངོ་བོའི་རང་བཞིན་དངོས་སུ་བསྟན་ནས་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་ངོ་བོ་ནི་ཤུགས་ཀྱིས་སྟོན་པ་སྟེ། སྤྲོས་པ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་དང་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ནི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་སྐད་དུ་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ལ་འཇུག་པའི་གཟུངས་ལས།

དམ་ཆོས་འདི་ལ་རྒྱལ་སྲས་རྣམས། །
མི་རྟོག་བསམ་པས་བརྟན་གནས་ན། །

---

1 རྒྱ་དཔེར༌ (སྭབྷཱ) ཡིན་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་
2 རྒྱ་དཔེར༌ (ཨཔི ཛྙཱནམ་) ཤེས་པ་དེ་ཡང་ འཁྲུལ་པ་ མེད།
3 སྡེ༌ ཕྱེད་པོ་
4 རྒྱ་དཔེར༌ (བོདྷིཙིཏྟལཀྵཎ) བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་

རིམ་གྱིས་རྐལ་དཀའ་རྟོག་པ་ལས། །
འདས་ནས་རྣམ་པར་མི་རྟོག་ཉིད། །
རབ་ཞི་མི་གཡོ་རྣམ་པ་[1]སྣ། །
དབང་བསྒྱུར་[2]མི་མཉམ་མཉམ་པ་ཡིན། །
རྣམ་པར་མི་རྟོག་བདེ་བ་ནི། །

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་ལས་ཐོབ།[3] ཅེས་གསུངས་ཏེ།[4] དམ་ཆོས་འདི་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐེག་པ་ཆེན་པོའོ། །རྒྱལ་སྲས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་སོ། །བརྟན་གནས་[5] ཞེས་བྱ་བ་ནི་མི་གཡོ་བར་གནས་པའོ། །རྣམ་རྟོག་འདི་ནི་རྐལ་དཀའ་བ་སྣེ། རྣམ་པར་རྟོག་པ་རྣམ་པ་བཞིའོ།[6] །རིམ་བཞིན་འདས་པ་ནི་[7]དེ་ལས་འདས་པའོ། །མི་རྟོག་ཉིད་པ་

---

1 གསེར་° དམ་པ་

2 གསེར་° སྒྱུར་

3 མདོ་སྡེ་° པ་ སྡེ་བཀའ་° ཤོག ༦ ན ༥

དམ་ཆོས་འདི་ལ་རྒྱལ་བའི་སྲས། །རྣམ་པར་མི་རྟོག་བསམ་གྱུར་ན། །རྣམ་རྟོག་བགྲོད་དཀའ་རྣམས་འདས་ཏེ། །རིམ་གྱིས་མི་རྟོག་ཐོབ་པར་འགྱུར། །དེ་ལ་རབ་ཞི་མི་གཡོ་མཆོག ། དབང་བྱེད་ཉམས་ལ་མི་མཉམ་པ། །རྣམ་པར་མི་རྟོག་བདེ་བ་ནི། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐོབ་པར་འགྱུར། །

4 རྒྱ་དཔེར་° (ཏསྨིན ཀཱཥྛཱཡིན) ཚིགས་སུ་བཅད་པ་གཉིས་པོ་དེས་ནི།

5 རྒྱ་དཔེར་° (ཨཀྵིཀཱཥྛཱཡ ཨིཏི སྠིརཱཡཿ) རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་གནས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མི་གཡོ་བར་གནས་པའོ། །

6 གསེར་° རྣམ་པར་རྟོག་པའི་གཞིའོ།

7 གསེར་° ནི་ མེད།

དེ་ནི་བདག་གིས་བཤད་བྱ་སྟེ།[1] |
ཟབ་མོ་སངས་རྒྱས་བསྟན་པའོ། |
ཨ་ལི་ཀཱ་ལི་མཉམ་བྱས་ཏེ། |
ཨི་མོ་དེ་ལ་སྦྱར་བར་བྱ། ༣༠།

ནི་རྣམ་པར་མི་རྟོག་ཅིང་སྤྲོས་པ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཐོབ་པར་འགྱུར་བ་སྟེ། དེའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་ཉིད་ཀྱི་བདེ་བ་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ། །འདིར་ཉོན་མོངས་པ་མེད་པས་ན་རབ་ཏུ་ཞི་བའོ། །ཉམས་པ་མེད་པས་ནི་མི་གཡོ་བའོ། འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་བདེ་བ་ཐམས་ཅད་ལས་འཕགས་པས་ན་དམ་པའོ། །ཇི་ལྟར་འདོད་པ་དང་ཇི་སྙེད་འདོད་པ་མངོན་དུ་བྱེད་པའི་ཕྱིར་དབང་བསྒྱུར་བའོ། །དེ་ལས་གཞན་པའི་བདེ་བ་དང་རིགས་མཚུངས་པས་ན་མཉམ་པའོ། ཁྱད་པར་བཞི་པོ་དེ་དག་གིས་ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པས་ན་མི་མཉམ་པ་ཡང་ཡིན་ནོ། ༢༩ །

དེ་ལྟ་བུར་གྱུར་པའི་དཔལ་བོ་དེ་ནི་བདག་གིས་བཤད་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱའོ།། ཐེག་པ་གང་ལ་གྲགས་ཤེ་ན། སངས་རྒྱས་བསྟན་པ་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། ཐེག་པ་གང་གིས་སངས་རྒྱས་སུ་གྱུར་པའི་བསྟན་པ་ནི་སངས་རྒྱས་བསྟན་པ་སྟེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །འོ་ན་སྔར་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་ཕྱེད་[2]ཀྱིས་དེ་བསྟན་ཟིན་བཞིན་དུ་ཡང་བཤད་པས་ཅི་ཞིག་བརྗོད་ཅེ་ན། དེའི་ཕྱིར་ཟབ་མོ་ཞེས་

---

1 སྣ° ཡེ་ཤེས་ཤེས་བྱའི་རང་བཞིན་བདག་གིས་བཤད་བྱ་སྟེ།

2 རྒྱ་དཔེར° ཕྱེད་ མེད།

བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་[1]ལས་གསང་སྔགས་ཀྱི་ཐེག་པ་ནི་ཟབ་མོ་སྟེ་གང་གི་ཕྱིར་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་ཚུལ་ལས་གསང་སྔགས་ཀྱི་ཚུལ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱའི་རྣམ་པ་འཁོར་དང་བཅས་པས་མྱུར་བ་ཁོ་ནར་བྱང་ཆུབ་བསྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་བསྒོམ་པར་བྱ་བ་སྟེ། མཚན་ཉིད་མི་མཐུན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཡང་ད་དུང་མ་གསུངས་ཏེ། དེ་བས་ན་བཤད་པར་བྱ་ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་ཉིད་ཨཱ་ལི་ཀཱ་ལི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་པ་སྟེ།[2] དེ་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཉི་མ་དང་ཟླ་བ་ཁ་སྦྱོར་བ་ལའོ། །ངེས་པར་སྦྱོར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ངེས་པར་བཅིང་བའི་ཕྱིར་སྦྱོར་བའོ། །ཅི་ཞིག་ཅེ་ན། རི་མོ་སྟེ་དཔའ་བོ་དེ་ཉིད་ལས་ཟླ་བའི་དབུས་ཀྱི་བུ་ག་ཤིན་ཏུ་ཕྲ་བ་ལས་བྱུང་བ་དབྱེར་མེད་ལ་གཅད་དུ་མེད་པ་པད་མའི་རྩ་བའི་སྦལ་མ་ལྟ་བུའི་འོད་ཕྲ་མོའི་སྐུད་པ་ལྟ་བུའོ། །ཇི་ལྟར་སྦྱོར་ཞེ་ན། ཨཱ་ལི་ཀཱ་ལི་མཉམ་བྱས་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། ཨཱ་ལི་ཀཱ་ལི་དག་མཉམ་པ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། །དེ་ལ་དེ་སྐད་ཇི་ལྟ་བུ་ཞེ་ན། མུ་ཏིག་གི་ཕྲེང་བ་བརྒྱུས་པ་ལྟ་བུར་སྦྱོར་ནས་སོ། །ཇི་ལྟར་མཉམ་པར་བྱ་ཞེ་ན། གང་གི་ཕྱིར་ཀཱ་ལི་ཕྱེད་མར་བགོས་ཏེ་དུམ་བུ་གཉིས་སུ་བགོས་པ་[3]ཀཱ་ལིའི་སྣྲས་བཤད་པ་[4]ལ་དེ་ཡང་ང་དང་ཉ་གྱངས་ཏེ་བཅུ་དྲུག་པ་གཉིས་སུ་བྱའོ། །དེ་བས་ན་དེ་དག་མཉམ་པོར་གྱུར་པའི་འོད་ཀྱི་རི་མོས་[5]ཁ་སྦྱོར་བའི་རིམ་པ་གསུམ་དུ་བསྐོར་བས་དཀྲི་བར་བྱ་སྟེ། [6]ཡི་གེ

1 རྒྱ་དཔེར་° (གམྦྷཱིར) ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཟབ་མོ་

2 གསེར་° གསུངས་ཏེ།

3 གསེར་° བགོས་པ་ནི་

4 གསེར་° ཅོ་° བཤད་ལ་

5 གསེར་° རི་མོ་

6 རྒྱ་དཔེར་° (ཏྲཥཡཱུམ ཨཱལིཏྲཡམ) ཨཱ་ལིའི་ཡི་གེ་གསུམ་པོ་རྣམས་

རི་མོ་སྟེང་དུ་འབར་བ་མཐར། །
འོག་ཏུ་འབབ་པར་བྱེད་པའོ། །
ཁ་བའི་རྒྱུལ་གྱིས་འབབ་པ་སྟེ། །
བདུད་རྩིའི་ཐིགས་པའི་གཟུགས་ལས་སོ། ༣༧།

རྣམས་གློག་པའི་རིམ་པ་བཞིན་དུ་ཟླ་བའི་སྟེང་དུ་བརྒྱུད་དེ་དགོད་དོ། །དེ་ལ་ཕྲེང་བ་དབུས་མ་ལ་ནི་ཨཱ་ལི་རྣམས་སོ། །ཐ་མ་གཉིས་སུ་ནི་ཀཱ་ལི་ཕྱེད་ཕྱེད་དོ།། དེ་སྐད་དུ།

བཟང་པོ་ཡི་གེའི་ཕྲེང་བ་རྣམས། །ཞེས་འོག་ནས་བསྟན་པར་འགྱུར་ལ། དཔལ་བདེ་མཆོག་སྡོམ་ལས་ཀྱང་།[1]

ཡི་གེ་ཀ་ནས་ད་ཡི་[2]བར། །
ང་ཉ་སྤངས་ནས་དགོད་པར་བྱ། །
ཧ་ནས་ཀྵ་ཡི་བར་ཐུག་པར། །
ཕྲེང་བ་གཉིས་ནི་མཉམ་པོར་བྲི། །
ཨ་ལ་སོགས་པར་དབུས་གནས་པར། །
ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་འགོད་བྱ། །

ཞེས་གསུངས་སོ། ༣༠ །

རི་མོའི་སྟེང་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། འོད་ཀྱི་རི་མོ་གཞན་ཤེས་

---

1 བདེ་མཆོག་སྡོམ་ཞེས་པའི་དཔེ་ཆན་རྒྱུད་འབུམ་ནང་མ་ཐོབ།
2 རྒྱ་དཔེར་ ° ད་ཨི་བར་ཞེས་འདུག་པ་ལེགས་པར་སྣང་། ཟུར་ ° ༥

རབ་ཀྱི་འདོད་ཆགས་ཀྱི་མེ་འབར་བ་གང་གི་ཚེ་དཔའ་བོ་ལ་གྱེན་དུ་ལྡང་བ་དེའི་ཚེ་དེའི་འོག་ཏུ་འབབ་པར་བྱེད་པར་འགྱུར་རོ། །འདིར་[1]འཛག་པ་ནི་འབབ་པའི་སྒྲས་བསྟན་[2]ཏེ། རྒྱུན་འཛག་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །ཅི་སྟེ་འབབ་པར་བྱེད་པ་དེས་ཅི་ཞིག་འཛག་པར་འགྱུར་ཞེ་ན། [3]བདུད་རྩི་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། ཐར་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དང་། ཟད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་བདུད་རྩི་སྟེ། བདེ་བ་ཆེན་པོའོ། །ཇི་ལྟ་བུ་ཞེ་ན། ཐིགས་པའི་གཟུགས་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཁ་མདོག་དཀར་པོའི་ཐིག་ལེའི་གཟུགས་ཀྱིས་དཔའ་བོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ།། ཇི་ལྟར་འཛག་པར་འགྱུར་ཞེ་ན། ཁུ་བའི་ཚུལ་གྱིས་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། རྣམ་པར་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རོ་བསིལ་[4]ཞིང་བདེ་བ་ཁུ་བའི་རང་བཞིན་ཅན་ཡིན་པས་ན། ཁུ་བ་དང་ཆོས་མཐུན་པའི་ཕྱིར་ཁུ་བའི་སྒྲས་བསྟན་ཏེ། ཚུལ་དེས་འབབ་ཅིང་འཛག་པ་སྟེ། དེ་ཉིད་འཛག་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ།[5] ཨཱལིཀཱལི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་དེ་དག་གིས་ནི་དེར་དཔའ་བོ་དེ་ལེགས་པར་གནས་པ་བསྟན་ལ། རི་མོ་སྟེང་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་དེའི་ལས་བསྟན་ཅིང་ཁུ་བའི་[6]ཚུལ་གྱིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་རང་བཞིན་གྱིས་ཁྱད་པར་བསྟན་ཏོ། །

---

1 སྡེ་。 འདི་

2 གསེར་。 བསྟན་པ་

3 བདུད་རྩི་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། ཞེས་པ་ནས་ འཛག་པར་འགྱུར་ཞེ་ན། ཞེས་པའི་བར་ཀྱི་བརྗོད་པ་སྡེ་དགེ་པར་མར་ཆད། ཅོ་ནེ། གསེར་བྲིས། རྒྱ་དཔེ་གསུམ་གཞིར་བྱས་ཏེ་བསྣན། གསེར་。 ཟད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་

4 རྒྱ་དཔེར་。 (ཤིཏསུཁ) ཞལ་དཀར་པོ་

5 རྒྱ་དཔེར་。 (ཨྣབཏ) བར་དུའོ།།

6 རྒྱ་དཔེར་。 (ཨམྲྀཏམིཏྱེན) བདུད་རྩི་ཞེས་བྱ་བ་སོགས་པས།

ཐིགས་པའི་གཟུགས་ཞེས་བྱ་བས་ནི་དེའི་ཕྱག་རྒྱའི་རྣམ་པ་བསྟན་ཏོ། །ཡང་དེ་ཛི་ལྟར་ན་ཕྱག་རྒྱའི་རྣམ་པར[1]འགྱུར་ཞེ་ན། འདིར་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ། གང་ཟླ་བ་ལྟར་དཀར་བའི་ཐིག་ལེ་ཕྲ་མོ་དེ་ནི་སེམས་ཏེ། ནང་ན་གསལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ཡང་དེ་ཙམ་ལ་སེམས་གནས་པ་དེ་ནི་སེམས་ཙམ་སྟེ། དེ་ལས་མ་གཏོགས་པའི་དོན་གཞན་མི་དམིགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ཡང་དེའི་གཟུང་བ་མེད་པས་འཛིན་པ་མེད་པ་དེ་ནི་དེའི་སེམས་མེད་པ་སྟེ། དེའི་ཕྱིར་འདི་ནི་སྟོང་པའི་གཟུགས་ཅན་ནོ། །གང་ཡང་དེའི་གསལ་ཞིང་བ[2]དེ་ནི་སེམས་ཀྱི་གཟུགས་སོ། །གང་ཡང་དེ་ཙམ་ལ་སེམས་གནས་པས་སྤྲོས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཚན་མ་ནུབ་པ་དེ་ནི་དེའི་ཡེ་ཤེས་ཞེས་བྱ[3]བའི་རང་བཞིན་བདག་གོ །རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི[4]ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཤིན་ཏུ་ཕྲ་བའི་རྣམ་པ་ནི། དཔལ་གསང་བ་འདུས་པ་ལས་ཀྱང་།

ནམ་མཁའི་དབྱིངས་ཀྱི་དབུས་གནས་པར། །
ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་བསྒོམ་པར་བྱ། །
སངས་རྒྱས་གཟུགས་སུ་རྣམ་བསྒོམས་ནས། །
ཕྲ་མོའི་རྣལ་འབྱོར་བསྒོམ་པར་བྱ། །
སྣ་ཡི་རྩེ་མོར་ཡུངས་དཀར་བསམ། །
འགྲོ་དང་མི་འགྲོ་ཡུངས་དཀར་ལ། །

1 རྒྱ་དཔེར༌ ༠ རྣམ་པར་ མེད།
2 གསེར༌ ༠ གསལ་བཞིན་པ་
3 རྒྱ་དཔེར༌ ༠ (ཏྟེཡཏྲུཔཏྲ) ཤེས་བྱའི་རང་བཞིན།
4 རྒྱ་དཔེར༌ ༠ (བཛྲཏྲར) རྡོ་རྗེ་འཆང་།

གསང་བའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་བརྟགས་[1] པའི། །
ཡེ་ཤེས་གནས་ནི་ཉམས་དགའ་བསྒོམ།[2] ཞེས་གསུངས་སོ།

དཔལ་རྡོ་རྗེ་བདུད་རྩི་འབྱུང་བའི་རྒྱུད་[3]ལས་ཀྱང་། ཕྲ་མོའི་རྣལ་འབྱོར་འདི་བཞི་དང་[4]ལྡན་པར་གསུངས་ཏེ།

རིག་པར་མི་གཡོ་གནས་ནས་ནི། །
བདུད་རྩིའི་བསམ་གཏན་བསམ་པར་[5]བྱ། །
བདུད་རྩི་ཐིགས་པའི་གཟུགས་ཀྱིས་ནི། །
དེ་ཉིད་མཆོག་གི་བསམ་གཏན་བྱ། །
ནམ་མཁའི་དབུས་སུ་ཟླ་འདྲ་བའི། །
སྟོང་པའི་དེ་ཉིད་ཞེས་བྱར་བརྗོད། །
ཟད་མེད་ཉམས་མེད་ཕྲ་བ་སྟེ། །

---

1 གསེར་༐ བརྟག

2 སྡེ་བཀའ་༐ རྒྱུད་༐ ཙ་༐ ༧༦ བ ༢ དགོངས་པ་ལུང་བསྟན་ལས།
གནམ་མཁའི་དབྱིངས་ཀྱི་དབུས་གནས་པར།།ཟླ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་བསྒོམ་པར་བྱ།།
སངས་རྒྱས་གཟུགས་ནི་རྣམ་བསྒོམས་ན། །ཕྲ་མོའི་རྣལ་འབྱོར་བརྩམ་པར་བྱ།།
ཡུངས་ཀར་གྱི་ནི་འབྲུ་ཚད་ཙམ། །སྣ་ཡི་རྩེ་མོའི་བདག་ཉིད་ཅན། །
རྒྱུ་དང་མི་རྒྱུར་ཡང་དག་ལྡན། །དེ་རུ་གནས་པར་མཁས་པར་བསམ།།
སྡེ་བཀའ་༐ རྒྱུད་༐ཅ། ༩༩ ན ༢ གསང་བ་འདུས་པ་ལེའུ་དྲུག་པའི་ཚིགས་བཅད་བརྒྱད་པ་དང་དགུ་པ།

3 སྡེ་བཀའ་༐ རྒྱུད་༐ ཙ་༐

4 རྒྱ་དཔེར་༐ (སཀྐམཀ) ལས་དང་ལྡན་པ་

5 གསེར་༐ བརྩམ་པར་བྱ།

ཪྻོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་མི་གཤིགས་པའོ། །
གེ་སར་གསང་བའི་སྤྱོད་ཡུལ་ལ། །
ལྷི་བའི་དབུས་གནས་བཞུགས་པའི་ལྷ། །
སྣ་ག་ལིང་གའི་དབུས་གནས་ནས། །
ཁུ་བའི་གཟུགས་ཀྱིས་འཇུག་པར་འགྱུར།[1] །

ཞེས་སོ། །དེ་བས་ན་ཇི་ལྟར་བཤྒགས་པའི་རིམ་པ་བཞིན་དུ་འདིའི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལས་དག་བྱའོ།།

གང་ཡང་ཁ་ཅིག་གི་རྒྱུད་འདིར་གནས་བཞིར་འཁོར་ལོ་བཞི་བསྒོམས་པས་གཏུམ་མོ་སྦར་བས་རང་གི་འཁོར་ལོ་བཞི་པོ་བསྣོ་བ་དང་། དེ་ལས་བྱུང་སྙེ་སྦྲོས་ནས་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་འཁོར་ལོ་བཞི་རྣམས་བསྐྲོས་ཏེ་ཞུ་བ་ལས་བྱུང་བ་སླར་འོང་སྙེ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་འཁོར་ལོ་[2]ལ་ཞུགས་ནས་ཨི་གེ་ཧཾ་ལས་བདུད་རྩི་འཇུག་པར་གཞན་དག་ཏུ་བསྟན་པ་དེ་ཐམས་ཅད་བཏུས་ནས་འདིར་སྦྱོར་བར་བྱེད་པ་དེ་ནི་རིགས་པ་[3]མ་ཡིན་ཏེ། དེ་དག་སྟོན་པའི་ཚིག་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །རྒྱུད་ཐམས་ཅད་ནི་མངོན་པར་རྟོགས་པ་སྣ་ཚོགས་ཡིན་པ་དང་། རྒྱུད་འདིར་ནི་མངོན་པར་རྟོགས་

---

1 སྡེ་བཀའ༷ རྒྱུད༷ ཅ༷ ༣༣ ཁ ༧
གཞུགས་ཤིག་མི་གཡོ་བར་རིག་མོ། །བདུད་རྩི་བསམ་གཏན་བརྩམ་པར་བགྱི། །དེ་བཞིན་ཉིད་མཆོག་བརྩམ་པ་ནི། །བདུད་རྩི་ཐིག་ལེའི་གཟུགས་ཅན་ཏོ། །མཁའ་ཡི་དབུས་སུ་བླ་འདྲ་བ། །སྟོང་པ་དེ་ཉིད་ཆེད་དུ་བརྗོད། །འཇིག་མེད་ཟད་མེད་ཕྲ་མོ་ནི། །ཪྻོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་འཛོམས་བྱེད་པ། །ལྷི་བའི་དབུས་སུ་གནས་ལྷ་མོ། །སྙིང་པོ་གསང་བའི་སྤྱོད་ཡུལ་ལ། ཁུ་བའི་གཟུགས་ཀྱིས་ཟག་ནས་སུ། །སྣ་ག་ལིང་གའི་དཀྱིལ་དུ་གནས། །
2 གསེར༷ འཁོར་ལོར་བཞུགས།
3 གསེར༷ རིག་པ

གང་གང་དབང་པོའི་ལམ་ནས་ནི། |
དེ་དེའི་རང་བཞིན་སྐྱེ་བར་འགྱུར། |
མཆོག་ཏུ་ཕན་པའི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས། |
སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱི་རང་བཞིན་འབབ། ༣༣།

པ་ཤིན་ཏུ་མདོར་བསྡུས་པ་ཡིན་པའི་ཡང་ཕྱིར་རོ། ༣༡ །

གང་གང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་བྱ་བ་གཞན་གསུངས་ཏེ། དབང་པོ་ནི་མིག་ལ་སོགས་པའོ། །ལམ་ནི་ཡུལ་ཉིད་དོ། །སྐྱེ་བར་འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐོབ་པ་སྟེ། དངོས་པོ་གང་དག་མཐོང་བ་དང་ཐོས་པ་དང་། བསྣམས་པ་དང་། མྱང་[1]བ་དང་། རེག་པ་དང་། ཅི་ཡང་རུང་བ་དང་དེ་དག་ཐམས་ཅད་སངས་རྒྱས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཏེ། དེ་དག་མ་ལུས་པ་སོ་སོར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་རང་བཞིན་དུ་ངེས་པར་བྱའོ། །ཇི་ལྟར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཞེ་ན། ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ཏེ། རང་བཞིན་དང་བཅོས་མ་མ་ཡིན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུ་སྟེ། འདི་ལྟར་ཐོག་མ་དང་ཐ་མ་མེད་པའི་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཏེ། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་དེ་ཉིད་ནི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་མཆོག་སྟེ། རང་བཞིན་དེས་འགྲོ་བ་རྣམས་[2]སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡིན་ནོ། །རང་བཞིན་འབའ་ཞིག་གིས་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། མཆོག་ཏུ་གཞག་པའི་[3]

---

1 གསེར་༠ མྱངས་

2 རྒྱ་དཔེར་༠ འགྲོ་བ་རྣམས་ མེད།

3 རྒྱ་དཔེར་༠ (པརམཧིཏ) རྩ་བར་༠ མཆོག་ཏུ་ཕན་པ།

དམ་ཚིག་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་དང་། །
རིལ་བུ་ཆེན་པོའི་བསྒྲུབ་པ་ཡང་། །
སྒྲུ་འཕྲུལ་ཆེན་པོའི་[1]རབ་སྦྱོར་བའི། །
སྒོམ་པའི་སྦྱོར་བ་[2]བྱེད་པར་འགྱུར། ༣༣།

རྣལ་འབྱོར་གྱིས་ཀྱང་ཡིན་ཏེ། མ་སློབ་མོད་ཀྱི་ཀྱང་གི་སྒྲ་བལྟ་བར་བྱའོ།། མཆོག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་སྒྲིབ་པ་མེད་པ་དཔའ་བོ་ཞེས་བྱ་བར་[3]གྲགས་པའོ། །ངེས་གཞག་པ་ནི་བསྐྱེད་ཅིང་སྒྲུབ་པ་སྟེ།[4] དཔའ་བོའི་རྒྱུད་མཐུན་པར་འགྱུར་བར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེའི་རྣལ་འབྱོར་ནི་ལྷག་པར་མོས་པ་སྟེ། མིག་ལ་སོགས་པ་ལ་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་འདི་དག་དཔའ་བོ་ཉིད་ཀྱི་རྒྱུ་མཐུན་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ལྷག་པར་མོས་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། ༣༣ །

དམ་ཚིག་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་ཡང་བྱ་བ་གཞན་གསུངས་ཏེ། དམ་ཚིག་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་[5]ལྷ་རྣམས་སོ། །དེ་དང་བཅས་པའི་

1 སྣ༹ ཆེན་མོའི་
2 སྣ༹ སྦྱོར་བར
3 གསེར༹ ཞེས་པར
4 རྒྱ་དཔེར༹ (ཧེཏཱི་སྦྷཱ་ཝཾ་ཏ་ཏཱ་) ངེས་པར་པ་ནི་བསྐྱེད་ཅིང་བསྒྲུབ་པ་སྟེ།
5 རྒྱ་དཔེར༹ དཀྱིལ་འཁོར་ མེད།

དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བདག་པོ་ནི་དམ་ཚིག་ཆེན་པོའོ། དེའི་དངོས་གྲུབ་ནི་བསྐྱེད་པའོ།། ནི་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲ་ནི་ཚིག་ཁ་བསྐང་བའོ། །དངོས་གྲུབ་དེ་ནི་རིལ་བུ་ཆེན་པོས་སྒྲུབ་པ་སྟེ། རིལ་བུ་ནི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཐིག་ལེ་སྟེ། ཐིག་ལེ་བཞི་བསྒོར་བའོ།[1] །དབུས་ཀྱི་ཐིག་ལེ་ནི་རིལ་བུ་ཆེན་པོ་སྟེ། དེས་གྲུབ་པ་ནི་དམ་ཚིག་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་དེ་བསྐྱེད་པའོ། །ཐིག་ལེ་བཞི་བསྒོར་བ་སྐྱེད་པའོ།།[2] དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་དངོས་གྲུབ་དེས་ཅི་ཞིག་བྱ་ཞེ་ན། སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བདག་པོ་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ནི་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ཡིན་ལ། དེའི་རིག་པ་སངས་རྒྱས་མཁའ་འགྲོ་མ་ཡང་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་སྟེ། དེ་དག་རང་བཞིན་གཅིག་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་རབ་ཏུ་སྦྱོར་བ་ནི་ཀུན་ཏུ་འཕྲུད་པ་དང་ཙུམྦན་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དེའི་སྦྱོར་བ་དང་སྡོམ་པ་ཉམས་སུ་བླང་བར་བྱ་སྟེ།[3] དེ་ལ་ལྟེ་བའི་པད་མའི་ཀཀྐར་ཉི་མ་དང་ཟླ་བ་སྦྱར་བའི་དབུས་སུ་ཐིག་ལེ་ཕྲ་མོ་དཀར་པོ་གནས་པ་ནི་སྦྱོར་བའོ། །སྡོམ་པ་ནི་བདེ་མཆོག་སྟེ། སོ་སོར་དབྱུགས་དང་རྣམ་པར་བཅད་པའི་མཐར་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་ལས་བྱ་བ་སྟེ། རི་མོའི་[4]སྟེང་དུ་འབར་བའི་མཐར། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པས་སྟོར་གང་གསུངས་པའོ། ༣༣ །

---

1 གསེར。 ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཐིག་ལེ་བཞི་བསྒོར་བའོ།།

2 གསེར。 རྒྱ་དཔེར。 དེས་གྲུབ་པ་ནི་དམ་ཚིག་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་དེ་བསྐྱེད་པའོ།། ཞེས་འདུག་པ་ལྷུར་བསྣན། རྒྱ་དཔེར。 ཐིག་ལེ་ ནས་ བསྐྱེད་པའོ་བར་མེད།

3 རྒྱ་དཔེར。 (ཡོགཤྩསཾཝརཤྩཡོགསཾཝརམ྄) ཞེས་འདུག་པ་བོད་དཔེར་ཆད། འདིའི་འགྱུར་ལ་ སྦྱོར་བ་དང་སྡོམ་པ་ནི་སྦྱོར་སྡོམ་མོ། །ཞེས་དགོས་པར་སྣང་།

4 གསེར。 རི་མོ་ རྒྱ་དཔེར。 ཚིགས་རྐང་ཚ་ཚང་བ་བཀོད་མེད།

མཆོད་པ་ལྔ་དང་ཡང་དག་ལྡན། །
འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་ལྔ་དང་བཅས། །
བསྒྲུབ་པའི་དབང་པོ་ཤེས་བྱ་བ། །
དངོས་གྲུབ་ཤིན་ཏུ་རྟག་པའོ། ༣༠།

ཅི་འདི་འབའ་ཞིག་བྱའམ་ཞེ་ན། མཆོད་པ་ལྔ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། བཙུ་པོ་འདི་དག་ལྡན་ཅིག་ཅེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །ཡི་ཤེས་ཀྱི་ཐིག་ལེ་སྟེ། མཁའ་འགྲོ་མའི་པད་མའི་ནང་དུ་བབས་པའི་ཐིག་ལེ་དེ་ལས་མི་རྟོག་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པ་བཅུའི་སྤྲིན་གྱིས་[1]སོ་སོར་ཁྱབ་པར་རིམ་གྱིས་སྦྲོ་བར་བྱ་སྟེ། མི་རྟོག་དང་། བདུག་པ་དང་། མར་མེ་དང་། དྲི་དང་། ལྷ་བཤོས་རྣམས་ཀྱི་ཉེ་བར་སྤྱོད་པར་བྱ་བས་ན་མཆོད་པ་ལྔའོ།[2] །མ་ཐོབ་པ་རྣམས་འདོད་ཅིང་དོན་དུ་གཉེར་བར་བྱ་བ་ཡིན་པས་ན་འདོད་པའོ། །ཐོབ་པ་རྣམས་ཡང་དང་ཡང་དུ་གོམས་པར་བྱ་ཞིང་སྤྱད་པར་བྱ་བས་ན་ཡོན་ཏན་ཏེ། འདོད་པ་ཡང་དེ་ཡིན་ལ་ཡོན་ཏན་ལྔ་ཡང་དེ་ཡིན་པས་ན་འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་ཏེ། གྱུ་ནོམ་པའི་གཟུགས་དང་། སྒྲ་དང་། དྲི་དང་། རོ་དང་། རེག་བྱ་རྣམས་སོ།། དེ་ལ་སློམ་པས་ནི་གསང་བའི་མཆོད་པ་དང་། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་མཆོད་པ་[3]བསྟན་ལ། ལྷག་མས་ནི་ཕྱིའི་མཆོད་པ་བསྟན་ཏོ། །དེས་ལྷ་རྣམས་མཉེས་པར་བྱས་

---

1 རྒྱ་དཔེར་。 (གགན) ནམ་མཁར་
2 རྒྱ་དཔེར་。 མཆོད་པ་ལྔ་ མེད།
3 རྒྱ་དཔེར་。 (རཏྣ་པཱུཛཱ) རིན་པོ་ཆེའི་མཆོད་པ་

གང་ཞིག་ཤེས་པའི་དངོས་གྲུབ་ཀྱིས། །
ལྷ་ཡི་གནས་སུ་སྐྱུར་བར་འགྱུར། །
དེ་ནི་བདག་གིས་བཤད་བྱ་སྟེ། །
ལྷ་མོ་བདེན་པར་ང་སྨྲའོ།[1] ༣༥།

པའི་དབུས་སུ་[2]གསུངས་པ། སྒྲུབ་པའི་དབང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་ཤེས་བྱ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ངེས་པར་བྱ་བའོ། །རྟག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་སྟེ་ཉམས་པ་མེད་པ་དང་། ཤིན་ཏུ་ཟད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་ཏེ། དེ་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་མའོ། ༣༤ །

དེ་ལྟར་མདོར་བསྡུས་པའི་ཕན་ཡོན་དང་བཅས་པའི་བསྒོམ་པ་བསྟན་ནས། ད་ནི་བསྒོམ་པ་དང་ཐུན་མོང་བའི་ཕན་ཡོན་དང་བཅས་པའི་བཟླས་པ་བསྟན་པའི་ཕྱིར། གང་ཞིག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཤེས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རིག་པའོ། །དངོས་གྲུབ་ཀྱིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཉམས་སུ་བླངས་པས་སོ། །ལྷ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷ་རྣམས་སོ། །དེ་རྣམས་ཀྱི་གནས་ནི་ཡུལ་ལོ། །ལྷ་མོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སངས་རྒྱས་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་འབོད་པའོ། །ཅི་འདི་བདེན་པ་ཁོ་ན་ཡིན་[3]ཞེ་ན། བདེན་པར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། བདེན་པ་ཁོ་ནས་སྨྲའི་ནམ་ཡང་བརྫུན་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ངེས་པར་གཟུང་བའི་དོན་ཏོ། ༣༥ །

---

1 སྣ་。 ལྷ་མོ་བདེན་པར་སྨྲའོ།

2 རྒྱ་དཔེར་。 གསེར་。 འབྲས་བུ་

3 གསེར་。 ཡིན་ནམ་

སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ཁྱོད་ལ་ངས། །
འཇིག་རྟེན་གསུམ་འགྲུབ་དེ་བཤད་བྱ། །
རྣལ་འབྱོར་ཆེན་མོ་རྣམས་ཀྱི་ནི། །
བཟང་པོའི་ཡི་གེའི་ཕྲེང་བ་རྣམས། ༣༧།

འོ་ན་ཡེ་ཤེས་དེའི་ལྷ་དེ་[1]ལྷ་ནི་གང་ཞིག་ཡིན།[2] ནུས་པ་ནི་ཅི་འདྲ། རང་བཞིན་ནི་གང་ཞིག་ཡིན་ནོ། ཁྱོད་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཁྱོད་ལ་ངས་བཤད་པར་བྱ་ཞེས་བྱ་བའོ། །འོག་ནས་བྱུང་བ་དང་འབྲེལ་ཏོ། །དེ་ལ་ལྷ་ནི་གང་ཞིག་ཡིན་ཞེས་བྱ་བའི་ལན་ནི་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ཁྱོད་དང་ང་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ཏེ་རིག་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །མཐུ་ནི་ཅི་འདྲ་ཞེས་བྱ་བའི་ལན་ནི། འཇིག་རྟེན་གསུམ་འགྲུབ་ཅེས་བྱ་བ་གསུངས་སོ། །རང་བཞིན་ནི་གང་ཞིག་[3]ཡིན་ཞེས་བྱ་བའི་ལན་ནི། སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་[4]རྣམས་ཀྱི་ནི་བཟང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ཏེ།[5] བཟང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འདིར་རོལ་ཅིང་རྩེ་བས་ན་བཟང་པོ་སྟེ། ཉི་མ་དང་ཟླ་བ་ཁ་སྦྱོར་བའི་སྔགས་[6]ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་ཡང་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱི་མཉམ་པ་ཉིད་དེ། དེ་ཉིད་ནི་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱི་རོལ་པའི་གནས་སོ།།

1 སྡེ་དཔེར༚ ལྷ་དེ་ མེད།
2 གསེར༚ ཡེ་ཤེས་དེའི་ལྷ་ནི་གང་ཞིག་ཡིན།
3 གསེར༚ གང་ཡིན་ཡིན་
4 སྡེ་དཔེར༚ (མཧཱཡོགིནཱི) རྣལ་འབྱོར་པ་ཆེན་པོ་རྣམས་
5 སྡེ་དཔེར༚ ([illegible]) འདི་ནི་དྲུག་པ་བསྡུས་པའོ།
6 སྡེ་དཔེར༚ སྔགས་ མེད།

གང་ཞིག་བསམས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། |
རྒྱུ་དང་མི་རྒྱུ་འགྲུབ་འགྱུར་བའོ། |
འདོད་པས་ཀུན་ལ་ཉེར་སྤྱོད་པ། |
ཇི་ལྟར་འདོད་བཞིན་བསྟེན་[1]བྱས་ན། ༣༧|
རྣལ་འབྱོར་པ་ཆེན་རྟག་རོལ་ཏེ། |
རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་འགྲུབ།[2] |
རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་གཟུགས་སུ་ནི། |
རྣལ་འབྱོར་བདག་ཉིད་སྟོན་པར་བྱེད། ༣༨|

ཡི་གེའི་ཕྲེང་བ་རྣམས་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དབྱངས་དང་གསལ་བྱེད་ཀྱི་ཕྲེང་བ་རྣམ་པ་གསུམ་སྟེ། དེས་དཀྲིའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་མའོ། །དེའི་དབུས་སུ་གྱུར་པ་ནི་དཔའ་བོ་སྟེ་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ཡིན་ལ། ཁ་སྦྱོར་དེ་ནི་སངས་རྒྱས་མཁའ་འགྲོ་མ་ཡིན་ནོ།[3] ༣༩ |

གང་ཞིག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་དཔའ་བོས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་སྟེ། དབྱངས་དང་གསལ་བྱེད་ཀྱི་ཕྲེང་བ་གསུམ་གྱིས་བརྒྱན་པའི་ཉི་མ་དང་ཟླ་བ་ཁ་སྦྱར་བ་ན་གནས་པའོ།[4] །བསམ་པ་ཙམ་གྱིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བརླས་པ་ཙམ་གྱིས་ཏེ།

---

1 སྣ་༠. བརྟེན་
2 སྣ་༠ རྣམས་དང་
3 རྒྱ་དཔེར་༠ (བུདྡྷཌཱཀཱིནཱིཏྲཿ) སངས་རྒྱས་མཁའ་འགྲོ་མ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ།
4 རྒྱ་དཔེར་༠ གནས་པ་ མེད།

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གྱི་དཔལ། །
དངོས་གྲུབ་ཆེན་པོ་སྟེར་བར་འགྱུར། །
བཅུད་ལེན་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས། །
རྟག་ཏུ་སེམས་ཅན་དོན་བྱེད་པའོ། ༣༧།

བཀླས་པ་ཇི་ལྟར་བྱ་བ་ནི་ངེས་པར་བསྟན་པ་གཉིས་པ་ལས་འཆད་པར་འགྱུར་རོ།། རྒྱུ་དང་མི་རྒྱུ་[1]ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཕྱི་རོལ་གྱི་འཇིག་རྟེན་གསུམ་མོ། །འགྲུབ་ཅེས་བྱ་བ་ནི་དབང་དུ་འགྱུར་བའོ། །ཇི་ལྟར་འདོད་བཞིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཇི་ལྟར་འདོད་པ་བཞིན་དུའོ། །བརྟེན་[2]བྱས་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མའོ། །སུ་ཡིས་ཤེ་ན། རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །རྣལ་འབྱོར་བདག་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་སྔགས་ཀྱི་ལྷ་རྣམས་སོ། །སྟོན་པར་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་དེས་མཐོང་བར་བྱེད་པའོ། ༣༧ - ༣༨ །

དངོས་གྲུབ་ཆེན་པོ་སྟེར་བར་འགྱུར། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་རལ་གྲི་དང་། མིག་སྨན་ལ་སོགས་པའི་དངོས་གྲུབ་ཆེན་པོ་རྣམ་པ་བརྒྱད་སྟེར་བའོ། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་དེ་བཞིན་ཉིད་རྟོགས་པས་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྟེ། སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་སོ། །དེ་རྣམས་ཀྱི་[3]དཔལ་ནི་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའོ། །སེམས་ཅན་[4]དོན་བྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པ

---

1 གསེར་༠ རྒྱུད་དང་མི་རྒྱུད་

2 རྩ་བར་༠ བསྟེན་

3 རྒྱ་དཔེར་༠ (ཨིཡམ་དཀྲམགྡྷི) དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱི་

4 རྒྱ་དཔེར་༠ སེམས་ཅན་ མེད།

ཁྲུ་བ་དགུག་དང་ཆང་དང་ནི། །
གོང་བུ་ཆེན་པོ་དགུག་པ་ཉིད། །
ཤ་ཆེན་པོ་ནི་བཀུག་ནས་སུ། །
རྣལ་འབྱོར་མ་དང་ལྷན་ཅིག་སྤྱོད། ༣༠།
ཚེ་རིང་བརྟན་འགྲུས་ཆེན་པོ་དང་། །
གཟི་བརྗིད་ཆེ་ཞིང་སྟོབས་ཆེན་འགྱུར། །
ལྷ་ཡི་མིག་དང་རྫུ་འཕྲུལ་ལྡན། །
ཉིན་རེ་ཟླ་བ་འཕྱུང་བའོ། ༣༡།

དེ་ཉིད་ཀྱིས་སོ། ༢༩ །

ཆང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དགུག་པ་[1]ཞེས་བྱ་བར་སྦྱར་རོ། །ཚེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཚོ་བའོ། །བརྟན་འགྲུས་ནི་སྒྲོ་བའོ། །གཟི་བརྗིད་ནི་མཐུའོ། །ལྷའི་མིག་ནི་མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པའོ།[2] །རྫུ་འཕྲུལ་ནི་རྫུ་འཕྲུལ་གྱིས་མངོན་པར་ཤེས་པའོ། །ཟླ་བ་འཕྱུང་བ་ནི་བདུད་རྩི་འཕྱུང་བའོ། །ཉིན་རེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཉིན་གཅིག་བཞིན་དུ་འཕྱུང་བ་[3]སྟེ། ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་རྣམས་པའི་ལྷག་མའོ། ༣༠-༣༡ །

---

1 རྒྱ་དཔེར༌། ([illegible]) ཆང་དགུག་པའོ།།
2 གསེར༌། མངོན་པར་ཤེས་པའོ།
3 རྒྱ་དཔེར༌། འཕྱུང་བ་ མེད།

དེ་ཡི་ཚེ་ནི་འཕེལ་འགྱུར་ཏེ། །
བསྐལ་པ་ཆེན་པོའི་བར་དུ་གནས། །
བལྟ་བས་མི་ངོམས་ལུས་དང་ནི། །
ཆོ་འཕྲུལ་དག་ནི་སྟོན་པར་བྱེད། ༣༣།

ཚེ་རིང་ཞེས་བསྟན་པ་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཉེ་བར་བསྟན་པ་ནི། དེའི་ཚེ་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡིན་ཏེ། དེའི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པའིའོ། །འཕེལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རིང་དུ་ནུར་བའོ། །འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐོབ་པའོ། །བསྐལ་པ་ཆེན་པོའི་བར་དུ་གནས་པ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ།[1] །ཆོ་འཕྲུལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། འདིས་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ཡིད་སོ་སོར་འཕྲོག་པར་བྱེད་པས་ན་ཆོ་འཕྲུལ་ལོ། །དེ་ཡང་རྣམ་པ་གསུམ་སྟེ། རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་ཆོ་འཕྲུལ་དང་། ཀུན་བརྗོད་པའི་ཆོ་འཕྲུལ་དང་། རྗེས་སུ་བསྟན་པའི་ཆོ་འཕྲུལ་ཏེ། གོ་རིམས་བཞིན་དུ་རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་མངོན་པར་ཤེས་པ་དང་། གཞན་གྱི་སེམས་ཤེས་པའི་མངོན་པར་ཤེས་པ་དང་། ཟག་པ་ཟད་པའི་མངོན་པར་ཤེས་པ་སྟེ་དེ་དག་ཡིན་ནོ། [2]དེ་དག་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པའོ། །བལྟ་བས་མི་ངོམས་པའི་ལུས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མཐོང་བས་ཆོམ་པ་མེད་པའི་ལུས་ཏེ། སྟོན་པར་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ་དང་འབྲེལ་ཏོ། ༣༣།

1 རྒྱ་དཔེར༌。 (དཏྲཡཊྟིཏིཡོགཱི) རྣལ་འབྱོར་པས་བསྟན་པར་བྱེད་དོ།
2 རྒྱ་དཔེར༌。 དེ་དག་ ནས་ རྣལ་འབྱོར་པའོ་བར་ མེད།

ཡིད་ལ་བསམས་མ་ཐག་ཏུ་ནི། །
རང་གི་གཟུགས་ནི་ཡོངས་བརྗེས་ཤིང་། །
བསྒྲགས་པས་འགྲུབ་པའི་དོན་ཡོད་པ། །
རིག་མའི་དབང་ཕྱུག་རྫུ་འཕྲུལ་ཆེ། ༣༣།
རིག་པ་འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་ན། །
ང་ཡི་རིག་དང་མཉམ་པ་མེད། །
རྒྱུད་རྣམས་ཀུན་གྱི་ལུང་འདི་ནི། །
མཛེས་མ་ཁྱོད་ལ་བཤད་པ་ཡིན། ༣༤།

རང་གི་གཟུགས་ནི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ལུས་སོ། །ཡོངས་སུ་བརྗེས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཞན་གྱི་གཟུགས་ཡོངས་སུ་འཛིན་པའོ། །ཡིད་ལ་བསམ་མ་ཐག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡིད་ལ་བརྗོད་མ་ཐག་ཏུ་སྟེ། བདག་གཟུགས་འདིར་བྱའོ་སྙམ་པའི་རྗེས་ལའོ། [1]།ཕན་ཡོན་གྱི་སྒོ་ནས་ཉེ་བར་བསྡུ་བ་བསྟན་པའི་ཕྱིར། བསྒྲགས་པས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། བསྒྲགས་པས་འགྲུབ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ད་ལྟར་གློག་བཞིན་པ་སྟེ། བཟླས་པ་ཙམ་གྱིས་འགྲུབ་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ།། དོན་ཡོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མཐུ་དང་ལྡན་པ་སྟེ། གྲུབ་པར་གྱུར་ན་ངེས་པར་ཇི་སྐད་དུ་གསུངས་པའི་འབྲས་བུ་སྟེར་བར་བྱེད་པས་ན་དོན་ཡོད་པའོ། ༣༣ །

རིག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཀྱེ་རིག་པ་ཞེས་བོད་པའོ། ཁྱོད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་ཁྱོད་དང་མཉམ་པའི་རིག་པ་གཞན་ལ་མེད་པའོ། །འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི

---

1 རྒྱ་དཔེར༌ (སྟུ་ཏི་མུ་ཁེན་) བསྟོད་པའི་སྒོ་ནས།

རྣལ་འབྱོར་མའི་དབང་ཕྱུག་མའི་རིག་མ་ཆེན་མོ་ལས་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་མཚན་མ་བསྟན་པ་སྟེ་ལེའུ་དང་པོའོ།། ||

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དང་། རྡོ་རྗེ་དང་པད་མའི་རིགས་རྣམས་སུའོ། །ལུང་ཞིས་བྱ་བ་ནི་སྐབས་ཐབས་སོ། །མཛེས་མ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བོད་པའོ། ༣༦ །

རྣལ་འབྱོར་མའི་དབང་ཕྱུག་ནི་ཐབས་ཀྱི་ཆས་སོ། །རིག་མ་ཆེན་མོའི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཆ་ཡིས་སོ། །དེ་དག་ཅི་ཞིག་ཅེ་ན། སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའོ། །དངོས་གྲུབ་ནི་དེ་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་པའོ། །མཚན་མ་ནི་རྟགས་ཏེ་མཐུ་རྣམ་པ་དུ་མའོ། །དེའི་དོན་ངེས་པར་[1]བསྟན་པ་ནི་བཤད་པའོ།།

དཔལ་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་འགྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྡན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལས་ངེས་པར་བསྟན་པ་དང་པོའོ།། ||

---

1 གསེར༑ དེའི་ངེས་པར

ངེས་པར་བསྟན་པ་གཉིས་པ།

དེ་ནས་དེ་ལས་རྣལ་འབྱོར་མའི་དབང་ཕྱུག་ཆེན་མོ་རྣམས་ཀྱི་སྦྱོར་བའི་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་འབྲས་བུ་རབ་ཏུ་སྟེར་བའི་གསང་བའི་ཡི་གེ་བཟང་པོ་བཤད་པར་བྱ་སྟེ། ༡ །

དེ་ནས་དེ་ལས་རྣལ་འབྱོར་མའི་དབང་ཕྱུག་ཆེན་མོ་རྣམས་ཀྱི་ཡི་གེ་བཟང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་གེ་བཅུ་གཉིས་ནི་ཀང་པ་གཅིག་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པའོ། །དེ་ནས་དེ་ལས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བཟླས་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་གྱུར་པའི་སྐབས་ཀྱི་དོན་ཏོ། །དེ་ལས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷའི་སྐུ་བསྒོམས་པའི་རྗེས་ཐོགས་ལའོ། །རྣལ་འབྱོར་དབང་ཕྱུག་ཆེན་མོ་རྣམས་ཀྱི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བཟང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་དང་སྦྱར་ཏེ།[1] བཟང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔའ་བོ་དང་བཅས་པའི་དཔའ་བོའི་སྟོད་[2]དེ། ལྟེ་བའི་པད་མའི་ཀརྞི་ཀ་ལ་བསམ་མོ་ཞེས་པ་ནི་ལྷག་མའོ། །འདིར་ཅི་ཞིག་བཟླས་པར་བྱ་ཞེ་ན། གསང་བའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་པ་ལ། སྨྲ་བར་བྱ་བས་ན་གསང་བ་སྟེ་མངོན་དུ་མི་འབྱུང་བའོ། །ཡང་ན་འདིས་ལྷའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསྡུས་པས་ན་གསང་བ་སྟེ། གསང་བ་ཡང་དེ་ཡིན་ལ་ཡི་གེ་ཡང་དེ་ཡིན་པས་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། །སྦྱོར་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏོ། །དངོས་གྲུབ་ནི་རྫོགས་པའོ། །འབྲས་བུ་ནི་རྫོགས་པ་དེའི་རྒྱུ་མཐུན་པ་སྟེ། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་བོ། །རབ་ཏུ

---

1 རྒྱ་དཔེར་༠ སྦྱར་ཏེ་ . མེད།

2 སྡེ་༠ སྟོད།

གང་ཞིག་བསམས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། |
རྣལ་འབྱོར་མ་མཆོག་སྐྱེར་འགྱུར་བ། |
དང་པོའི་ཡི་གེའི་སྦྱོར་བ་ཡིས། |
ཏག་ཏུ་དགུགས་ནི་གཏང་བར་བྱ། ༣།
བརྒྱད་པའི་མཐའ་དང་ཡང་དག་ལྡན། |
ཨུ་དང་ཐིག་ལེར་བཅས་པ་ཡིས། |

སྐྱེར་བ་ནི་དེ་ཉིད་[1]ཀྱི་ཁྱད་པར་དུ་སྐྱེར་བ་སྐྱེ། སྦྱོར་བའི་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་འབྲས་བུ་རབ་ཏུ་སྐྱེར་བའོ། ༡།

བསམ་པ་ཙམ་གྱིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྦྱོར་བ་འདིའི་དངོས་གྲུབ་མ་གཏོགས་པར་བཟླས་པ་ཙམ་གྱིས་ཀྱང་དོན་དུ་གཉེར་བའི་མཆོག་སྐྱེ་རིག་འཛིན་ལ་སོགས་པའི་མཆོག་སྐྱེ་སྐྱེར་བའོ། ཁ་སྦྱོར་གྱི་དབུས་སུ་གསང་བའི་ཡི་གེ་བཀླས་ལ་དེའི་མགོ་བོར་དཔའ་བོ་གཞག་སྐྱེ་བཟླས་པ་[illegible]ཞེས་དགོངས་སོ། །ཇི་ལྟར་བཟླས་པར་བྱ་ཞེ་ན། དང་པོའི་ཡི་གེ་ཞེས་བྱ་བ་[illegible]ས་པ་གསུངས་ཏེ། [2]དང་པོའི་ཡི་གེ་ནི་རབ་སྔགས་ཏེ། སྔགས་ཕལ་ཆེར་གྱི་དང་པོར་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་སྦྱོར་བ་ནི་དལ་བར་བརྗོད་པའོ། །དགུགས་བཏང་བ་ནི་སྔོག་སྐྱེང་དུ་འགྲོ་བའོ།། བྱ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཞེས་བྱ་བ་དང་འབྲེལ་ཏོ།[3] ༢ །

བརྒྱད་པའི་མཐའ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡི་གེ་ཏའོ། ཨུ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་

1 རྒྱ་དཔེར༠ (ཏེ) དེ་གཉིས
2 རྒྱ་དཔེར༠ (ཨཏྲ) འདིར་དང་པོའི་
3 རྒྱ་དཔེར༠ (ནིཿཤྲུཏཾ ཀུརུཏ ཨིཏི སམྦནྡྷཿ) དགུགས་ཏྱ་བས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འབྲེལ་བའོ།

རྣལ་འབྱོར་པ་ཡི་དབུགས་རྫུབ་བྱེད། །
དངོས་དང་དངོས་མེད་རྣམ་སྤྱངས་པའོ། ༣།

པ་ལ། ཇི་ལྟར་ཧའི་འོག་ཏུ་ཨུ་སྦྱར་ལ་ཧའི་མགོར་ནི་ཐིག་ལེ་དང་བཅས་པར་བྱ་བ་སྟེ་བསྡུས་པས་ཧཱུྃ་ཞེས་བྱ་བར་འགྱུར་རོ། །ཇི་ལྟ་བུའི་དབུགས་གཏོང་བར་རྫུབ་པ་ཡིན་ཞེ་ན། དངོས་དང་དངོས་མེད་དུ་སྤྱངས་པ། །ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། གོ་རིམས་བཞིན་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་མའོ། །དེ་ལ་ཨོཾ་གྱི་དོན་ནི་ཡི་ཤེས་ཙམ་སྟེ། དཔལ་གསང་བ་འདུས་པ་ལས།[1]

ཨོཾ་ནི་ཡི་ཤེས་སྙིང་པོ་སྟེ། །ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཧཱུྃ་གི་དོན་ནི་སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་སྣང་བ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་མཉམ་པ་ཉིད་དེ།

ཧཱུྃ་ནི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་རྡོ་རྗེ། །
གསུམ་པོ་མི་ཕྱེད་མཉམ་ཐོབ་པ།།[2] ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།།

དེ་བས་ན་ཨོཾ་གྱིས་སྣ་ཚོགས་འདི་དག་སེམས་ཙམ་ཉིད་དུ་བསྟན་པ་ལ་བལྟས་པས་ནི་དངོས་པོ་རྣམ་པར་སྤྱངས་པའོ། །སྣ་ཚོགས་འདི་དག་སེམས་ཙམ་པོ་དེ་ཉིད་དངོས་པོ་མེད་པ་སྟེ། སེམས་ལས་མ་གཏོགས་པའི་དངོས་པོ་མེད་པའི་ཕྱིར་སྣ་ཚོགས་པའི་སེམས་ཙམ་པོ་དེ་ཉིད་ཀྱང་སྣང་བ་མེད་པས་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་འཇུག་པར་ཧཱུྃ་གིས་སྟོན་པར་བྱེད་དེ། དེ་ལ་བལྟས་པས་ནི་[3]དངོས་པོ་མེད་པ་རྣམ་པར་སྤྱངས་པའོ། །འོ་ན་འདིར་སེམས་ཙམ་དང་མཉམ་པ་ཉིད་ལ་འཇུག

---

1 སྡེ་བཀའ་༠ རྒྱུད་༡ ཅ་༠ ༡༠༦ ན ༥

2 སྡེ་བཀའ་༠ རྒྱུད་༠ ཅ་༠ ༡༠༦ ན ༥

3 རྒྱ་དཔེར་༠ (ཨེཾབ སྣབུསྣབ) དེ་ལྟར་དངོས་པོ་ཡོད་པ་དང་མེད་པ

དེ་ལ་བརྟུལ་ཞུགས་མ་བཤད་དེ།[1] །
ཕྲེང་བ་སྔགས་དང་གཟུང་[2]བ་དང་། །
སྦྱིན་སྲེག་གི་ནི་ལས་རྣམས་ཀྱང་། །
གཅིག་ནས་གཅིག་ཏུ་ལྡོག་པར་འགྱུར། ༨།

པ་ཧེ་ལྷར་ལྷ་ཞི་ན།[3] འདིར་མན་ངག་ནི་རབ་སྔགས་བརྗོད་ནས་དཔའ་བོ་ལས་དབུགས་གཏོང་བ་ནི་ལྷན་ཅིག་ཏུ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་འོད་ཟེར་སྙིང་དུ་ཆུ་བར་བལྟས་ལ། དེ་སྒྲོས་པས་སྣ་ཚོགས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་རང་བཞིན་དུ་བྱས་ཏེ། ས་བོན་གྱི་ཡི་གེ་བརྗོད་ནས་[4]སྣ་ཚོགས་སངས་རྒྱས་སུ་བྱས་པ་དེ་དག་རང་གི་ལྷའི་རྣམ་པར་བསྒོམ་པ་ནི་སེམས་ཙམ་དུ་བལྟ་བའོ། །དེ་ནས་ཧཱུྃ་བརྗོད་པས་དབུགས་འཇུག་པས་ན་སྣ་ཚོགས་དཔའ་བོ་ལ་བསྡུ་བ་ནི་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་འཇུག་པ་ལ་བལྟའོ། །དེ་དག་གཉི་ག་ཡང་དལ་བུས་ཡང་དང་ཡང་དུ་ཇི་སྲིད་ངལ་བར་མ་གྱུར་གྱི་བར་དུ་བྱ་སྟེ། འདིར་ཿན་བརྒྱུད་འདིར་བསྟན་པའོ། ༣ །

འདི་[5]ཚིགས་མེད་པར་ཉམས་སུ་བླངས་པ་གསུངས་པ། དེ་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། དེ་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྟན་པ་ལའོ། །བརྟུལ་ཞུགས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མི་སྨྲ་བ་དང་། ཁྲུས་དང་། སློང་མོ་ལ་སོགས་པའི་ངེས་པ་མེད་

1 སྣ་༠ མ་བཤད་དོ།
2 སྣ་༠ བཟུང་
3 གསེར་༠ བལྟ་ཞི་ན།
4 རྒྱ་དཔེར་༠ སྣ་ཚོགས་⋯⋯དེ་དག་བར། མེད།
5 རྒྱ་དཔེར་༠ (ཨཏ྄) འདིར།

སྔགས་དང་དབྱིབས་དང་ཆོས་བདག་ཉིད། །
སྦྱོར་བ་རྣམ་གསུམ་ཞེས་བྱ་སྟེ། །
ཡེ་ཤེས་རྣམ་པ་གསུམ་གྱིས་ནི། །
སྲིད་པའི་ཉེས་པས་གོས་མི་འགྱུར། ༥།

པའོ། །[1] །ཕྲེང་བ་སྔགས་[2]དང་བཟུང་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྲོག་གི་རླུང་གིའོ། །ལྡོག་པར་འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྒྱུད་གཞན་དག་ལས་འབྱུང་བ་འདིར་མི་སྣང་ཞིང་བཟློག་པར་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །གཞན་དང་གཞན་དག་[3]ཅེས་བྱ་བ་ལས་ཀྱང་གི་དོན་ལ་བལྟ་བར་བྱ་སྟེ། དེ་ལས་གཞན་པའི་ལས་[4]ཐམས་ཅད་ཀྱང་བཟློག་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། ༨ །

འོ་ན་བཟླས་པ་ནི་བརྗོད་པ་ཡིན་ལ་འདིར་བཟླས་པ་འབའ་ཞིག་བརྗོད་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནམ། འོན་ཏེ་སྐུ་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱང་བསྒོམ་པར་བྱ་ཞེ་ན། དེའི་ཕྱིར་སྔགས་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་དམིགས་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ནི་རྣལ་འབྱོར་རོ། །རྣལ་འབྱོར་དེ་ཡང་རྣམ་པ་གསུམ་སྟེ། བྱེ་བྲག་གསུམ་མོ། །གང་ལས་ཤེ་ན། གང་གི་ཕྱིར་སྔགས་དང་། དབྱིབས་དང་། ཆོས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་སོ། །དེ་ལ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གསལ་བར་བྱེད་པའི་ངག་ནི་སྔགས་སོ། །ལྷའི་སྐུ་ནི་དབྱིབས་སོ། །སྔགས་ཀྱི་དོན་གྱི་ཡེ་ཤེས་ནི་

---

1 རྒྱ་དཔེར༠ (ནིཡམཿ) ངེས་པའོ།
2 རྒྱ་དཔེར༠ (ཡནྟྲཧྣ) འཕྲུལ་འཁོར་
3 ཙ་བར༠ གཅིག་ནས་གཅིག་ཏུ།
4 རྒྱ་དཔེར༠ (བཱཧྱཀཱམ) ཕྱི་རོལ་གྱི་ལས།

དེ་ལྟར་རྒྱུན་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ། །
རྟག་ཏུ་གོམས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ནི། །
རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་དང་མཉམ་པའང་། །
ཟླ་བ་གཅིག་གིས་དེ་འགྲུབ་འགྱུར། ༧།

ཚོས་སོ། །ཡེ་ཤེས་རྣམ་པ་གསུམ་གྱིས་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྟན་མ་ཐག་པའི་རྣལ་འབྱོར་རྣམ་པ་གསུམ་གྱིས་ཡིན་གྱི་བརྗོད་པ་ཙམ་གྱིས་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །སྲིད་པའི་ཉེས་པས་གོམས་མི་འགྱུར། །ཞེས་བྱ་བ་ལ། སྲིད་པའི་ཉེས་པ་སྡེ་སྡིག་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ལས་གྲོལ་བར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། ༥ །

དེ་ལྟར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་གསུམ་མོ། །རྒྱུན་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཉིན་རེ་ཞིང་ངོ་། །རྟག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐུན་མཚམས་སོ་སོ་ལའོ། །རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའོ། །མཚུངས་པ་ནི་དེ་དང་མཉམ་པའོ། ། འང་གི་སྒྲས་ནི་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་དང་ཡང་མཉམ་པའོ། །དེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མའོ། །འགྲུབ་འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྫོགས་པར་འགྱུར་བ་སྟེ། དེ་ལ་འདིར་ཧེ་རུ་ཀའམ་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་[1]ཀྱི་སྐུར་དེའི་ང་རྒྱལ་གྱིས་བསྒོམས་ལ། རབ་སྔགས་དང་ཧཱུྃ་གི་དབུས་སུ་རྩ་བའི་སྔགས་བཅུག་སྟེ་རིམ་གྱིས་དལ་བུས་བརྗོད་དེ་སྔགས་ཀྱི་དོན་ཉི་མ་དང་ཟླ་བ་ཁ་སྦྱར་བའི་ནང་དུ་ཆུད་པའི་རིག་པའི་ཡི་གེའི་ཐིག་ལེ་ལ་[2]དཔའ་བོའི་ཐིག་ལེ་གཞག་སྟེ། དེ་ལས་བྱུང་བའི་འོད་ཀྱིས་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་སངས་རྒྱས་ཀྱི་རང་བཞིན་དུ་བྱས་ནས་དེ་རྣམས་ཀྱིས་

1 རྒྱ་དཔེར་༠ (ཛྙཱན་ཌཱ་ཀི་ནཱི་ནཱམ) ཡེ་ཤེས་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་
2 རྒྱ་དཔེར་༠ (ཤྲཱི་ཧེ) མགོ་བོ་ལ་

དབང་པོའི་མདོག་དང་ཡང་དག་ལྡན། །
དང་པོའི་ཡི་གེ་བསྒོམ་བྱ་སྟེ། །
རང་གི་རིག་པ་རབ་སྦྱར་ན། །
དེས་འདི་སྨོད་ལ་འགུགས་[1]པར་འགྱུར། ༧།

རང་གི་[2]ལྷའི་སྐུའི་རྣམ་པར་བྱས་ཏེ། དཔའ་བོའི་[3]ཐིག་ལེ་ལས་ཡང་དག་པར་བསྒྲུ་བས་སྟོགས་ཀྱི་དོན་རིག་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་སྟོགས་དང་། དབྱིབས་དང་། ཆོས་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས་ཟླ་བ་དྲུག་ཏུ་བཟླས་པ་བྱས་ན་འདྲ་བའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ། །ཐོབ་ཀྱང་རུང་མ་ཐོབ་ཀྱང་རུང་སྟེ་རིག་པའི་ཡི་གེ་དང་ཡང་དག་པར་རབ་ཏུ་ལྡན་པས་[4]ལས་རྣམས་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ཡང་དག་པར་བསྒྲུབ་པར་བྱ་སྟེ། དེ་བས་ན་རིག་པའི་ཡི་གེ་དང་དེའི་རབ་ཏུ་སྦྱོར་བ་ཡང་དག་པར་བསྟན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར། ༦ །

དབང་པོའི་མདོག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དབང་པོའི་སྒྲས་ནི་ལྷམ་བུ་ཆུ་གཤེར་བསྟན་ཏོ། །དང་པོའི་ཡི་གེའི་ནི་རབ་སྟོགས་སོ། །དེ་བསྒོམས་པ་ནི་གང་གིས་དགུག་[5]པར་བྱ་བའི་དོན་དུ་རབ་ཏུ་སྦྱོར་རོ། །རིག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རིག་པ་དང་ལྡན་པའི་རྣལ་འབྱོར་པའོ། དེས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པས་སོ། །

1 སྣ་༠ འགུག་
2 སྡེ་དཔེར་༠ རང་གི་ མེད།
3 གསེར་༠ དཔའ་བོ་
4 སྡེ་དཔེར་༠ (ཡཐཱསྭམབྲུཾ) ཇི་ལྟར་རང་ཉིད་ངེས་པར་དུ་
5 སྟེ་བསྟན་ནང་དབུག་ཅེས་འདུག་ཀྱང་སྡེ་དཔེར་༠ (ཨཀྲྀཏྣམ) དགུག་པ་ཞེས་པ་ལྟར་ལེགས།

ཨི་གི་གཉིས་པ་དང་ལྡན་པ། །
བསམ་ཞིང་རྣམ་པར་བསྒོམ་བྱས་ན། །
ས་གསུམ་པོ་ནི་མ་ལུས་པ། །
དེ་དག་ཐམས་ཅད་དབང་དུ་འགྱུར། ༥།

འདི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྒྲུབ་བྱའོ། །མོད་ལ་ཞེས་བྱ་བའི་ཉེ་བར་བསྟན་པ་ནི་མྱུར་དུ་ཞེས་བྱའོ། །དེ་དག་གིས་འདི་སྐད་དུ། སངས་རྒྱས་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་གུར་གུམ་གྱི་མདོག་ལྟ་བུ་བྱས་ལ། དཔའ་བོའི་སྣོད་དུ་གུར་གུམ་གྱི་མདོག་ལྟ་བུའི་རབ་སྔགས་བསམས་ཏེ། དེའི་ཐིག་ལེར་དཔའ་བོ་བཀོད་ལ་རབ་སྔགས་ཀྱིས་དཔའ་བོ་[1]ཡང་དམར་པོར་བསྒྱུར་ནས་དཔའ་བོ་ལ་སོགས་པ་རི་མོ་གཉིས་ཕྱུང་ནས་[2]འོད་གཅིག་གི་རྩེ་མོར་ཞགས་པ་དང་གཉིས་པའི་རྩེ་མོར་ནི་ལྕགས་ཀྱུ་བསམས་ཏེ་ཞགས་པས་བསྒྲུབ་བྱའི་མགུལ་པ་བཅིངས་ལ་ལྕགས་ཀྱུས་[3]སྙིང་གར་ཕུག་སྟེ། མྱུར་དུ་འགུགས་པར་བསམས་ལ་སྐད་ཅིག་གིས་ཁུགས་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བསྟན་པར་བྱའོ། ༧ །

ཨི་གི་གཉིས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དབྱངས་ཀྱི་ཨི་གི་གཉིས་པ་སྟེ་ཨཱའོ། །དེ་དང་ལྡན་པ་ནི་དེའི་མགོ་བོར་གཞག་པའི་དཔའ་བོའོ། །ངེས་བསམ་པ་ནི་རང་གི་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་པས་བསྒྲུབ་བྱའི་རྡུལ་ཕྲ་རབ་རྣམས་མདོག་དམར་པོར་བསྒྱུར་བའོ།།

---

1 གསེར་༠ རྒྱ་དཔེར་༠ འོད་ཀྱི།
2 རྒྱ་དཔེར་༠ (अत्र रश्मि ·) འོད་ཟེར་དམར་པོ
3 གསེར་༠ སྙིང་ཁ

ཚངས་དང་ཁྱབ་འཇུག་དབང་པོ་དང་། །
དེ་བཞིན་དབང་པོ་འདོད་དབང་ཕྱུག །
ཡི་ཤེས་ཡི་གེས་བསྐྱིལ་བྱས་ན།[1] །
དེ་དག་ཆུང་མར་བཅས་ཏེ་འགུགས། ༧།

རྣམ་པར་བསྒོམ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྒྲུབ་བྱ་རྣམ་པ་དུ་མ་[2]སྟེ་གང་འདོད་པའོ། །དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་བསྒྲུབ་བྱའོ།[3] །ས་གསུམ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། འདིར་ཡང་དང་ཡང་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་བལྟ་བར་བྱ་སྟེ། འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་མ་ལུས་པ་ཡང་དམ་དུ་འགྱུར་ན། ཕྱོགས་ཆགས་བརྒྱ་དང་སྟོང་ལྟ་སྨོས་ཀྱང་ཅི་དགོས་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །འདི་དག་གིས་ཀྱང་འདི་སྐད་དུ་ལྟ་དྲུག་གི་ནང་ནས་གང་ཡང་རུང་བའི་རྣལ་འབྱོར་ཛ་བའི་ཀུསུམ་ལྟར་དམར་བ་བྱས་ལ། ཡི་གེ་ཨཱ་ཛ་བའི་ཀུསུམ་ལྟར་དམར་བ་ཁ་སྦྱོར་དུ་བཀོད་དེ། དེའི་མགོ་བོར་དཔའ་བོ་བཀོད་ལ་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མདོག་བསྒྱུར་ཏེ། དེ་ཉིད་ཀྱི་འོད་ཟེར་གྱིས་བསྒྲུབ་བྱའི་རྟུལ་ཕྲ་རབ་རྣམས་བཅོས་ལ་ཀང་པའི་དྲུང་དུ་འགྱེལ་བར་བསྒོམས་ཏེ་དབང་དུ་གྱུར་པར་བསམས་ན་དེས་ནི་ཐམས་ཅད་དབང་དུ་འགྱུར་རོ་ཞེས་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། ༨།

ཚངས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། འདོད་དབང་ཕྱུག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་བདུད་དོ།[4] །མི་ཟད་པས་ན་ཡི་གེ་སྟེ་ཐུགས་རྡོ་རྗེའོ། །དེའི་གསང་བའི་ཡི་

---

1 སྣ༠ བྱས་ནས་
2 རྒྱ་དཔེར༠ (བིནྡྷ) ཚོ་ག་
3 རྒྱ་དཔེར༠ (སཱདྷྱ) བསྒྲུབ་བྱའི་ཡན་ལག་
4 རྒྱ་དཔེར༠ (ཨེཏེབྲཏསྨྲཏཡ ཨཱགྲཱཧཱཡཀྟེ) འདིར་ཚངས་པ་ལ་སོགས་པ་དགུག་པའོ།།

ཨི་གེ་ཨ་དང་ཡང་དག་ལྡན། །
སྐུ་གསུང་ཐུགས་ལ་ལེགས་གནས་པ། །
སྦྱོར་བ་རྣམ་གསུམ་བསྒོམ་བྱས་ན། །
གོང་བུ་འགུགས་པའི་མཆོག་ཡིན་ནོ། ༡༠།

གེའི་ཡང་ཨི་གེའོ། །གཞུང་ཁ་ཅིག་ལས་ནི་ཡེ་ཤེས་ཨི་གེ་ཞེས་འབྱུང་སྟེ། ཡེ་ཤེས་ནི་དཔའ་བོ་སྟེ་[1]དེའི་ཨི་གེའོ། །གཉིས་ཀ་ལྟར་ན་ཡང་ཨི་གེ་ཧཱུྃ་ལ་བྱའོ།། དེ་ཡང་དགུག་པ་ལ་ནི་ཛབའི་ཀུསུམ་ལྟར་དམར་བའོ། །དེས་བསྐུལ་བ་ནི་སྲིད་ཅིང་གཏོང་བའོ། །ཇི་ལྟར་བསྐུལ་བར་བྱ་ཞེ་ན། དགུག་པའི་ཚིག་དང་ཕོའི་སྦྱོར་བས་སོ། །གཞན་དག་ནི་ཧཱུྃ་གིས་དབུགས་ནང་དུ་གཞུག་པས་དགུག་གོ་ཞེས་ཟེར་རོ། ཁ་ཅིག་ན་རེ་རྒྱུད་འདི་ལ་དཔའ་བོ་ལས་བྱུང་བའི་འོད་གླང་པོ་ཆེའི་སྣ་ལྟ་བུས་དགུག་པའི་[2]སྦྱོར་བ་བྱའོ་ཞེས་ཟེར་རོ། ༩ །

གོང་བུར་དགུག་པའི་མཆོག་གསུངས་པ། ཨི་གེ་ཨ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཨ་དང་ཨི་གེ་ནི་ཟླས་དབྱེ་བའོ། །དེ་དག་དང་ཡང་དག་པར་ལྡན་པ་ནི་ཨའམ་ཨི་གེ་ཧཱུྃ་དང་ཡང་དག་པར་ལྡན་པའི་སྦྲུབ་པ་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །རྣམ་པ་གསུམ་པ་དང་སྦྱོར་བ་ནི་སྦྱོར་བ་རྣམ་པ་གསུམ་མོ། །སྐུ་གསུང་ཐུགས་ལ་ལེགས་གནས་པ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་ལུས་དང་། མགྲིན་པ་དང་། སྙིང་ག་དག་ཏུ་གནས་པའོ། །དེས་ཀྱང་འདི་སྐད་དུ་ལྷ་དྲུག་གི་ནང་ནས་ཛ་བའི་ཀུསུམ་ལྟ་བུ་གང་ཡང་རུང་བའི་རྣལ་

1 རྒྱ་དཔེར༠ (ཝཱིཪ ཨཀྵརམ྄) ས་བོན་གྱི་ཨི་གེ

2 རྒྱ་དཔེར༠ (སརྦཱཀྲིཥྚ) ཐམས་ཅད་དགུག་པའི

ཡི་གེ་ཁི་དང་ཡང་དག་ལྡན། |
སྐུ་མདོག་དམར་པོ་[1]ཞལ་བཞི་པ། |
ལག་ན་ཐོད་པ་ཆགས་པའི་བདག |
ཁྲེ་བ་འགུགས་པའི་མཆོག་ཡིན་ནོ། ༡༡།

འགྲེར་བྱས་ལ། ཁ་སྦྱོར་གྱི་ནང་དུ་ཨཱའམ་ཡི་གེ་ཧཱུྃ་གི་མགོ་དང་ཐིག་ལེར་དཔའ་བོ་བཀོད་ལ་ཡཾ་ལས་བསྐྱེད་པའི་རླུང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་བསྒྲུབ་བྱ་བསྐྱོན་ཏེ། དཔའ་བོའི་འོད་ཟེར་གྱི་རི་མོ་དམར་པོ་གཉིས་ཀྱིས་[2]རྩེ་མོའི་ཞགས་པ་དང་ལྕགས་ཀྱུ་དག་གི་གོ་རིམས་བཞིན་དུ་མགྲིན་པ་བཅིངས་པ་དང་། སྙིང་ག་ཕུག་སྙེ་བར་སྣང་ལས་མྱུར་དུ་འགུགས་པར་བསམས་ན་སྐད་ཅིག་གིས་ཁྲུགས་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ།[3] ༡༠ །

ཡི་གེ་ཁི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། དེ་དག་གིས་ཀྱང་འདི་སྐད་དུ། ཡི་གེ་ཁི་ལས་སྐུ་མདོག་དཀར་པོ་ཞལ་བཞི་ལ་ཕྱག་ན་ཐོད་པ་བསྣམས་པ་ཆགས་པའི་བདག་ཉིད་དེ་སེམས་ཆགས་པ་དང་ལྡན་པར་བསྒོམས་ལ། མགོ་བོར་[4]བཀོད་པའི་དཔའ་བོ་ལས་འོད་ཟེར་སྤྲུ་གུའི་གཟུགས་ཅན་བསྒྲུབ་བྱའི་གསང་བར་ཞུགས་ཏེ་ཁྲེ་བས་བཀང་ནས་ཐོད་པར་བླངས་པར་བསམས་ན་སྐད་ཅིག་གིས་ཁྲེ་བ་ཁྲུགས་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་སྟོན་ཏོ། ༡༡ །

---

1 འགྲེལ་པར་° དཀར་པོ་
2 གསེར་° ཀྱི་
3 ཅུ་དཔེར་° བསྟན་པ་ཡིན་ནོ་ མེད།
4 དསེར་° ཅུ་དཔེར་° ཁའི་མགོ་བོར་

ཨི་ཀེ་ཙི་དང་ལྡན་པ་ཡིས། །
ཁ་དོག་སེར་པོ་ཀུན་ཏུ་འོད། །
ཏ་ཡི་ཞལ་གྱི་ཚུལ་བྱས་ན། །
ཆང་[1]འཁྱུགས་པ་ཡི་དམ་པ་ཡིན། ༡༢།
ཨི་ཀེ་ར་དང་ཡང་དག་ལྡན། །
ཁ་དོག་དམར་པོ་འོད་ཆེན་པོ། །
ཕྱུག་བཞི་པ་དང་ཞལ་བཞི་པ། །
ཅི་སྲུང་ཚུལ་དུ་ལེགས་གནས་པ། ༡༣།

ཨི་ཀེ་ཙི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། ཨི་ཀེ་ཙི་ཐུང་ངུ་ལས་མདོག་སེར་པོ་འོད་ཟེར་སེར་པོ་དང་ལྡན་པ་ཏའི་ཞལ་ཅན་བསམས་ལ། ཨི་ཀེ་ཙིའི་མགོ་བོར་གནས་པའི་དཔའ་བོའི་འོད་སྣང་པོ་ཆེའི་སྣ་ལྷ་བྱས་ཆང་སྟོད་ཆང་གིས་བཀང་ནས་དྲངས་ཏེ་སྟོད་གང་བར་བསམས་ན་སྐད་ཅིག་གིས་གང་བར་འགྱུར་རོ་ཞེས་སྟོན་ཏོ། ༡༢ །

ཨི་ཀེ་ར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ཀྱང་ཨི་ཀེ་ར་ལས་མདོག་དམར་པོ་ཕྱུག་བཞི་ལ་ཅི་[2]སྲུང་གི་ཞལ་བཞི་དང་ལྡན་པ་གཟི་བརྗིད་ཆེ་ཞིང་ཁྲོ་བའི་བདག་ཉིད་ཅན་དུ་བསྒོམས་ལ། སྔ་མ་བཞིན་དུ་འོད་ཟེར་སྲིན་པོ་[3]ཡིད་མའི་གཟུགས་ལྷ་བྱར་

---

1 སྣ་° ཆབ།
2 གསེར་° ཀླུ་
3 གསེར་° སྲིན་བུ་

ཁྲོ་བའི་[1]སེམས་ཀྱིས་བསྒོམ་བྱས་ན། །
ཁྲག་འཐུགས་པ་ཡི་དམ་པའོ། །
ཡི་གེ་དྲུག་དང་ཡང་དག་ལྡན། །
གནས་དྲུག་ཏུ་ནི་ངེས་སྦྱར་བྱ། ༡༤།
རྣལ་འབྱོར་མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་ཚོགས། །
རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་འགྲུབ། །
མིག་གཉིས་དང་ནི་རྣ་བ་དང་། །
དེ་བཞིན་སྣ་དང་ཡིད་ཉིད་དག ༡༥།

སྒྲོས་པས་བསྒྲུབ་བྱའི་ལུས་ལས་ཁྲག་འདྲེན་བཞིན་པར་བསྒོམས་ན་ཟླ་མ་བཞིན་དུ་འགྱུར་རོ། ༡༣ ༡/༣ །

དེ་ལྟར་རིག་པའི་ཡི་གེ་དྲུག་གི་སྐབས་སུ་རང་གི་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་ཡན་ལག་དྲུག་ལ་དགོད་པ་ཡང་བསྟན་པའི་ཕྱིར། ཡི་གེ་དྲུག་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཡི་གེ་དྲུག་[2]དང་བསྟན་མ་ཐག་པའི་རིག་པའི་ཡི་གེ་དྲུག་གོ། དེ་དང་ཡང་དག་ལྡན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ངེས་སྦྱར་བྱ་ཞེས་བྱ་བ་དང་སྦྱར་ཏེ། རང་གི་ལྷའི་ལུས་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་མའོ། །གང་དུ་ལྡན་པ་ཡིན་ཞེ་ན། གནས་དྲུག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། ཡན་ལག་དྲུག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་ལྟ་བུས

---

1 སྣ་༠ ཁྲོ་བའོ།
2 རྒྱ་དཔེར་༠ (ཕྲེཀ) ཕུལ་

སེང་གེ་རྣལ་འབྱོར་[1]ཕྱག་རྒྱ་ཡི། |
རྣལ་འབྱོར་པ་ཡིས་བཅིང་བར་བྱ། |

ནི་རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་[2]འགྲུབ་པར་འགྱུར་གྱི་གཞན་དུ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། | དེ་ལ་རྡོ་རྗེ་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་[3]ནི་མཁའ་འགྲོ་མ་ལྔ་[4]རྣམས་སོ། །ཡང་ན་[5]རྣལ་འབྱོར་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའོ། །མཁའ་འགྲོ་མའི་བདེ་མཆོག་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་དེ་རྣམས་དང་ལྷན་ཅིག་ཏུ་སྤྱོད་པ་ལས་བྱུང་བའི་བདེ་བའི་མཆོག་དང་ལྡན་པས་སོ། །གནས་དྲུག་པོ་[6]བསྟན་པ་དེ་ཉེ་བར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་མིག་གཉིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཡིད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་སྙིང་གའོ། །དང་གི་སྒྲས་ནི་ལྟེ་དང་ལུས་ཀུང་གཟུང་ངོ། ༡༨ - ༡༥ |

རྣལ་འབྱོར་རྣམ་པ་གཞན་གསུངས་པ། སེང་གེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། སེང་གེ་ནི་དཔའ་བོའོ། །དེའི་རྣམ་པར་རོལ་པ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། །ཕྱག་རྒྱ་ནི་ཉི་མ་དང་ཟླ་བ་ཁ་སྦྱར་བར་བྱའོ། །བཅིང་བར་བྱ་བ་ནི་ཡི་གེའི་ཕྲེང་བ་གསུམ་གྱིས་སྔར་བསྟན་པ་བཞིན་དུ་བཅིངས་པར་བསམ་པའོ།།

---

1 སྣ༠ རྣམ་རོལ་

2 གསེར༠ རྣམ་

3 གསེར༠ མ་ མེད།

4 ཤར་རྡོ་རྗེ་རིགས་ཀྱི་མཁའ་འགྲོ་མ། ལྷོ་རིན་ཆེན་རིགས་ཀྱི་མཁའ་འགྲོ་མ། ནུབ་པད་མ་རིགས་ཀྱི་མཁའ་འགྲོ་མ། བྱང་ལས་ཀྱི་རིགས་ཀྱི་མཁའ་འགྲོ་མ། དབུས་སངས་རྒྱས་རིགས་ཀྱི་མཁའ་འགྲོ་མ།

5 གསེར༠ ཡང་ན་ མེད།

6 རྒྱ་དཔེར༠ (ཥཊ྄སུཁསྠཱནེ) བདེ་བའི་གནས་དྲུག་

སྲོག་དང་རྩོལ་བ་བསྣམས་ནས་སུ། །
བསྒོམས་[1]ན་སྐད་ཅིག་དེ་ལ་འབབ། ༡༨།
འོག་མིན་སྲིད་པའི་མཐར་ཐུག་པར། །
རྒྱུ་དང་མི་རྒྱུའི་འཇིག་རྟེན་བདུན། །
ཐམས་བཅད་ཀྱིས་ནི་དེ་བསྒོམས་ཀྱང་། །
དེ་ནི་རྟོག་[2]པ་མ་ཡིན་ནོ། ༡༩།

རྣལ་འབྱོར་པས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷ་མོ་བཞིས་ཡོངས་སུ་བསྐོར་བའི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་ལ་གནས་པའོ། །སྲོག་དང་རྩོལ་བ་ནི་དབུགས་དབྱུང་བ་དང་འཇུག་པའོ། །བསྣམས་ནས་སུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རིམ་གྱིས་ཤིན་ཏུ་ཕྲ་བར་བྱས་པས་ཤིན་ཏུ་གནས་པར་འགྱུར་རོ། །བསྒོམས་ན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷ་བའི་ཕུག་ནས་དཔའ་བོ་དེ་ཉིད་ལ་བལྟ་བཞིན་པས་བསྒོམ་པའོ། །སྐད་ཅིག་དེ་ལ་འབབ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔའ་བོ་ལ་སེམས་བརྟན་པ་[3]ལས་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མེ་ལྕེ་ལྡང་ཞིང་འབབ་པ་སྟེ་སྣང་བར་བྱེད་དོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། ༡༨ །

ཇི་སྐད་དུ་སྦྱིབས་པར་འབབ་ཞེས་བྱ། འོག་མིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ས་འོག་དང་། ས་སྟེང་དང་། བར་སྣང་དང་། བསམ་གཏན་དང་པོ་དང་། གཉིས་པ་དང་། གསུམ་པ་དང་། བཞི་པ

---

1 སྣ་༠ བསྒོམ་

2 སྣ་༠ རྟོགས་

3 གསེར་༠ བསྟན་པ་

གལ་ཏེ་ཐམས་ཅད་རབ་རྟོགས་ན། །
འགྲོ་བའི་རོལ་པ་རྣམ་པར་འཇིག །

རྣམས་ཡང་དག་པར་བསྡུས་པས་ནི་འཇིག་རྟེན་བདུན་ནོ།[1] །བསམ་གཏན་གསུམ་པོ་ནི་སོ་སོར་རེ་རེ་ཡིན་ལ། བསམ་གཏན་བཞི་པ་ལ་གནས་གཞན་བརྒྱདཔ་ནི་འོག་མིན་[2]ཏེ། དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་གསུངས་པའི་འོག་མིན་གནས་ཀྱི་མཐར་ཐུག་པ་ཞེས་སོ། །དེ་ལ་རྒྱ་བ་ནི་སེམས་ཅན་ནོ། །གཞལ་མེད་ཁང་ལ་སོགས་པའི་གནས་ནི་མི་རྒྱ་བའོ།།

ད་ནི་དཔའ་བོ་དེ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྣང་བཞིན་དུ་མཐོང་བར་[3] བསྟན་པར་བཞེད་ནས། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ནི་སེམས་ཞེས་པ་སྟེ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་དོ། །དེ་བསྒོམས་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འདྲིས་པར་བྱས་པ་སྟེ། རང་གི་སེམས་ཉིད་དེ་དང་དེ་དག་ཏུ་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ནི་རྟོགས་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་[4]ཁོ་ན་ཉིད་མཐོང་བ་མ་ཡིན་ཏེ། བྱིས་པ་རྣམས་ལ་དེའི་ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པའི་ངོ་བོ་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། ༡༦ - ༡༧ །

འགྲོ་བའི་རོལ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྣ་ཚོགས་སུ་རོལ་པ་སྟེ། དེ་དང་དེའི་རྣམ་པ་གཉིས་སུ་བརྟག་པའི་ཕྱིར་རོ། །རྣམ་པར་འཇིག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་གལ་ཏེ་ཀུན་གྱིས་རྟོག་ན་ནི་འགྲོ་བའི་རོལ་པ་དང་པོ་ཉིད་ནས་ཞིག་པར་འགྱུར་ན་ད་ལྟར་གྱི་བར་

---

1 རྒྱ་དཔེར༎ (ནཔུཾསཀམཱུཏྲིསྣུབཏ བཏྣ) འཇིག་རྟེན་གསུམ་མ་ནིང་བཞིན་
2 གསེར༎ འོག་མིན་གནས་གཞན་བརྒྱད་པའི་འོག་ཡིན་ཏེ།
3 གསེར༎ མ་མཐོང་མཐོང་བར
4 གསེར༎ དེའི

དེ་ཕྱིར་ཡེ་ཤེས་འདི་གསང་ཞིང་། །
མི་གསལ་ཡི་གེ་མེད་པའོ། ༡༥།
གང་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱིས་མཁྱེན། །
རྣལ་འབྱོར་གཉིད་དང་ཡང་དག་ལྡན། །
གོང་བུར་སོང་བའི་ཡིད་དེ་ཡིས།[1] །
གཟུགས་གཅིག་ཏུ་ནི་སྒོམ་པར་བྱེད། ༡༦།

ཏུ་དེ་ལྟར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །གང་གི་ཕྱིར་དེ་ལྟ་བུ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཡེ་ཤེས་འདི་གསང་ཞིང་[2]ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། ཡེ་ཤེས་ནི་གཉིས་སུ་མེད་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དཔའ་བོ་ཞེས་བྱ་བའོ། །གསང་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བྱིས་པ་རྣམས་ལ་སྦས་པའོ། །གང་གིས་ཤེ་ན། ཡང་དག་པ་ཡིན་པའི་ངོ་བོ་མ་མཐོང་བའི་འཁྲུལ་པ་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །ཡེ་ཤེས་དེ་[3]ཅི་འདྲ་ཞེ་ན། མི་གསལ་ཡི་གེ་མེད་པ་ཞེས་གསུངས་ཏེ། ངག་གི་ཡུལ་ལས་འདས་པའི་ཕྱིར་ན་མི་གསལ་བའོ། །ཡིད་ཀྱིས་བརྗོད་པའི་ཡུལ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཡི་གེ་མེད་པའོ། ༡༥ །

འོ་ན་དེའི་དོན་དམ་པ་དེ་སུས་ཤེས་ན། སངས་རྒྱས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཇི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རིམ་པ་བཞིན་དུ་སྦྱར་བས་ངེས་པར་གཟུང་བའི་དོན་ཏེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །འོ་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་རང་བཞིན་དེ་ཕྱིས་གཟིགས་ན་ནི་གཞན་

1 སྣར་° དེ་ཡིད་
2 རྒྱ་དཔེར་° གསང་ཞིང་ མེད།
3 རྒྱ་དཔེར་° ཡེ་ཤེས་དེ་ མེད།

སྒོ་དགུ་ལས་ནི་གང་བྱུང་བ། །
རྫས་ཀྱི་བདག་ཉིད་རྣམ་བསྒོམས་ལ། །

གྱིས་ཀྱང་དེ་མཐོང་བར་འགྱུར་ལ། ཅི་སྟེ་རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་གྱི་ཁོ་ན་ལས་མ་ཡིན་ན་ཡང་རྣལ་འབྱོར་དེས་གཞན་དག་གིས་ཀྱང་དེ་མཐོང་བར་འགྱུར་རོ་ཞེ་ན། དེའི་ཕྱིར་རྣལ་འབྱོར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། གཅིག་ཁོ་ནར་གཡོ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་གཉིད་དང་ཆོས་མཐུན་པས་ན་གཉིད་དོ། །འདི་ནི་རྣལ་འབྱོར་ཡང་ཡིན་ལ་གཉིད་ཀྱང་ཡིན་པས་རྣལ་འབྱོར་གཉིད་དོ། །ཡང་དག་པར་ལྡན་པ་ནི་མངའོ།[1] དེ་ཉིད་ཉེ་བར་བསྟན་པ་ནི། གོང་བུར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡིན་ཏེ། གཟུགས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ནོ།[2] །གཅིག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་སྣང་བ་མེད་ཅིང་གསལ་བ་ཙམ་དུ་རོ་གཅིག་པའོ། །གོང་བུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་དག་ཉིད་ཤིན་ཏུ་བསྡུས་པ་སྟེ། ཡུངས་དཀར་ལྟར་ཕྲ་བའི་ཐིག་ལེ་ཙམ་གྱི་གོང་བུར་ཕྲ་མོར་བྱས་པའོ། །དེ་དག་གིས་ནི་དཔའ་བོའི་ཕྱག་རྒྱ་གཟུགས་སུ་བསྒྲུབ་པ་བསྟན་ཏོ། །དེར་སོང་བའི་ཡིད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་གོང་བུ་དེ་ལ་སེམས་གནས་པའོ། །དེ་དག་གིས་རྣལ་འབྱོར་གྱི་གཉིད་ཀྱི་དོན་བསྟན་ཏོ། ༡༨ །

རྣམ་པ་དེ་ལྟ་བུའི་རྣལ་འབྱོར་རྫོགས་པར་བྱེད་པའི་དམ་ཚིག་བསྟན་པའི་ཕྱིར། སྒོ་དགུ་ལས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། རྣམ་བསྒོམས་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་པར་མོས་པར་[3]ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །གང་ཞིག་ལ་ལྷག་པར་

---

1 གསེར་° དེ་མངའ་བའོ།

2 སྣུ་དཔེར་° རང་བཞིན་ནོ། མེད།

3 གསེར་° མོས་པར་བྱ།

རང་བཞིན་མེད་པའི་བློ་ལྡན་པའི། །
རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ཡིས་བཟའ། ༣༠།
མཐེ་བོང་དང་ནི་སྲིན་ལག་གིས། །
ཁ་ཊུ་ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་ནི། །
བདུད་རྩིའི་རང་བཞིན་ལས་བྱུང་བའི། །
རྟག་པའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་འགྱུར། ༣༡།

མོས་པར་བྱ་ཞི་ན། སློ་དགུ་ལས་བྱུང་བའི་རྫས་ལའོ། །ཅི་ཞིག་ཏུ་མོས་ཤེ་ན། བདག་ཉིད་[1]ཅེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། རྟག་པ་དང་། མི་བསྐྱོད་[2]པ་དང་། རིན་ཆེན་དབང་དང་། འཇིག་རྟེན་དབང་དང་། གདོན་མི་ཟ་བའི་རང་བཞིན་གྱི་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་བདག་ཉིད་དུའོ། རང་བཞིན་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པར་མི་སྣང་བས་སོ། །བློ་ལྡན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གསལ་བ་ཙམ་ལ་གནས་པའི་བློ་ཅན་ནོ།[3] །རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྟོགས་པ་མེད་པས་སོ། །བཟའ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་བཟའ་བའི་ཕྱིར་སྤྱོད་པའོ། ༣༠ །

མཐེ་བོང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། སློ་ཊུ་[4]ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མཐེ་བོང་དང་སྲིན་ལག་གི་རྩེ་མོ་ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ་གྲུར་པ་ཞེས་བྱ་བའི་

---

1 རྒྱ་དཔེར། (བུདྡྷཏྭ) སངས་རྒྱས་ཀྱི་བདག་ཉིད་

2 གསེར། མི་སྐྱོད

3 རྒྱ་དཔེར། (ཙེཏསེཏི ཤེཀྵཿ) བློ་ལྡན་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་མའོ།།

4 ཙ་བར། ཁ་རྟ

རྒྱལ་འབྱོར་མའི་དབང་ཕྱུག་མའི་རིག་པ་ཆེན་པོ་ལས་སྦྱོར་བ་གདན་ལ་དབབ་པའི་ལེའུ་སྟེ་གཉིས་པའོ།། །།

དོན་ཏོ། །དེ་བས་ན་དེ་ཉིད་ཀྱིས་དེས་བཟའོ་ཞེས་བྱ་བར་དགོངས་སོ།། ནམ་ཞེ་ན། བདུད་རྩི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། གང་གི་ཚེ་འོག་ནས་བྱུང་བའི་ཚོགས་[1]དེ་དག་ཐམས་ཅད་བདུད་རྩིར་བྱས་པ་དེའི་ཚེ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེས་ཅིར་འགྱུར་ཞེ་ན། རྟག་པའི་དངོས་གྲུབ་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། ༣༡ །

རྒྱལ་འབྱོར་མའི་རིག་པ་ཆེན་མོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བཤད་ཟིན་ཏོ། །དེའི་སྦྱོར་བ་ནི་ཉི་མ་དང་ཟླ་བ་ཁ་སྦྱར་བའི་ཐིག་ལེའི་རྒྱལ་འབྱོར་རོ། །དེ་སྲིད་ཀྱི་རྣམ་པར་རོལ་པ་ལ་སོགས་པའི་བྱེ་བྲག་གང་དག་གིས་ངེས་པར་བྱེད་པ་དེ་ནི་གདན་ལ་ཕབ་སྟེ་བསྟན་པ་ནི་བརྗོད་པའོ།།

དཔལ་སྒྲུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་འགྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྡན་པ་ལས་ངེས་པར་བསྟན་པ་གཉིས་པའོ།། །།

---

1 ཕྱི་དཔེར༠ (བིནྡུ) ཚོགས

ངེས་པར་བསྟན་པ་གསུམ་པ།

དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་བྱ་བ། །
དམ་ཚིག་སྒྲུབ་པའི་དམ་པ་སྟེ། །
རྫས་གཞན་ཚོགས་ནི་བཟའ་བྱ་བ། །
ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་འབྲས་སྟེར་བའོ། ༡།
གང་ཞིག་ཟློས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། །
འབྱུང་པོའི་མི་རྣམས་འགྲུབ་འགྱུར་བ། །
བརྟན་པ་དང་ནི་མྱུར་འགྲོ་ཉིད། །
དེ་བཞིན་དུ་ནི་བ་གླང་ཁྲི། ༣།

དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། རྫས་གཞན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྟན་མ་ཐག་པའི་རྫས་དགུ་ལས་གཞན་པའོ། །ཚོགས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཚོགས་ལས་ཐ་མི་དད་པའི་ཕྱིར་སོ་སོ་རེ་རེ་ཞིང་ཡང་ཚོགས་ཀྱི་སྒྲས་བསྟན་ཏོ། །ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་འབྲས་བུ་ཡིན་པས་ན་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་འབྲས་བུའོ། །གང་ཞིག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་རྫས་ཀྱི་ཚོགས་རྣམས་སོ། །འབྱུང་པོའི་མ་ནི་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་སོ། ༡ - ༣ །

ཆེན་པོར་ཡང་དག་ལྡན་པ་ནི། །
དེ་བཞིན་ཡི་ཤེས་བདུད་རྩི་ལྡ། །
ཆོས་གྲངས་བཅུ་བཞི་བརྒྱད་ལ་ནི། །
ལྷན་ཅིག་བསྐོས་ཏེ་སྦྱར་བྱས་ནས། ༣།
ཉི་མ་བདུན་དུ་ཅི་སྤྱང་གི །
དབུས་སུ་བཞག་ལ་དེ་ནས་བཏོན། །
ལྔ་པོ་དག་ལས་ཡུངས་དཀར་གྱི། །
འབྲས་བུའི་ཚད་ཙམ་རིལ་བུ་བྱ། ༨།
དེ་ནི་རྒྱུད་འདིར་གསུངས་མོད་ཀྱི། །
ཆོས་བརྒྱད་དང་ནི་བཅུ་བཞིའི་བར་དག་ཏུ། །

ཆེན་པོར་ཡང་དག་ལྡན་པ་ནི་ཡོན་ཏན་ཆེ་བས་བརྒྱན་པ་སྟེ། ཤ་ཆེན་པོའོ། །དེ་བཞིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡང་དག་པར་བསྡུ་བའོ། [1]།ལྷན་ཅིག་མ་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སོ་སོར་རོ། །བསྐོམས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བྲུག་པ་སྟེ། ཤ་ལྔ་པོ་སོ་སོ་ཞིང་བདུད་རྩི་ལྔ་ལྔས་བསྐོ་བའོ། །དུས་ཇི་སྲིད་ཅིག་ཏུ་ཞུ[2]ཞེ་ན། ཉི་མ་བདུན་དུ་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། ༣ - ༨ །

མར་ངོའི་ཉི་ཤུ་གསུམ་ནས་ཉི་ཤུ་དགུའི་བར་དུའོ། །སྦྱར་བྱས་ནས་ཞེས་

---

1 རྒྱ་དཔེར༠ (ཙཏུརྡཤཱིམིཏྲཱཎི། ཨཥྚཱམིཏཤྩ ཛམྦུཀཱནྟིརྣརཱདྲཤྱཏེ ཙཱུརྞཀཿ) རིག་བྱེད་ལས་ཆོས་བཅུ་བཞི་ཞེས་བྱ་ལ་སོགས་པ་ཆོས་བརྒྱད་པ་ཐུང་བ་དང་། ཕྱི་སྐྱང་ནི་རིང་བ་ཡིན་ནོ།།

2 གསེར༠ ཞུ། མེད།

ཉི་མ་བདུན་དུ་ལྡན་ཅིག་མིན་བསྒོམ་སྟེ། །
སྦྱར་ནས་ཅི་སྙིང་དབུས་སུ་ལྀར་བཞག་ལ། ༥།
དེ་ལས་བརྟན་ཏེ་ལྡ་པོ་དག་ལས་ནི། །
དངོས་གྲུབ་འབྲས་བུའི་ཚད་ཙམ་རིལ་བུ་བྱ། །
འབྲས་བུ་ཆེན་པོ་རབ་ཏུ་རྟོགས་པས་ན། །
དེ་ནི་རྒྱུད་འདིར་གསུངས་ཀྱི་ཀུན་ཏུ་སྤྲས། ༦།

བྱ་བ་ནི་དེ་ལྟར་བྱས་པའི་འོག་ཏུ་སྦྱར་ནས་སོ། །ཅི་སྙིང་གི་དབུས་སུ་གཞག་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འབྱུང་པོའི་མཚན་མོ་ཅི་སྙིང་གི་ཡན་ལག་མཆོག་ཏུ་གཞག་པའོ། །དེ་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་ལྟར་བསྒོམས་པ་དང་གཞག་པའི་རྫས་ལས་སོ། །ཡུངས་དཀར་གྱི་འབྲས་བུའི་ཚད་ཙམ་ཞེས་བྱ་བ[1]ནི་ཡུངས་ཀར་གྱི་ཚད་ཙམ་མོ། ༥ །

ཅི་ལས་བྱེད་ཥེ་ན།[2] ལྡ་པོ་དག་ཅེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། ཥ་ལྡ་པོ་དག་ལས་སོ། །རྒྱུད་འདིར་གསུངས་ཀྱི་ཞེས་བྱ་བ་ལ། ཚད་ནི་ཉེ་བར་མཆོན་པ་སྟེ་ཚོ་ག་ཡང་གཟུང་བར་བྱའོ། །དེ་བས་ན་ཚད་ལ་སོགས་པ་འདིར་རྫོགས་པར་གསུངས་སོ། །ཀུན་ཏུ་སྤྲས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྒྱུད་གཞན་དུ་ཐམས་ཅད་རྫོགས་པར་གསུངས་པའོ།[3] །ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། འབྲས་བུ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། རྟོགས་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འབྲས་བུ་ཆེན་པོར་ཥེས་པར་བྱ་སྟེ།[4]

1 རྒྱ་དཔེར་༠ (སིདྡྷཱརྠཕལཱཤྲིཏེ) འབྲས་བུ་གྲུབ་པའི་དོན་དུ་ཞེས་བྱ་བ་
2 རྒྱ་དཔེར་༠ (ཀྲཱནི པུནསྟཱནི ཉཱུཊྲིདྲུཏ) རྫས་དེ་དག་ཅི་ཞིག་ཞེ་ན་གསུངས་པ།
3 རྒྱ་དཔེར་༠ (ནསམསུཀྲྃ) མ་གསུངས་སོ།
4 རྒྱ་དཔེར་༠ (མཧཱཕལཱནི ཏཱནི ཛྙཱཏེཥུ ཀུརྱཱ མཧཱཕལཱནི) འབྲས་བུ་ཆེན་པོས་ཥེས་པར་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །ཇི་ལྟར་འབྲས་བུ་ཆེན་པོར་ཥེས་ཞི་ན།

འབྲས་བུ་ཆེན་པོ་སངས་རྒྱས་ཀྱིས། །
ཐམས་ཅད་དུ་ནི་སྦས་པའོ། །
དེ་ནས་སྒྲུབ་ཐབས་འབྱུང་བའོ། །
ཡིད་ཀྱི་པད་མ་བསམ་བྱ་བ། ༧།
ཁ་དོག་དམར་པོ་ཀུན་འོད་ལ། །
ལྔ་མོ་བཞི་དང་ཡང་དག་ལྡན། །

ཕུང་པོ་ལྔ་པོ་ཡི་ཤེས་ལྔས་བསྒོམས་ཤིང་ཙེ་སྲུང་[1]གི་ཡན་ལག་མཆོག་ཁ་སྦྱོར་གྱི་སྟོད་དུ་གནས་པའི་དཔའ་བོ་དང་མཉམ་པར་རྟོགས་པས་སོ། ༦ །

དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེའི་འོག་ཏུའོ།། རྒྱུད་འདིར་སྒྲུབ་པའི་[2]ཐབས་འབྱུང་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། སྒྲུབ་པའི་ཐབས་ཀྱི་ལམ་གང་གིས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དཀྱིལ་འཁོར་དང་བཅས་པ་སྒྲུབ་ཅིང་མཉེས་པར་བྱེད་པར་གྱུར་པའི་སྐབས་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །པད་མ་བསམ་བྱ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་སྣང་བ་མེད་པར་བསྒོམས་པས་འགྲོ་བ་རྣམས་ནམ་མཁའ་ལྟར་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་བྱས་ཏེ། རྡོ་རྗེའི་རང་བཞིན་གྱི་ས་གཞི་བསམས་ནས་ཕྱོགས་མཚམས་རྣམས་སུ་འཇིགས་པར་བྱེད་པའི་དུར་ཁྲོད་བརྒྱད་བལྟས་ལ། དེའི་དབུས་སུ་ཁང་བུ་བརྩེགས་པའི་ནང་དུ་ཆུད་པའི་པད་མ་འདབ་མ་བརྒྱད་པའམ་བཞི་པ་བསམ་པའོ། ༧ །

ཁ་དོག་དམར་པོ་ཀུན་འོད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་མདོག་དམར་ཞིང་འོད་དམར་པོ་

---

1 གསེར་༠ ཤྲི་ཤྲིང་།
2 རྒྱ་དཔེར་༠ ཐབས། མེད།

སངས་རྒྱས་གཟུགས་ཀྱིས་ཉེར་བརྒྱན་པའོ། །
ཤར་དུ་ཨུཏྤལ་སྔོ་འོད་མདོག ༤།
ལྷོ་རུ་སེར་པོ་ལྷ་བུའོ། །
ནུབ་ཏུ་དཀར་དང་དམར་བའི་འོད། །
བྱང་དུ་མ་གད་¹འོད་ཡིན་ནོ། །
འབར་བའི་ཕྲེང་བས་འཁྲིགས་པ་དང་། །
ཞལ་བཞི་ཕྱག་བཞི་སྤྱན་གསུམ་མཛེས། ༧།

དང་བཅས་པའོ། །ཡིད་ཀྱིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔའ་བོར་གྲགས་པ་སྟེ། ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་པའི་ཡིད་ཀྱི་ཐིག་ལེ་པད་མའི་²ཀརྞིཀར་གནས་པ་ལས་ཕྱོགས་བཞིའི་འདབ་མ་རྣམས་སུ་ཡང་སྤྲོས་པས་མཚན་པའོ། །ལྷ་མོ་བཞི་དང་ཡང་དག་ལྡན།། ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཤར་ཕྱོགས་ལ་སོགས་པའི་འདབ་མ་རྣམས་ཀྱི་ཐིག་ལེ་རྣམས་ལས་གོ་རིམས་བཞིན་དུ་རྡོ་རྗེ་དང་། ནོར་བུ་དང་། པད་མ་དང་། ལས་ཀྱི་རིགས་ཀྱི་དབང་པོ་མཐའ་ཡས་པའི་རིགས་དང་བཅས་པར་སོ་སོར་མཐའ་ཡས་པའི་ཕྱོགས་སུ་སྤྲོས་ཏེ་དེ་དག་བསྡུས་པ་ལས་བྱུང་བའི་རྡོ་རྗེ་དང་། རིན་པོ་ཆེ་དང་། པད་མ་དང་། སྣ་ཚོགས་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་འདབ་མ་དེ་རྣམས་ཀྱི་གདན་ལ་བཀོད་པའོ། །སངས་རྒྱས་གཟུགས་ཀྱིས་ཉེར་བརྒྱན་པ། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། སངས་རྒྱས་ནི་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པའོ། ³།གཟུགས་ནི་དཔལ་

---

1 སྣ་༠ ར་གད།
2 རྒྱ་དཔེར་༠ པད་མའི་ མེད།
3 རྒྱ་དཔེར་༠ (ཏསྱ) དེའི་གཟུགས་

ཧེ་རུ་ཀའི་སྐུ་སྟེ། དེ་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བདག་པོར་གྱུར་པས་ཉེ་བར་བརྒྱུད་པའོ།། དེ་ཡང་ལྷ་མོ་དེ་རྣམས་ཀྱིས་རྩ་བའི་ཡིད་ཀྱི་[1]ཐིག་ལེ་ལ་འོག་ནས་འབྱུང་བའི་སྐྱུས་བསྐུལ་བར་གྱུར་པས་ས་བོན་གཉིས་ཀྱི་རྣམ་པར་གྱུར་པ་ལ་དེ་ལས་རིགས་ལྔའི་དབང་པོ་དེའི་རིགས་རྣམས་ཕྱོགས་མཚམས་རྣམས་སུ་ཁྱབ་པར་སྤྲོས་ཏེ། དེ་རྣམས་ཡང་དག་པར་བསྡུས་པའི་ས་བོན་གཉིས་པོ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་སངས་རྒྱས་མཁའ་འགྲོ་མས་ཡོངས་སུ་འཁྲུད་པའི་དཔལ་[2]ཧེ་རུ་ཀས་ཉེ་བར་བརྒྱུད་པའོ།། སངས་རྒྱས་ཀྱི་གཟུགས་ཅི་འདྲ་བ་ཞིག་གིས་ཤེ་ན། ཤར་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཞལ་བཞི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཕྱོགས་བཞིར་བསྟན་པའི་[3]ཞལ་བཞིའོ།། ཕྱག་བཞི་དང་སྤྱན་གསུམ་ནི་གོ་སླའོ། །ཞལ་གང་གི་མདོག་གང་ཡིན་པ་བསྟན་པའི་ཕྱིར། ཤར་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞལ་ནི་ཨུཏྤལ་སྔོན་པོའི་མདོག་གོ །ལྷོ་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞལ་ནི་སེར་པོའོ། །ནུབ་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞལ་ནི་དཀར་ཞིང་[4]དམར་བའོ། བྱང་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞལ་ནི་ལྗང་གུ་[5]སྟེ། རྩ་བའི་ཞལ་གྱི་མདོག་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་སྐུ་མདོག་ཀྱང་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རབ་ཏུ་གྲགས་པ་ཉིད་དོ། །འབར་བའི་ཕྲེང་བས་འཁྲིགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ། འཇིག་[6]པའི་དུས་ཀྱི་མེ་ལྕེའི་ཕྲེང་བ་ལྟ་བུའི་འོད་ཀྱིས་ཀུན་ཏུ་འཁྲིགས་པ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། ༨ - ༦ །

---

1 གསེར༠ ཡིད་ཀྱིས། མེད།
2 རྒྱ་དཔེར༠ (སྒྲགབཏྟ) བཅོམ་ལྡན་འདས་དཔལ་...
3 རྒྱ་དཔེར༠ ཕྱོགས་བཞིར་བསྟན་པའི། མེད།
4 རྒྱ་དཔེར༠ དམར་བ་ མེད།
5 གསེར༠ ལྗང་ཁུ། རྒྱ་དཔེར༠ (རཀྟབརྣ) དམར་པོ་
6 གསེར༠ འཇིགས།

ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ལྷ་མོ་ནི་སྤྱན་གསུམ་པ་ཕྱག་གཡོན་ན་ཁཊྭཱཾ་ག་དང་། དྲིལ་བུ། གཡས་ན་རྡོ་རྗེ་དང་། ཐོད་པ་བསྣམས་པ་བསམ་མོ།། ལྷོ་ཕྱོཊ་ཀྱི་ལྷ་མོའི་ཕྱག་ན་མདུང་རྩེ་གསུམ་པ་དང་། རིན་པོ་ཆེ་དང་། བ་དན་དང་། ཅེ་སྤྱང་བསྣམས་པའོ། །ནུབ་ཕྱོགས་ཀྱི་ལྷ་མོའི་ཕྱག་ན་གཞུ་དང་། མདའ་དང་། སྣ་ཚོགས་པད་མ་དང་། ཐོད་པ་བསྣམས་པའོ། །བྱང་ཕྱོགས་ཀྱི་ལྷ་མོའི་ཕྱག་ན་རལ་གྲི་དང་། ཞགས་པ་དང་། རྡེའུ་ཆུང་དང་། ཐོད་པ་བསྣམས་པའོ། ༡༠ །

ཕྱག་གཡོན་ན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་ལྷ་མོ་རྣམས་ཀྱི་མཚན་མ་གསུངས་པ་སྟེ། འདིའི་ཕྱག་གཡོན་ན་ཁཊྭཱཾ་ག་དང་དྲིལ་བུ་ཡོད་པས་ན་ཕྱག་གཡོན་ན་ཁཊྭཱཾ་ག་དང་དྲིལ་བུའོ། །དེ་བཞིན་དུ་རྡོ་རྗེ་དང་ཐོད་པ་བསྣམས་ཞེས་བྱ་བ་ལ། རྡོ་རྗེ་དང་ཐོད་པ་དག་འདིའི་ཕྱག་གཡས་ན་མངའ་བས་ན་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། །ཤར་ཕྱོགས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་འདབ་མའིའོ། །ལྷ་མོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བྱང་ཕྱོགས་ལ་སོགས་པའི་བར་དུ་ཡང་སྦྱར་བར་བྱའོ། །འདིར་དང་པོར་དཔལ[1]་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་ནས་བཟུང་སྟེ། བྱང་ཕྱོགས་ཀྱི་བར་དུ་གོ་རིམས་བཞིན་དུ་རིན་ཆེན་མཁའ་འགྲོ་མ་དང་། པདྨ་མཁའ་འགྲོ་མ་དང་། སྣ་ཚོགས་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ཡིན་ནོ། །ལྷོ་ཕྱོགས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། མདུང་རྩེ་གསུམ་པ་དང་། རིན་པོ་ཆེ་དང་། བ་དན་དང་། ཅེ་སྤྱང་རྣམས་འདིའི་ཕྱག་ན་མངའ་བས་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། ནུབ་ཕྱོགས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་[2]སོགས་པས་ཀྱང་གཞུ

1 རྒྱ་དཔེར་༠ དཔལ་ མེད།
2 རྒྱ་དཔེར་༠ (སམྤུཊེ ཌིཀྐིཥཱུ) བདུན་པའི་དོན་དུ་གསུམ་པའོ།

སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་རྡོ་རྗེ་ནི། །
དེ་ཡི་དབུས་སུ་བསམ་པར་བྱ། །

དང་། མདའ་དང་། སྣ་ཚོགས་པདྨ་དང་། ཐོད་པ་ཅན་བསྟན་ཏོ། །བྱང་ཕྱོགས་[1]ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་དོན་ཀྱང་རལ་གྲི་དང་། ཞགས་པ་དང་། རྡོའུ་ཆུང་དང་། ཐོད་པ་རྣམས་འདིའི་ཕྱག་ན་མངའ་བས་ན་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ།། དེ་དག་ཀྱང་།

འབར་བའི་ཕྲེང་བས་འཁྲིགས་པ་དང་། །
ཞལ་བཞི་ཕྱག་བཞི་སྤྱན་གསུམ་མཛེས། །

ཞེས་བྱ་བ་དང་སྦྱར་ཏེ། གཙོ་བོ་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་འཁོར་[2]ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དེ་དག་གི་མདོག་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་ཞལ་གྱི་རྗེས་སུ་འབྲེལ་[3]བར་བྱ་སྟེ། ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ནི་སྔོན་མོའོ། །ལྷོ་ཕྱོགས་ཀྱི་ནི་སེར་མོའོ། །ནུབ་ཕྱོགས་ཀྱི་ནི་དཀར་ཞིང་དམར་བའོ།[4] །བྱང་ཕྱོགས་ཀྱི་ནི་སྔོ་བསངས་མ་ཡིན་ལ་ཞལ་གྱི་མདོག་ཀྱང་དེ་བཞིན་ནོ། །འོན་ཀྱང་རྩ་བའི་ཞལ་ནི་སྐུ་མདོག་དང་མཐུན་པ་ཡིན་ལ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་ཞལ་གྱི་གནས་སུ་ནི་ཞལ་སྔོན་པོ་དགོད་པར་བྱའོ། ༡༠ །

བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་གནས་དང་མཚན་མ་གསུངས་པ། སྐུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་པ། སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་རྡོ་རྗེ་ནི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་སྟེ་དེ་བསམ

---

1 རྒྱ་དཔེར་༠ (ཁཎ྄གིཊྚཱི) རལ་གྲི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི།
2 རྒྱ་དཔེར་༠ (གུཎྜཱཎྜཱམ) ཡོན་ཏན།
3 གསེར་༠ འབྲེང་།
4 རྒྱ་དཔེར་༠ (སིདྡབཊྚ) དཀར་པོའོ།

ཐོད་པ་ཉིད་དང་ཁ་ཊྭཱཾ་ག །
དེ་བཞིན་གཞུ་[1]དང་མདའ་ཉིད་དོ། ༡༡།
དང་པོའི་ཕྱོགས་དང་ཡང་དག་ལྡན། །
བསྒོམས་ན་སྐད་ཅིག་དེ་ལ་འབར། །
དེ་ལྟར་རྣལ་འབྱོར་པས་བསྒྲུབས་ན། །
རྫས་ཀྱི་དངོས་གྲུབ་རབ་ཏུ་སྟེར། ༡༢།

པའོ། །དེའི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་པདྨ་དམར་པོའོ། །དབུས་སུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཀརྞིཀ་ལའོ། །ཐོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། དེའི་ཕྱག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་མའོ། །དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་སངས་རྒྱས་མཁའ་འགྲོ་མ་ཡང་དེ་བཞིན་ཏེ། འོན་ཀྱང་སྐུ་མདོག་དམར་ཞིང་དེ་དང་ཞལ་སྦྱོར་བ་ཕྱག་གཉིས་ཀྱིས་མཁྲིན་པ་ནས་འཁྲུད་པའོ། ༡༡ །

དམ་ཚིག་མ་གཏོགས་[2]པར་དངོས་གྲུབ་འགྲུབ་པར་མི་འགྱུར་བས་དམ་ཚིག་སྔར་བཤད་པའི་ཕྱིར།[3] དང་པོའི་ཕྱོགས་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དང་པོ་ཕྱོགས་ནི་རབ་ཕྱོགས་སོ། །དེ་དང་ཡང་དག་ལྡན་ནི་[4]རྫས་འབར་བར་འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་དང་འབྲེལ་ཏོ། །བསྒོམས་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མན་ངག་སྟེ། ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་བསྒོམས་པར་འགྱུར་ནའོ། །རྫས་ཞེས་བྱ་བ

---

1 སྡེ་༠ ཤུ།
2 གསེར་༠ མ་རྟོགས།
3 རྒྱ་དཔེར་༠ (ཕྲཊྣལནམཱུཏྤཱུཏུམཱུཏ) འབར་བ་བསྟན་པའི་ཕྱིར་སྨྲས་པ།
4 རྒྱ་དཔེར་༠ (ཤམཡནྡྲབུམ྄ ·) དམ་ཚིག་གི་རྫས་

རྣལ་འབྱོར་མ་ཡི་གྲུབ་སྦྱོར་བས། །
འཕྲུལ་དུ་ཡིད་ཆེས་ཡང་དག་འཇུག །
ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ནི་མི་མཐོང་ཞིང་། །
སྟོང་ཕྲག་གཅིག་ཏུ་སྣང་བར་འགྱུར། ༡༣།

ནི་དམ་ཚིག་གི་ཛས་སོ།[1] །བསྒྲུབ་ན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྐྱེད་པའོ། ཛེ་ལྷ་བུར་བསྐྱེད་ཅེ་ན། དངོས་གྲུབ་འབྲས་བུ་སྟེར་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་སོ། །དེ་སྐད་དུ་ཡང་དཔལ་གསང་བ་འདུས་པ་ལས་ཀྱང་།[2]

སྔགས་རྣམས་ཀུན་གྱི་ཡི་གེ་ཨོཾ། །
བསྒོམས་ན་སྐད་ཅིག་དེ་ལ་འབབ། །

ཞེས་གསུངས་སོ། ༡༣ །

འབར་བའི་ཕན་ཡོན་གསུངས་པ། རྣལ་འབྱོར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། རྣལ་འབྱོར་ནི་རྣལ་འབྱོར་པ་སྟེ། འདིས་འབྱོར་བ་དང་རྣལ་འབྱོར་མ་གྲུབ་པར་གྱུར་པ་དག་ཡོད་དོ་ཞེས་སྐྱེ་བོ་རྣམས་ཀྱི་ཡིད་ཆེས་པ་འཇུག་པར་འགྱུར་ཏེ། འབར་བའི་མཐུ་དང་ལྡན་པའི་དཔེ་སྟོན་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །མི་སྣང་བ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་མཐུ་གསུངས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་སྟོང་ཕྲག་གཅིག་ཏུ་སྣང་བར་འགྱུར། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་གླིང་བཞི་པ་སྟོང་གི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ནི་སྟོང་ཕྲག་གཅིག་གོ །དེ་གཅིག་ཏུ་སྣང་བ་ནི་བདག་པོར་གྱུར་པ་དང་། གཞན་གྱི་དོན་བྱེད་པར་གྱུར་པའོ། ༡༣ །

---

1 གསེར༠ བསྒྲུབ་ན……ཛས་སོ། བར་མེད།
2 སྡེ་བཀའ༠ རྒྱུད༠ ཅ༠ ༡༢༥ ན ༧ བསྒོམས་ན་དེ་མ་ཐག་ཏུ་འབབ།

སངས་རྒྱས་ཀུན་ལས་ཕྲོགས་པ་དང་། །
ལྷ་ཡི་བུ་མོ་མཆོག་ལ་སྤྱོད། །
གང་གཱའི་བྱེ་སྙེད་སངས་རྒྱས་རྣམས། །
ཉིད་ཀྱི་རྡོ་རྗེའི་གནས་བཞུགས་པ། ༡༤།
ལག་ཏུ་སྐྱུ་རུ་ར་བཞག་བཞིན། །
རྡོ་རྗེའི་མིག་གིས་མཐོང་བར་འགྱུར། །
གང་གའི་བྱེ་སྙེད་ཞིང་དག་ཀྱང་། །
སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་དང་། ༡༥།

གྲུབ་པ་ཀུན་ལས་[1]ཞེས་བྱ་བ་ནི་རིག་པ་འཛིན་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་སྟེ་བུ་མོ་ཞེས་བྱ་བ་དང་འབྲེལ་ཏོ། །རྡོ་རྗེའི་གནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སངས་རྒྱས་དེ་དག་ཉིད་ཀྱི་སྟེ་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་ཞིང་ངོ་། །ཡང་དག་གནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་དག་ཉིད་ཀྱི་འཁོར་རོ། །བཅས་པ་ནི་རྡོ་རྗེའི་གནས་དེ་དང་[2]ཡང་དག་གནས་དེ་དག་དང་ལྡན་ཅིག་ཏུའོ། ༡༤ །

རྡོ་རྗེའི་མིག་ནི་རྡོ་རྗེའི་སྤྱན་གྱིས་ཏེ། ལྷའི་མིག་གི་མངོན་པར་ཤེས་པས་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །ལག་ཏུ་[3]ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་རང་གི་ལག་མཐིལ་དུ་

---

1 ཙ་བར་༠ སངས་རྒྱས་ཀུན་ལས།

2 གསེར་༠ གནས་དང་།

3 སྣ་དཔེར་༠ (ཤྭཏྟེ) རང་གི་ལག་ཏུ།

དངོས་པོ་ཀུན་གྱི་བདག་ཉིད་གནས། །
སེམས་ཀྱི་གར་ལས་བྱུང་བ་མཁྱེན། །
[1]ཨེ་ཧི་ཧོ་བཟློག་སྦྱོར་བ་ཡིས། །
སྔགས་ནི་དེ་རུ་རྣམ་བསྒོམ་བྱ། ༡༧།

བཞག་པའི་སྐུ་རུ་ར་གཅིག་ཛི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། [2]ཞིང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་སྟེ། དེར་གནས་པའི་སེམས་ཅན་རྣམས་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། སྐུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། སྐུའི་ཐུགས་ནི་དབང་པོའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམས་སོ། །གསུང་ཐུགས་ནི་ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་སྟེ། བརྗོད་པ་དང་བཅས་པའི་ཕྱིར་རོ། །མཚན་ཉིད་ནི་དེ་རྣམས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནོ། །མཁྱེན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡིད་ཀྱི་རྟོགས་པའོ། །ཇི་ལྟར་རྟོགས་ཤེ་ན། ཀུན་གྱི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་ཏེ་དངོས་པོ་ཀུན་གྱི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་སོ། །དེ་ཅི་ཞིག་ཅེ་ན། སེམས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། སེམས་ཀྱི་གར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེའི་སེམས་ཏེ། གཞན་གྱི་སེམས་ཤེས་པའི་མངོན་པར་ཤེས་པ[3]ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །ཇི་ལྟར་རྟོགས་ཤེ་ན། ཀུན་གྱི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་ཏེ་རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད་ལ་བདག་ཉིད་རང་གི་ལྷའི་རྣམ་པར་བསྒོམ་པའོ།།[4]

---

1 ཨེ་ཧི་ཧོ་ཟློག་སྦྱོར་བ་ཡིས། ཞེས་པ་ནས་ སྒོ་དགུ་ལས་ནི་བྱུང་བའི་རྫས། །ཞེས་པའི་བར་གྱི་ ཀ་རྟགས་ཅན་གྱི་རྩ་བའི་རྒྱ་དཔེའི་འགྲེལ་པ་མ་རྙེད་སྐབས་སྒྱུར་གསོ་བྱས་མེད།

2 རྒྱ་དཔེར་༠ (ཀཱཡབཱཀཙིཏྟལཀྵཎམ) སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་མཚན་ཉིད། ཞིང་…དོན་ཏོ། བར་མེད།

3 རྒྱ་དཔེར་༠ མངོན་པར་ཤེས་པ། མེད།

4 གསེར་༠ སེམས་ཀྱི་གར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེའི་སེམས་ཤེས་པའི་མངོན་པར་ཤེས་པའི་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། གར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་གར་མཁན་དང་ཆོས་མཐུན་པས་ན་གར་ཏེ་རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད་ལ་བདག་ཉིད་རང་གི་ལྷའི་རྣམ་པར་བསྒོམས་པའོ།།

རྡོ་རྗེ་ཆུ་དང་ཡང་དག་ལྡན། །
རིལ་བུ་རེ་རེ་བཟའ་བར་བྱ། །
ཡི་གེ་བརྒྱད་ཀྱི་མཐའ་ལྡན་པ། །
ཨུ་དང་ཐིག་ལེར་བཅས་པ་ནི། ༡ ཀ །

འདི་ལ་དེ་ལས་བྱུང་བ་ཡོད་པས་ན་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། །དམ་ཚིག་གི་རྫས་སྒྲུབ་པ་ཙུང་ཟད་ཅིག་གསུངས་ནས་དེའི་ཚོ་ག་གཞན་བསྟན་པའི་ཕྱིར་ཡི་གེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ༡༥ - ༡༦ །

[1]དེ་རུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དམ་ཚིག་སྦྱར་བ་ལའོ། །སྔགས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡི་གེ་གསུམ་གྱི་སྔགས་སོ། །གོ་བཟློག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གོང་དུ་ཡི་གེ་རྣམས་ཀྱིས་སྦྱོར་བ་རིམ་པ་ལས་བཟློག་པ་སྟེ། ཧཱུྃཨཱཿཨོཾ་ཞེས་བྱ་བའོ། །རྣམ་བསྒོམ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཇི་སྐད་དུ། དཔལ་གསང་བ་འདུས་པ་ལས།[2]

རྡོ་རྗེ་ཧཱུྃ་ལས་བྱུང་བ་རུ། །
བར་སྣང་གནས་སུ་རྒྱུད་པར་བསམ། །
པདྨ་ཨ་ལས་བྱུང་བ་ནི། །
དེ་ཡི་འོག་ཏུ་བསྒོམ་བྱས་ལ། །
བདུད་རྩི་ཨོཾ་གྱིས་མཆོད་པ་ནི། །
དེ་ཡི་ནང་དུ་བཞག་པར་བྱ། །ཞེས་གསུངས་སོ། ༡ ཀ

1 སྡེ་དཔེར་༠ དེ་རུ་་་ནས་་་ངེས་པར་ལེགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །ཞེས་པའི་བར་མེད།
2 སྡེ་བཀའ་༠ རྒྱུད་༠ ཅ་ ༡༥༣ བ ༦

མཐའ་རུ་ཡང་དག་སྦྱར་བྱས་ལ། །
སྔགས་ནི་ཀུན་ཏུ་བརྗོད་བྱ་སྟེ། །
གུཧྱབཛྲཨཀྵིཧཱུྃ་ཞེས་བྱའོ། །
རྣལ་འབྱོར་མ་ཀུན་སྦྱོར་བ་ཡིས། ༣ ཀ
དང་པོའི་ཡི་གེ་ཡང་དག་ལྡན། །
གལ་ཏེ་རྡོ་རྗེ་ཅན་གྱིས་གྲུབ་འདོད་ན། །
ལན་བདུན་མངོན་སྤྱོ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཡིས་བཟླ། ༣ ཀ
ཡི་གེ་གསུམ་མཐའ་ཞེས་བྱ་སྟེ། །
བརྒྱད་ཀྱི་མཐའ་མར་ལེགས་གནས་པ། །

རྡོ་རྗེའི་རྒྱ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཆང་ངོ་། །བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་དོན་དུ་བརྗོད་པའི་སྔགས་བསྟན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར། བརྒྱད་ཀྱི་མཐའ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཡི་གེ་བརྒྱད་ཀྱི་མཐའ་ནི་ཧའོ། །ལྡན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཨུ་དང་ཞེས་བྱ་བ་དང་ཐིག་ལེ་དོ། །མཐའ་ནི་ཀུན་གྱི་རྗེས་ལའོ། །ཀུན་ཏུ་བརྗོད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་དལ་བར་བཟླས་པའོ། །གསང་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དམ་ཚིག་གི་རྫས་སོ། །ཉེ་བར་བརྟགས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མངོན་དུ་ཡོངས་སུ་བརྟགས་པའོ། །འདི་ལྟར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འོག་ནས་སྟོན་པའི་ཚིགས་སོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་ཀུན་སྦྱོར་བ་ཡིས། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་ལྔའི་ནང་ནས་གང་ཡང་རུང་བའི་སྦྱོར་བས་སོ། ༣ ཀ
སྔགས་ཇི་ལྟ་བུ་ཞེ་ན། དང་པོའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དང་པོའི་ཡི་གེ་ནི་ཨོཾ་སྟེ། དེ་དང་ཡང་དག་པར་ལྡན་པ་ནི་དབང་པོ་ཉིད་དུ་སྦྱར་བའོ། །རྡོ་རྗེ་ཅན་གྱིས་གྲུབ་འདོད་ན། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པའི་དངོས་

ཨུ་དང་ཐིག་ལེར་[1]ཡང་དག་ལྡན། |
ཡི་གེ་མཆོག་ཏུ་གྱུར་པའི་གནས། ༨ཀ
ཡི་གེ་དང་པོ་[2]སྦྱོར་བ་ཡིས། |
ཧཱུྃ་ཞེས་བྱ་བ་ཡང་དག་སྦྱར།[3] |

གླུབ་འདོད་ནའོ། །ལན་བདུན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གོ་སླའོ། །རྣལ་འབྱོར་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་ཅན་ནོ། །ཅི་སྟེ་བྱིན་གྱིས་རློབ་པའི་སྔགས་འདི་ཡི་གེ་དུ་ཞིག་ཅེ་ན། ཡི་གེ་གསུམ་མཐའ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །འོ་ན་ཡི་གེ་གཉིས་ནི་སྔར་གསུངས་ན་ཡི་གེ་གསུམ་པའི་གནས་ནི་གང་། ངོ་བོ་ནི་གང་ཞིག མཐའ་རུ་ཙ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པའི་[4]ཡི་གེ་དག་དང་ཉེ་བར་དེ། དབུས་སུ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །ཙ་ནི་བསྡུ་བའོ། །ཙ་དང་འབྲེལ་བའི་ཨ་ནི་གསུམ་པའོ། །བསྟན་པའི་སྦྱོར་བ་དང་སྡོམ་པའི་ཚིག་བསྟན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར། བརྒྱད་པའི་མཐའ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། སྡེ་མཚན་བརྒྱད་ཀྱི་མཐར་གནས་པ་ནི་ཏ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །ཇི་ལྟ་བུར་ཞེ་ན། ཨུ་དང་ཐིག་ལེར་ཡང་དག་ལྡན་ནོ། །མཆོག་ཏུ་གྱུར་བའི་གནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པའི་ས་བོན་དུ་འགྱུར་པས་སོ། ༣ - ༨ ཀ

ཡི་གེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ། མི་འགྱུར་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་སྙེ་དེས་དེ་བསྐྱེད་པར་བྱའོ།། ཇི་ལྟར་ཞེ་ན། དང་པོའི་སྔགས་དང་ཡང་དག་པར་ལྡན་པ་དེ། དེའི་ནོར་བུ

---

1 སྣ་o ཐིག་ལེ།
2 སྣ་o དང་པོར།
3 སྣ་o སྦྱོར།
4 གསེར་o མཐའ་ནི་བསྟན་པའི།

ཡི་གེ་རྣམས་ཀྱི་མཐར་སྦྱོར་ལ། |
ས་བོན་ལྷས་ནི་རབ་དགང་བྱ། ༥ཀ
ཡི་གེ་ཡིས་ནི་རྣམ་བསྒོམས་ཏེ། |
པདྨ་རབ་ཏུ་རྒྱས་པར་བྱ། |
ཅི་སྟེ་རྡོ་རྗེ་ཅན་འགྱུར་འདོད། |
དེ་ལྟའི་སྦྱོར་བ་ཀུན་ཤེས་བྱ། ༦ཀ

རབ་སྔགས་ཀྱིས་བསྐྱེད་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །ཧཱུཿཞེས་བྱ་བ་ཡང་དག་ལྡན།[1] །ཞེས་བྱ་བ་ལ། ཡི་གེ་ཧཱུཿཡིས་པད་འདབ་བརྒྱད་པར་བསྐྱེད་ལ་ཡང་དག་པར་སྦྱོར་ཞེས་བྱ་བ་འོག་ནས་འབྱུང་བ་དང་འབྲེལ་ལོ།[2] །གང་དང་ཞི་ན། ཨ་ཡི་མཐའ་ཞེས་བྱ་བ་ལ། ཨའི་མཐའ་ནི་གཤེགས་སུ་གསོལ་བ་སྟེ། དེ་དང་ལྡན་པའི་ཡི་གེ་ཨས་དེའི་ནོར་བུ་བསྐྱེད་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །ས་བོན་ལྷས་ནི་རབ་ཏུ་དགང་། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཨོཾ་ཧཱུྃ་སྭཱ་ཨཱ་ཧཱུཿཞེས་བྱ་བའི་ས་བོན་རྣམས་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ལུས་ཀྱི་མགོ་དང་ནུ་མའི་དབུས་དང་[3] ལྟེ་བ་དང་གསང་བ་དང་བརླ་གཉིས་སུ་སྦྲར་བར་བྱ་ཞེས་བྱ་བ་དང་འབྲེལ་ཏོ། ༥ ཀ

ཡི་གེ་ཡིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་འདིས་མི་འཇུག་པས་ན་ཡི་གེ་སྟེ་ཕཊ་དོ། | རྣམ་བསྒོམས་ཏེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་དང་སྦྲར་བ་སྟེ། རྡོ་རྗེའི་སྣོར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་མའོ། །རབ་ཏུ་རྒྱས་པར་བྱ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་དང་སྦྲར་བས་སོ། །དེ་ལྟར་སྦྱོར་

1 རྩ་བར༠ ཡང་དག་སྦྲར།
2 གསེར༠ འབྲེལ་ཏོ།
3 སྡེ༠ དབུས་ལྟེ་བ (དང་སྒྲ་གསེར་ཕྲིས་ནས་བསྣན།)

དེ་ནས་འདིར་རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱིས་དགོངས་པ་དཔལ་རྡོ་རྗེའི་གླུས་སྲིད་པ་ཤིན་ཏུ་སྒྲུབ་པ་གླངས་པ།

ཀྱེ་གྲོགས་པོ་རྡོ་རྗེས་པདྨ་ཁ་འབྱེད་སད་མཛད་མ།[1] །
ཨ་ལ་ལ་ཧོ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་[2]གར་གྱིས་རབ་ཏུ་མཉེས་མཛོད་[3]ཅིག །
ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་པདྨའི་ཁ་ནི་རབ་ཕྱེ་བ། །
བདེ་བ་ཆེན་པོ་གར་གྱིས་རབ་ཏུ་མཉེས་པར་མཛོད། ༧ཀ

བ་ཀུན་ཤེས་བྱ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྦྱོར་བ་ཐོབ་ནས་ཏེ། བསྒོམ་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་མའོ། ༨ ཀ

དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱི་དགོངས་པ་ནི་གང་དེ་རྣམས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་གཟུང་བའི་གྲུབ་པའི་མཐའོ། །རྡོ་རྗེ་ནི་བདེ་བ་ཆེན་པོའོ། །དེ་སད་པར་བྱེད་པའི་གླུ་ནི་རྡོ་རྗེའི་གླུའོ། །སྲིད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྐུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་ཏེ་བྱུང་བས་ན་སྲིད་པའོ། །ཤིན་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཨནཏ་ནི་འཇིག་པའོ། །དེ་ལས་འདས་པས་ན་ཨནཏ་སྟེ་འཇིག་པ་མེད་པའོ།། ཤིན་ཏུ་ཡང་དེ་ཡིན་ལ་དངོས་གྲུབ་[4]ཀྱང་དེ་ཡིན་པས་ན་ཤིན་ཏུ་དངོས་གྲུབ་སྟེ་སྒྲུབ་པ་ནི་དེའི་ཐབས་སོ། །ཏལེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། འདིར་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་རྐང་པ་བཞི་པ་གཉིས་ཏེ། འདི་ལྟར་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་ཕྱེད་པ་གཉིས་པ་

1 སྣ་༠ མཛད་པ།
2 སྣ་༠ པོའི།
3 སྣ་༠ མཉེས་པར་མཛོད།
4 སྡེ་༠ དངོས་ཀྱང་དེ་ཡིན། དངོས་གྲུབ་ཅེས་གསེར་ཕྲེང་ནས་བསྣན།

གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་ཕྱེད་པ་བཞི་པ་ཡང་ཡིན་ཏེ། འདུས་པར་བྱ་[1]བའི་ཕྱིར་ཏཡེསིད་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཀྱི་གྲོགས་པོ་ཞེས་བྱ་བའོ། །པིཨསིཨཀམལ་(པིཀསིདཀམལ་)ཞེས་བྱ་བ་ནི་པདྨ་བྱེ་བར་གྱུར་ཏོ་ཞེས་པའོ། །པཔོཏིཨུཔཛཻ་ཞེས་བྱ་བ་ལ། རྡོ་རྗེ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཆེན་པོ་སྟེ་པདྨའི་ཀརྞིཀ་ལ་གནས་པའི་ཡི་ཤེས་ཀྱི་ཐིག་ལེའི་གཟུགས་སམ། དཔལ་ཧེ་རུ་ཀའི་གཟུགས་སུ་བསྐྱེད་ཅིང་རྫོགས་པར་གྱུར་པའོ། །རབ་ཏུ་སད་པ་ནི་གདུང་[2]བར་གྱུར་པའོ། །ཅིའི་ཕྱིར་གདུང་འགྱུར་ཞེ་ན། ཨལལལལཧོ་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། དང་པོའི་ཨ་དང་མཐའ་མའི་ཧོ་ལ་བཞི་པོ་དག་ནི་ཤིན་ཏུ་སྨད་དུ་གྱུར་པའི་བདེ་བ་ཆེན་པོ་འདི་དོན་དུ་འཇུག་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་སྐད་དུ་ཡང་དཔལ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་དང་མཉམ་པར་སྦྱོར་བ་ལས།[3] ཨེ་མའོ་བདེ་མཆོག་སྨད་དུ་བྱུང་བ། ཨལལལལཧོ་ཞེས་བརྗོད་ཅེས་གསུངས་སོ། །དེ་བས་ན་[4]ཅི་ཞིག་བྱ་ཞེ་ན། མཏྲསུཧྲིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ནི་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པའོ། །ཨིན་ནི་བདག་པོའོ།། བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཡང་ཡིན་ལ་ཨིན་ཡང་ཡིན་པས་ན་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཡིན་ཏེ། མགོན་པོ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །ཨརཏིཨུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མཉེས་པར་བྱས་པ་[5]སྟེ། བདག་ཅག་གིས་ཞེས་བྱ་བར་ཤེས་པར་བྱའོ། །གི་སྟེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཾར་གྱིས་སོ། །རཔི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། པཤུལིཨུཀམལུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་པདྨ་རྣམ་པར་གསང་བའོ། །གང་གིས་ཤེ་ན། མཏྲསུཧྲིན་ཞེས་བྱ

1 གསེར་༠ སྦྱར་བ།
2 གསེར་༠ གདུགས།
3 སྡེ་བཀའ་༠ རྒྱུད་༠ ཀ་༠ ༡༨༦ བ ༡
4 གསེར་༠ དེ་ལྟ་བས་ན།
5 གསེར་༠ ·བྱ་བ་སྟེ།

རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ་ཆེན་པོ་ལ། །
དེ་ནས་འདིར་སྤྲུ་སླང་ས་ཙམ་གྱིས། །
རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་གར། །
རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཡང་དག་བསྐུལ། ༨ཀ

བ་གསུངས་ཏེ། བདེ་བ་ཆེན་པོ་སྟེ་རྡོ་རྗེ་དེ་ཉིད་ཀྱིས་སོ། །ཅི་འདྲ་ཞེ་ན། ཉི་མ་ལྟ་བུའི་འོད་འདི་ལ་ཡོད་པས་རབིཀྲཱཛེན་ཞེས་བྱ་སྟེ། ཇི་ལྟར་ཉི་མའི་འོད་ཀྱིས་པདྨའི་ཁ་འབྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རྒྱུ་མཐུན་པའི་འོད་ཟེར་རྣམས་ཀྱིས་ཞེས་བྱ་བར་དགོངས་སོ། །ཨ་ལ་ལ་ལ་ཧོ་[1]ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཡང་བསྐྱར་ལ་སླང་སྟེ་དོན་ནི་དེ་ཉིད་དོ། ༧ ཀ

སྤྲུ་འདིའི་གནས་སྐབས་གཉིས་པ་བསྟན་པར་བཞེད་ནས། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷ་མོ་བཞི་བསྐྱེད་པའི་འོག་ཏུའོ། །འདིར་ནི་སྤྲུ་ཙམ་གྱིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྤྲུ་འབབ་ཞིག་གིས་བསྐུལ་བས་སོ། །ཅིའི་དོན་དུ་ཞེ་ན། རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ་ཆེན་པོ་སྟེ། མགོན་པོ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་ཕྱིར་རོ། །རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ཀྱིའོ། །གར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་དག་གིས་གར་ཡང་བྱས་པའོ།། རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྤྲུ་དང་གར་གྱིས་སད་པར་བྱས་པའི་ཐིག་ལེ་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ལས་སྐྱེས་པའི་དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་གཞག་པ་སྟེ། ཀཱ་ཀྐོལའི་ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ཕྱེད་ཀྱང་གིས་བཞུགས་སུ་གསོལ་བའོ། །འདི་ནི་སླང་བའི་གནས་སྐབས་སོ། ༨ ཀ

---

1 གསེར༠ ཨ་ལ་ལ་ལ་ལ་ཧོ།

དེ་ལྟར་རྟག་ཏུ་གུས་ལྡན་པས། །
སྦྱོར་བའི་དངོས་གྲུབ་འགྱུར་བ་ཡིན། །
དུས་བཞིར་རབ་ཏུ་སྦྱོར་བ་ཡིས། །
འགྲུབ་པར་འགྱུར་བ་བསྒོམ་[1]པའི་མཆོག ༡ཀ།
རྒྱུན་རྣམས་ཐམས་ཅད་ཡོངས་རྫོགས་ཤིང་། །
གྲོས་དང་མི་རྟོག་རྣམས་ཀྱིས་བརྒྱན།[2] །

མཆོད་པའི་དུས་ཀྱི་གནས་སྐབས་གཉིས་པ་བསྟན་པའི་ཕྱིར། འདི་ཡིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། འདི་ཡིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྡོ་རྗེའི་སྒྲུ་དང་གར་གྱིས་སོ། །སྦྱོར་བའི་དངོས་གྲུབ་འགྱུར་བ་ཉིད།[3] །ཅེས་བྱ་བ་ནི་མཆོད་པའི་ཕན་ཡོན་ནོ། །རྟག་ཏུ་གུས་པ་དང་ལྡན་པས་བསྒོམ་པའི་མཆོག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་རྒྱུན་མི་[4]འཆད་པས་དུས་རིང་པོ་རབ་ཏུ་སྦྱར་ཞིང་བསྒོམ་པའོ། །དུས་བཞིར་རབ་ཏུ་སྦྱོར་བ་ཡིས། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་དང་མཆོད་པའི་དུས་སོ། ༡ཀ

གསང་བའི་མཆོད་པ་བསྟན་པའི་ཕྱིར། རྒྱུན་རྣམས་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། བུ་མོ་གཞུག་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་མའོ། །རྡོ་རྗེའི་སྐུ་དང་། རྡོ་རྗེའི་གསུང་དང་། རྡོ་རྗེའི་ཐུགས་དག་ནི་སྐུ་གསུམ་མཆོག

---

1 སྣར་o སྒོམ་
2 སྣར་o རྒྱུན་
3 རྩ་བར་o འགྱུར་བ་ཡིན།
4 གསེར་o རྒྱུན་མའི་འཆད།

ཛཱི་ལྷར་སྐུ་གསུམ་མཆོག་སྟེར་བའི། །
དངོས་གྲུབ་ངེས་པར་ཐོབ་པར་འགྱུར། ༡༠ཀ
དཔག་ཚད་བརྒྱ་ཡི་ཁྱོན་ཙམ་དུ། .།
འདི་ནི་རབ་ཏུ་སྣང་བར་བྱེད། །
དབང་པོ་གཉིས་ནི་རབ་སྦྱོར་བས། །
སྒོ་དག་ལས་ནི་འབྱུང་བའི་རྫས། ༡༡ཀ
སངས་རྒྱས་བྱང་ཆུབ་གནས་ཞི་བའི། །
དེ་ཉིད་སླ་ན་མེད་པ་འགྲུབ། ༡༧།

ཀོ ༑དེ་ལྟ་བས་ན་སྐུ་གསུམ་མཆོག་སྟེར་བ་སྟེ། ཧོ་རྫེ་སེམས་དཔའོ། །ཛཱི་ལྷར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཛཱི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་འགྱུར་བའོ། །རབ་ཏུ་སྣང་བར་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་རང་བཞིན་འོད་ཀྱིས་སོ། །འདིར་འདའ་བར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པའི་དམ་ཚིག་གཉིས་བསྟན་པའི་ཕྱིར། དབང་པོ་གཉིས་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། རྫས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་བཟའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་མའོ། །སངས་རྒྱས་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་ཉིད་གོ་འཕང་ཡིན་ཏེ་རབ་ཏུ་གནས་པའོ། །ལྷག་མ་ནི་འདི་ཉིད་ཀྱི་བཤད་པ་སྟེ། ཉེ་བར་འཚེ་བ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བས་ན་ཞི་བ་སྟེ། ངེས་པར་ལེགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། ༡༠ -༡༡ ཀ

ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་དག་ལ་ཡང་འདི་ལྟ་བུའི་ཞི་བ་ཡོད་པས་དེ་ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་དེ་ལས་ཁྱད་པར་དུ་བྱེད་དེ། སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་ཡེ་ཤེས་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ལ་ཡང་དེ་ལྟ་བུའི་ཡེ་ཤེས་ཡོད་མོད་ཀྱི། ད་ནི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སླ་མ་དང་བཅས་པ་ཡིན་

འདིར་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་འབྱུང་བ་ནི།

གཟུགས་རྣམས་དེ་བཞིན་ཕྱག་རྒྱ་མཚན་མ་དང་། །
ཇུས་རྣམས་དང་ནི་བསམ་གཏན་རྣམ་སྒོམ་པའི། །
ཚོ་གའི་ཐབས་ནི་སྔ་ཚོགས་བསྟན་པ་དང་། །
ལྷ་མོ་ཡིད་འདོད་རྣམས་ནི་གསུངས་པའོ། ༡༧།

པས་དེ་ལས་ཕྱི་ཐག་ཏུ་བྱ་བའི་ཕྱིར་བླ་ན་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། འདི་ལས་བླ་བར་གྱུར་པ་མེད་པས་ན་བླ་ན་མེད་པའོ། ༡༦ །

འདིར་ཚིགས་བཅད་དུ་འབྱུར་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཇི་སྐད་དུ་གསུངས་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་དོན་བསྡུ་བའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པའོ། །གཟུགས་རྣམས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷ་རྣམས་ཀྱི་སྐུ་མདོག་དང་དབྱིབས་རྣམས་སོ། །ཕྱག་རྒྱ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཕྱག་རྒྱས་བཏབ་པའོ།། ཡན་ལག་དྲུག་ཏུ་དགོད་པ་དང་། རྡོ་རྗེ་པདྨོར་སྦྱོར་བ་ལ་སོགས་[1]པའོ། །དེ་བཞིན་ཚད་མ་[2]ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐོད་པ་དང་ཁཊྭཱ་ག་ལ་སོགས་པའོ། །ཇུས་རྣམས་ནི་དམ་ཚིག་གི་ཇུས་རྣམས་སོ། །བསམ་གཏན་ཞེས་བྱ་བ་ལ། བསམ་པར་བྱ་བས་ན་བསམ་གཏན་ཏེ། བཟླས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །བསྒོམ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་ལ་སོགས་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏོ། །ཚོ་གའི་ཐབས་སྣ་ཚོགས་ནི་ལས་རྒྱས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དམན་པའི་དངོས་གྲུབ་ལ་སོགས་པའོ།། བསྟན་པ་ནི་དེ་དག་ཐམས་ཅད་བཤད་པའོ། །འདི་དག་ཐམས་ཅད་ཅིའི་ཕྱིར་བྱས་ཤེ་ན། ལྷ་མོའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ལྷ་མོ་ནི་སྒྱུ

---

1 རྒྱ་དཔེར༠ (ཤོཌྷནྣཱདྟི) སྦྱངས་བར་བྱ་བ་ལ་སོགས"
2 རྒྱ་དཔེར༠ (ཙིཧྣནམིཏྟ) མཚན་མ

[1]གང་གི་ཁྲིམ་དུ་རྒྱུད་འདི་གནས་པ་དང་། རྒྱུན་དུ་འཆང་བ་དང་། ཀློག་པ་དང་། རྣམ་པར་བསྒོམ་[2]པ་དེ་ལ་ནད་རྣམས་འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་ཞིང་། གསུས་པ་དང་། བགེགས་མི་འབྱུང་ལ། འཆི་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། རྒྱུན་དུ་ཐམས་ཅད་དུ་རྣལ་འབྱོར་མའི་དབང་ཕྱུག་མ་རྣམས་ཀྱིས་བགེགས་བསྲུང་[3]བར་འགྱུར་རོ། ༡༨ །

འཕྲུལ་ཆེན་མོའོ། །དེའི་ཡིད་ལ་འདོད་པ་ནི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པ་གང་ཡིན་པ་སྟེ། དེའི་ཕྱིར་བསྟན་པའོ། ༡༩ །

རྒྱུད་ཡོངས་སུ་འཛིན་པའི་ཕན་ཡོན་བསྟན་པའི་ཕྱིར། གང་གི་ཁྲིམ་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་གསུངས་ཏེ། །གང་གི་ཁྲིམ་ནི་གང་ཞིག་གི་ཁྲིམ་དུའོ། །རྒྱུད་ནི་སྒྲུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ཞེས་གྲགས་པའོ། །རྟག་ཏུ་གནས་ཤིང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྟག་པར་གནས་པའོ། །འཆང་བ་[4]ཞེས་བྱ་བ་ནི་འཛིན་པའོ། །ཀློག་པ་ནི་གུས་པར་འདོན་པའོ། །རྣམ་པ་བསྒོམ་པ་ནི་ཏིང་ངེ་འཛིན་དུ་བྱེད་པའོ། །བགེགས་ནི་བགེགས་རྣམས་སོ། །རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མ་[5]ཡང་དེ་ཡིན་ལ་ཆེན་མོ་ཡང་དེ་དག་ཡིན་ནོ། །དགོངས་པ་ནི་དེ་དག་གིས་ཡོངས་སུ་བཟུང་བའི་གྲུབ་པའི་མཐའ་སྟེ། རྣལ་འབྱོར་མའི་རྒྱུད་མཐའ་དག་ཅེས་བྱ་བའི་

---

1 འགྲེལ་པར་o གང་གི་ཁྲིམ་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་ཞེས་གསུངས་པ་ལ་བལྟས་ན་ཚིགས་བཅད་ཡིན་པར་སྣང་ཡང་པར་མ་ཁག་ནང་ཡོད་པ་བཞིན་ལུག་མར་སོར་བཞག་བྱས།

2 སྣ་o སྒོམ།

3 སྣo སྲུང་།

4 གསེར་o འཆང་བ་ མེད།

5 སྒྲ་དཔེར་o (བཛྲཌཱཀིཥྛཤཏ) རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་ཡང་།

རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མ་ཆེན་མོ་རྣམས་ཀྱི་དགོངས་པ་མཆོག་ཏུ་གསང་བ་གསང་བ་ཆེན་པོ་ཉེ་བར་སྦྱོར་པ་དང་བཅས་པའི་སྒྲུབ་ཐབས་ཏེ་ལེའུ་གསུམ་པའོ།། །།

སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ཅེས་བྱ་བ་རྫོགས་སོ།། །།རྒྱ་གར་གྱི་མཁན་པོ་ཛི་ནབར་དང་། བོད་ཀྱི་ལོ་ཙྪ་བ་ཆེན་པོ་འགོས་ལྷས་བཙས་ཀྱིས་བསྒྱུར་ཅིང་ཞུས་ཏེ་གཏན་ལ་ཕབ་པའོ།། །།

དོན་ཏོ། །གསང་བ་[1]ནི་དེའི་སྙིང་པོའོ། །དེ་ཅི་ཞིག་ཅེ་ན། གསང་བ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ། རྒྱུད་ཀྱི་དང་པོ་ནི་མཆོག་ཏུ་གསང་བ་ཞེས་གསུངས་པ་ལ། མཐར་ནི་གསང་བ་ཆེན་པོའོ་ཞེས་བྱ་བའི་རྣམ་གྲངས་གཞན་གྱིས་གསུངས་པ་ཡིན་ཏེ། སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ཞེས་བྱ་བར་གྲགས་པའི་རྒྱུད་དོ།[2] ཉེ་བར་སྦྱོར་པ་དང་བཅས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ། བསྒྲུབ་བྱ་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་[3]ཀྱི་ཚོ་ག་ནི་ཉེ་བར་སྦྱོར་པ་དང་བཅས་པའོ[4]། །དེ་དང་ལྡན་ཅིག་ཏུ་འཇུག་པ་ནི་ཉེ་བར་སྦྱོར་པ་དང་བཅས་པ་སྟེ། དེས་སྟོང་པ་མ་ཡིན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །རྫོགས་པ་ནི་དེ་མཐར་ཐུག་པའོ། ༡༥ །

དེ་ལྟར་བདག་གིས་སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་རྒྱུད་ཀྱི་འགྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྡན་བྱས་པས།། ཡོངས་སུ་རྫོགས་པའི་རི་བོང་ཅན་ལྟར་མཛེས་པའི་བསོད་ནམས་ཐོབ་པ་གང་ཡིན་པས། །

---

1 གསེར་༠ གསང་བའི་
2 རྒྱ་དཔེར་༠ (ཨིཏྱརྠཿ) ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ནོ།
3 རྒྱ་དཔེར་༠ (སཱདྷནཱརྠ) སྒྲུབ་པའི་དོན།
4 རྒྱ་ྃདཔེར་༠ བཅས་པ་ མེད།

རྒྱལ་བ་རྣམས་ཀྱི་བདག་ཉིད་གཅིག་པོ་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ་ཉིད་དུ་བདག་གྱུར་ནས། །
དེ་ཡིས་སྐྱེ་བོ་རྣམས་ཀྱི་སྡུག་བསྔལ་མི་བཟད་མ་ལུས་ཟད་པ་རྟེད་པར་ཤོག །
རིན་ཆེན་འབྱུང་གནས་དེ་ནི་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་སྲས་བཅས་རྣམས་ཀྱིས་[1]
ངེས་པར་བྱིན་བརླབས་པས། །
དེ་ཡི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་[2]འཇུག་པ་རྣམས་ནི་ངེས་པར་འགྲོ་བ་རྣམས་ལ་ཕན་
ཕྱིར་ཡིན། །
སྒྲུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ཞེས་བྱའི་རྒྱུད་མཆོག་ཚིག་དོན་རྟོགས་དཀར་སྦྱར་བས་དཀའ་བ་
གང་ཡིན་པའི། །
འགྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྡན་པ་འདི་ནི་མུ་ཏིག་ཕྲེང་ལྟར་སྐྱེ་བོའི་སྙིང་ནི་འགུགས་[3]བྱེད་
ཡིན[4]། །

དཔལ་སྒྲུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་འགྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྡན་པ་ལས་ངེས་པར་བསྟན་པ་གསུམ་པའོ།། །།དཔལ་སྒྲུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་འགྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྡན་པ་ཞེས་བྱ་བ་སློབ་དཔོན་པཎྜི་ཏ་ཆེན་པོ་དཔལ་རིན་ཆེན་འབྱུང་གནས་ཞི་བའི་ཞལ་སྔ་ནས་མཛད་པ་རྫོགས་སོ།། །།པཎྜི་ཏ་ཆེན་པོ་ཞི་བ་བཟང་པོ་དང་། ཞུ་ཆེན་གྱི་ལོ་ཙྪ་བ་འགོས་ལྷས་བཙས་ཀྱིས་[5]བསྒྱུར་ཅིང་ཞུས་ཏེ་གཏན་ལ་ཕབ་པའོ།། །།

---

1 གསེར་༠ རྣམས་ཀྱི།
2 གསེར་༠ ཐུགས་ནི།
3 གསེར་༠ འགུག
4 རྒྱ་དཔེར་༠ ཚིགས་སུ་བཅད་པ་འདི་མེད།
5 གསེར་༠ བཙལ་གྱིས།

2383